मध्यएसिया का इतिहास

खण्ड १

राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम संस्करण, वि० स० २०१३, सन् १९५६ ई०
सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य १०।।) सजिल्द १२)

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

समर्पण

परगत डा० काशीप्रसाद जायसवालको

जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके बाद भी

मेरे जीवनकी प्रिय निधि है

वक्तव्य

“विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्”

बिहार-राज्य के शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत यह परिषद् एक साहित्यिक सस्था है। अबतक इसके द्वारा दो दर्जन महत्वपूर्ण पुस्तको का प्रकाशन हो चुका है। उन्हे समस्त हिन्दी-ससार ने पसद भी किया है।

सन् १९५४ ई० मे, बिहार के तत्कालीन शिक्षासचिव श्री जगदीशचन्द्र माथुर आइ० सी० एस० के अनुरोध से, परिषद् ने इस पुस्तक का प्रकाशन स्वीकृत किया था। किन्तु परिषद् की स्वीकृति से पूर्व ही इसके दूसरे खण्ड के कई फार्म लखनऊ मे छप चुके थे। तब भी, हिन्दी मे ऐसी पुस्तक का अभाव और एक अधिकारी विद्वान् द्वारा उस अभाव की पूर्ति का सत्प्रयास देखकर, परिषद् ने अपने नियमो के अपवाद-स्वरूप, विशेष परिस्थिति मे, वह स्वीकृति दी थी।

इसलिए कि लेखक ने इस पुस्तक के दूसरे खण्ड की छपाई पहले ही शुरू करा दी थी, इस पहले खण्ड की पाण्डुलिपि भी—दोनो खण्डो की एक-सी छपाई कराने के विचार से—लखनऊ भेज दी गई। परन्तु कुछ अनिवार्य कारणो से जब दूसरे खण्ड की ही छपाई मे विलम्ब होने लगा, तब प्रस्तुत खण्ड को पहले ही प्रकाशित करना आवश्यक समझ, प्रयाग मे इसकी छपाई का प्रबन्ध करना पडा, क्योकि इसके लिए लखनऊ मे खरीदा हुआ कागज भी प्रयाग भेजना था।

हम चाहते थे कि दोनो खण्ड एक साथ ही प्रकाशित हो। पर दूसरा खण्ड इससे कुछ बडा है। फिर भी हम उसे अविलम्ब प्रकाशित करने मे प्रयत्नशील है। आशा है कि वह भी शीघ्र ही पाठको की सेवा मे पहुँचेगा। तबतक इस खण्ड का पहले निकल जाना उचित ही हुआ।

इस पुस्तक मे विभक्तियो के चिह्न सर्वत्र शब्दो के साथ लगे हुए है। परिषद् की अन्य पुस्तको मे ऐसा नही है। किन्तु इस पुस्तक के दूसरे खण्ड के कई फार्म जैसे पहले छप चुके थे वैसे ही इस खण्ड के भी छपवाने पडे। कारण, दोनो खण्डो की छपाई मे समता रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। विभक्तियो को शब्दो से हटाकर या सटाकर लिखने-छापने की परिपाटी आज भी हिन्दी-जगत् मे प्रचलित है। अत पहले के छपे हुए पृष्ठो को नष्ट करके परिषद् की परम्परा के अनुसार पुन नये सिरे से छपाई शुरू कराना हमने अनावश्यक समझा, क्योकि पुस्तक के महत्त्व मे इससे कोई बाधा नही पडी है।

अस्तु। भारत का इतिहास पढने पर प्राय ऐसा अनुभव होता है कि मध्य एसिया के इतिहास मे भारत के इतिहास की कितनी ही घटनाएँ सम्बद्ध है । परन्तु हिन्दी मे मध्य एसिया के कुछ देशो के भौगोलिक एव ऐतिहासिक विवरण तो मिलते है, सम्पूर्ण मध्य एसिया का क्रमबद्ध इतिहास नही मिलता। इसलिए अनेक ऐतिहासिक जिज्ञासाओ का समाधान नही हो पाता था। आशा है कि अब यह पुस्तक भारत और उसके पडोसी देशो के इतिहास की शृखला को अटूट सिद्ध करके पाठको को सन्तुष्ट करेगी।

इस पुस्तक के समर्थ लेखक महापण्डित श्री राहुल साकृत्यायनजी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् है। इस युग के आप एक धुरन्धर साहित्यकार है। साहित्यिक शोध का क्षेत्र आपके अनवरत अनुसन्धानात्मक परिश्रम एव लेखनी-सचालन से बहुत उर्वर हुआ है। आपकी अथक लेखनी ने कितने ही ऐसे विषयो को सनाथ किया है, जिनकी ओर हिन्दी-ससार के विद्वज्जनो का ध्यान आकृष्ट नही हुआ था। अत हिन्दी-साहित्य आपकी खोज की लगन और देन मे बहुत लाभान्वित हो रहा है। विश्वास है कि यह पुस्तक भी हिन्दी-साहित्य के एक चिर-अनुभूत अभाव की पूर्त्ति करेगी तथा ऐतिहासिक शोध के कामो मे भी सहायक होगी।

शिवपूजन सहाय
(सचालक)

दीपावली, सवत् २०१३ वि०

लेनिन

भूमिका

भारतके इतिहास की जगह मध्य एसियाके इतिहासपर मैंने क्यो कलम उठाई, यह प्रश्न हो सकता है। उत्तर आसान है। भारतके इतिहासपर लिखनेवाले बहुत है। जिसका अभाव है, उसकी पूर्ति करना जरूरी था, यही विचार इस प्रयासका कारण हुआ। अपनी यात्राओमे मै रूस और मध्य-एसियाके सम्पर्कमे आया, उनके ऊपर कितनी ही पुस्तके लिखी और अनुवादित की। उसी समय विचार आया, आधुनिक ऐतिहासिक घटनाओको पिछले इतिहासकी पृष्ठभूमिमे देखना चाहिये। इस तरफ आगे बढा, तो यह भी मालूम हुआ, मध्य-एसियाका इतिहास हमारे देशके इतिहाससे बहुत घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। द्रविड (फिनो-द्रविड) जाति—जिसने मोहनजोडरो और हडप्पाके भव्य नगर और यशस्वी सिन्धु-सभ्यताको प्रदान किया—का सम्बन्ध मध्य-एसियासे भी था। हालके पुरातात्विक अनुसन्धान बतलाते है, कि आर्योका सम्पर्क द्रविड जातिसे सबसे पहले सिन्धु-उपत्यकामे नही, बल्कि ख्वारेज़्ममे हुआ था। वहा पराजित करके उनका स्थान ले आर्य भारतकी ओर बढे। उनका बढाव पिछली विजित भूमिको बिना छोडे आगे की तरफ होता रहा, इसीलिये भारतीय आर्योकी परम्परा मे अपने-पुराने छोडे हुये स्थानका उल्लेख नही पाया जाता। आर्योकी अनेक लहरोके बाद ग्रीक लोगोने भी बाख्त्रिया-से आकर भारतके कुछ भाग पर शासन किया। शक-कुषाण भी वहासे ही होकर आये। तथाकथित हूण—हेफ्ताल—भी मध्य-एसियासे भारतकी ओर बढे। तुर्क और इस्लाम भी वहासे चलकर भारत आया। इन शासको और उनकी जातियोके इतिहासका एक भाग मध्य-एसिया-मे पडा रहा, जिसे जाने बिना हम अपने इतिहासको समझनेमे गलती कर बैठते है। इस दृष्टि से भी मुझे इस पुस्तकके लिखनेकी प्रेरणा मिली।

यद्यपि मै अपने इतिहासको मध्य-एसिया—अर्थात् मुख्य चीन, भारत-अफगानिस्तान, ईरान, कास्पियन समुद्र और रूस द्वारा घिरी हुई भूमि—तक ही सीमित रखना चाहता था, लेकिन इतिहासकी नदी बहुत टेढी-मेढी बहती है, जिसके कारण मुझे इन सीमात देशोके इतिहास मे भी कही-कही भटकना पडा। वैसा न करनेसे विषयके समझनेमे कठिनाई होती।

नामोके उच्चारणमे हिन्दीमे अभी हमारी कोई परम्परा नही बनी है, विशेषकर उन नामोके बारेमे, जो कि पहली बार इस पुस्तकमे आ रहे है। अग्रेजो और अग्रेजीका उच्चारण सबसे भ्रष्ट होता है, इसलिये मैने उससे बचनेकी कोशिश की है। जर्मन इसके बारेमें ज्यादा अच्छे रहते है, और अपनी अधिक उच्चारणानुरूप लिपिके कारण रूसी सबसे अच्छे है। पर, मूल भाषाओकी लिपियोमे जो दोष है, उसे वह कैसे दूर कर सकते है? मगोल लिपिमे मुश्किलसे डेढ दर्जन अक्षर है। वहा क, ग, और ह मे कोई अन्तर नही है। कगान, खगान, हगान, हकान चाहे जिस तरह एक ही लिखे शब्द को पढ लीजिये। चीनी नामोके उच्चारणमें भी ऐसी कठिनाई है। इसके अतिरिक्त पुस्तककी छपाई जिस निराशाजनक परिस्थितियोमे वर्षो एक-एक

कर होती रही, उनके कारण मैं नामोके एक समान उच्चारणको बराबर इस्तेमाल नही कर सका। इस तथा दूसरी बातोमे भी विषय-सूचिमे दिये गये रूपको अन्तिम मानना चाहिये।

पुस्तककी सामग्रीका बहुत बडा भाग मैंने रूसमे अपने दो सालके प्रवास (१९४५-४७ ई०) मे जमा किया। इसमे शक नही, मध्य-एसियाके इतिहासकी जितनी सामग्री रूस और रूसी भाषामे है, उतनी अन्यत्र नही मिल सकती। जिस तत्परतासे वहा ऐतिहासिक और पुरातात्विक अनुसन्धान हो रहे हैं, उनके कारण हर साल नई-नई सामग्री प्राप्त हो रही है। अफसोस है १९४७ के बादकी उपलब्ध सामग्रीमे बहुत कम हीका इस्तेमाल मैं कर सका। प्रो० ताल्स्तोफ कई वर्षोसे पुरातात्विक अभियानोके नेता होते रहे हैं। इस विषयमे—विशेषकर ख्वारेज्म, कराकुम और किजिलकुमकी भूमिके सम्बन्धमे—उनका ज्ञान अद्भुत है। सप्तनदके बारेमे डा०बेर्न्स्तामका अध्ययन गभीर है। इन दोनो विद्वानोसे जब-जब मुझे मिलनेका मिला, उन्होने समय और श्रमका कुछ भी न खयाल करके दिल खोल कर अपने ज्ञानसे लाभ उठानेका मुझे अवसर दिया। इसका उल्लेख मैं अपनी यात्रा-पुस्तक "रूसमे पच्चीस मास" मे कर चुका हू। मैं अपनी कुछ कल्पनाओमे उतना आग्रहवान् न होता, यदि उनके साथ विचार-विनिमयके बाद उनमे सार न रता। मध्य-एसियाका इतिहास लिखनेके अधिकारी सोवियत् विद्वान् ही हो सकते है, लेकिन अभी वह भिन्न-भिन्न कालो और अशोपर ही अनुशीलन कर रहे है। न मालूम कब तक वह इस अनुशीलनको क्रमबद्ध इतिहासके महाग्रथके रूपमे परिणत करेगे। उस ग्रथके तैयार होने तक मेरे इस प्रयासका मूल्य रहेगा ही।

दो सालके बाद रूससे भारत चले आनेका एक बडा कारण सगृहीत सामग्री और अध्ययनको पुस्तकके रूपमे लानेका खयाल था। मैने वहा चार-पाच मन पुस्तके जमा की थी। इनके अतिरिक्त दो वर्षमे पढी पुस्तकोसे बहुत से नोट लिये थे। वहा रहते पुस्तक लिखनेपर वह प्रेसका मुह देख सकती, इसमे पीछेके तजर्बेने भी सन्देह पैदा कर दिया। इन्ही पुस्तकोको सुरक्षित लानेके खयालसे मैं अफगानिस्तानके छोटे रास्तेको छोड इगलैण्ड होते भारत लौटा। यदि सीधे रास्ते लौटा होता, तो अगस्त १९४७ मे पश्चिमी पाकिस्तानमे आता, फिर न मालूम सामग्री और सग्राहक पर क्या बीतती?

इतनी बडी पुस्तकको छापनेवाले मिलने मुश्किल थे। एक प्रकाशकने पहिली जिल्दके बीस-पचीस पृष्ठ कम्पोज कर लिये, और दूसरी जिल्दको नेशनलहेरल्ड प्रेसमे छापनेके लिये दिलवा दिया; पर अन्तमे यह भार उनको अपनी शक्तिसे बाहर मालूम हुआ। नेशनल हेरल्ड प्रेसने मेरी जिम्मेवारीपर उस जिल्दको छापना शुरू किया, जिसके लिये कागज भी मैं दे चुका था। पहलेवाले प्रकाशकके हाथ ढीला करनेपर यह सारा बोझ मुझे बर्दाश्त करना पडा—और वह पहला नही दूसरा खड था! श्री जगदीशचन्द्र माथुरने पुस्तककी पाण्डुलिपिको देखकर इसे बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्को देनेके लिये कहा। पर पहिले तो पहलेवाले प्रकाशकको तैयार करना था, जिन्हे मैं वचन दे चुका था। वह राजी हुये। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्ने प्रकाशित करनेकी इच्छा प्रकट की, जिसमे श्री जगदीशचन्द्र माथुर और परिषद्के सचालक-मण्डल ने जो प्रयत्न किया, वह न होता, तो पुस्तककी सद्गति कीडे-मकोडे ही करते।

पुस्तकका पहला जिल्द सम्मेलन मुद्रणालय प्रयागमे छपा है, और दूसरा नेशनल हेरल्ड प्रेस लखनऊमे। सम्मेलन मुद्रणालयके अध्यक्ष श्री सीताराम गुठे अपनी चुस्ती और कार्य-

	Śloka	Śloka
समस्तव्यस्तरूपक (གཟུགས་ཅན་བསྡུས་དང་མ་བསྡུས་པ)	67	146
सकलरूपक (མཐའ་དག་གཟུགས་ཅན)	69	148
अवयवरूपक (ཆ་ཤས་གཟུགས་ཅན)	71	150
अवयविरूपक (ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན)	72	152
एकाङ्गरूपक (ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན)	74	154
युक्तरूपक (འགྲིགས་པས་ལྡན་པའི་གཟུགས་ཅན)	76	156
अयुक्तरूपक (འོས་མིན་ཞེས་པའི་གཟུགས་ཅན)	77	158
विषमरूपक (མི་མཉམ་པ་ཞེས་པའི་གཟུགས་ཅན)	78	160
सविशेषणरूपक (ཁྱད་པར་དང་བཅས་གཟུགས་ཅན)	80	162
विरुद्धरूपक (འགལ་བ་ཞེས་བྱའི་གཟུགས་ཅན)	82	164
हेतुरूपक (རྒྱུའི་གཟུགས་ཅན)	84	166
श्लिष्टरूपक (སྦྱར་བའི་གཟུགས་ཅན)	86	167
उपमाव्यतिरेकरूपक (དཔེ་དང་ལྡོག་པ་ཅན་ཞེས་པའི་གཟུགས་ཅན)	87	177
आक्षेपरूपक (སྐྱོན་པའི་གཟུགས་ཅན)	90	178
समाधानरूपक (མཉམ་འཇོག་གཟུགས་ཅན)	91	180
रूपकरूपक (གཟུགས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན)	92	182
तत्त्वापह्नवरूपक (དེ་ཉིད་བསྙོན་དོར་གཟུགས་ཅན)	93	83

	Sloka
दीपक (གསལ་བྱེད)	96
मालादीपक (ཕྲེང བའི གསལ བྱེད)	106
विरुद्धार्थदीपक (འགལ་བའི་ དོན གྱི་ གསལ བྱེད)	108
एकार्थदीपक (དོན་གཅིག གསལ་བྱེད)	110
श्लिष्टार्थदीपक (སྦྱར བའི་ དོན གྱི་ གསལ་བྱེད)	112
आवृत्तिभेद (བསྐོར བའི དབྱེ བ)	115
आक्षेपभेद (དགག་བྱའི དབྱེ་བ)	119
धर्माक्षेप (ཆོས་འགོག་པ)	127
धर्म्याक्षेप (ཆོས་ཅན འགོག པ)	128
कारणाक्षेप (རྒྱུ འགོག པ)	130
कार्याक्षेप (འབྲས བུ འགོག་པ)	133
अनुज्ञाक्षेप (རྗེས་གནང་འགོག་པ)	134
प्रभुत्वाक्षेप (དབང་གིས འགོག་པ) ..	136
अनादराक्षेप (མ་གུས་པས འགོག་པ)	138
आशीर्वचनाक्षेप (ཤིས བརྗོད་ཀྱིས་ འགོག པ)	140
परुषाक्षेप (རྩུབ མོས་ འགོག་པ) .	142
साचिव्याक्षेप (གྲོགས་ཉིད་ཀྱིས་ འགོག་པ) ...	144

	Śloka
यत्नाक्षेप (འབད་པས་ འགོག་པ)	146
परवशाक्षेप (གཞན་དབང་ འགོག་པ)	148
उपायाक्षेप (ཐབས་ཀྱིས་ འགོག་པ)	150
रोषाक्षेप (ཁྲོ་བས་ འགོག་པ)	152
अनुक्रोशाक्षेप (སྙིང་རྗེས་འགོག་པ)	154
अनुशयाक्षेप (འགྱོད་པས་ འགོག་པ)	156
संशयाक्षेप (ཐེ་ཚོམ་འགོག་པ)	158
श्लिष्टाक्षेप (སྦྱར་བས་ འགོག་པ)	160
अर्थान्तराक्षेप (དོན་གཞན་ འགོག་པ)	162
हेत्वाक्षेप (རྒྱུས་འགོག་པ)	164
अर्थान्तरन्यास (དོན་གཞན་བཀོད་པ)	166
अर्थान्तरन्यासभेद (དོན་གཞན་བཀོད་པའི་ དབྱེ་བ)	167
व्यतिरेक (ལྡོག་པ་ཅན)	177
एकव्यतिरेक (གཅིག་གི་ ལྡོག་པ་ཅན)	178
उभयव्यतिरेक (གཉི་གའི་ ལྡོག་པ་ཅན)	180
सश्लेषव्यतिरेक (སྦྱར་བ་ཅན་གྱི་ ལྡོག་པ་ཅན)	182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (འགོག་པ་ཅན་དང་གཏན་ཚིགས་ཀྱི་ ལྡོག་པ་ཅན)	183

Śloka

प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक (རྟོགས་པར་གྱུར་པ་མཚུངས་པ་ ལྡོག་པ་ཅན) 186

सादृश्यव्यतिरेकभेद (མཚུངས་པའི་ ལྡོག་པ་ཅན་གྱི་ དབྱེ་བ) 189

विभावना (སྤྲེད་པ་ཅན) . 196

समासोक्ति (བསྡུས་པ་བརྗོད་པ) 202

समासोक्तिभेद (བསྡུས་པ་བརྗོད་པའི་ དབྱེ་བ) 205

अपूर्वसमासोक्ति (སྔོན་མེད་བསྡུས་པར་བརྗོད་པ) 210

अतिशयोक्ति (ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་བརྗོད་པ) 211

अतिशयोक्तिप्रशंसा (ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་བརྗོད་པའི་ བསྔགས་པ) 217

उत्प्रेक्षा (རབ་རྟོག་པ) 218

उत्प्रेक्षाव्यञ्जकशब्द (རབ་བརྟགས་གསལ་བར་བྱེད་པའི་ སྒྲ) 231

हेतुभेद (རྒྱུའི་ དབྱེ་བ) 232

सूक्ष्म (ཕྲ་མོ) . 257

लेश (ཆ) .. 262

क्रम (རིམ་པ) . 270

प्रेयरसवदूर्जस्विलक्षण (དགའ་བ་ཉམས་ལྡན་གཟི་བརྗིད་ཀྱི་ མཚན་མ) 272

पर्यायोक्त (རྣམ་གྲངས་བརྗོད་པ) 292

Śloka

समाहित (ཀུན་དུ་ཕན་པ) 295

उदात्त (རྒྱ་ཆེ) 297

अपह्नुति (བསྙོན་དོར) 301

श्लेष (སྦྱར་བ) 306

श्लेषभेद (སྦྱར་བའི་ དབྱེ་བ) 311

विशेषोक्ति (ཁྱད་པར་བརྗོད་པ) 320

तुल्ययोगिता (མཚུངས་པར་སྦྱོར་བ) 327

विरोध (འགལ་བ) 330

अप्रस्तुतप्रशंसा (སྐབས་སུ་མ་བབ་བསྔོད་པ) 337

व्याजस्तुति (ཟོལ་གྱིས་ བསྔོད་པ) 340

निदर्शन (ངེས་པར་བསྟན་པ) 345

सहोक्ति (ལྷན་ཅིག་བརྗོད་པ) 348

परिवृत्ति (ཡོངས་བརྗེས) 348

आशिस् (ཤིས་བརྗོད) 354

संसृष्टि (སྦྲེལ་མ) 356

संसृष्टिभेद (སྦྲེལ་མའི་ དབྱེ་བ) 357

	Śloka
भाविक (དགོངས་པ་ཅན)	360
भाविकभेद (དགོངས་པ་ཅན་གྱི་ དབྱེ་བ)	361

CHAPTER III

यमक (ཟུང་ལྡན)	1
गोमुत्रिका (བ་ལང་གཅིན)	78
अर्द्धभ्रम (ཕྱེད་འཁོར་བ)	80
सर्वतोभद्र (ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ)	80
स्वरस्थानवर्णनियम (དབྱངས་དང་གནས་དང་ ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་ ངེས་པ)	83
प्रहेलिका (གབ་ཚིག)	96
प्रहेलिकास्थान (གབ་ཚིག་གི་ གནས་པ)	97
समागता प्रहेलिका (ཀུན་ཏུ་ཚོགས་པའི་ གབ་ཚིག)	91
वञ्चिता प्रहेलिका (བསླུ་པའི་ གབ་ཚིག)	91
व्युत्क्रान्ता, (རིམ་པ་ བྲལ་བ)	99
प्रमुषिता (རབ་བཅོམ)	99
समानरूपा (མཐུན་པའི་གཟུགས)	100
परुषा (རྩུབ་མོ)	100
सख्याता (གྲངས་ཉིད)	101

	Śloka
•प्रकल्पिता (རབ་བརྟགས་ཉིད)	101
नामान्तरिता (མིང་དུ་འདུས་པ་ཉིད)	102
निवृता (བསྒྲིབས་པ)	102
समानशब्द (མཐུན་པ་སྒྲ)	103
समूढ (རྨོངས་པ)	103
परिहारिका (ཡོངས་སུ་འཕོག)	104
एकच्छन्ना (གཅིག་བསྒྲིབས་པ)	104
उभयच्छन्ना (གཉི་ག་བསྒྲིབས་པ)	105
संकीर्णा (ཡོངས་སུ་འདྲེས་པ)	105
दोषविभाग (སྐྱོན་གྱི་ ཡོངས་སུ་དབྱེ་བ)	125
अपार्थ (དོན་ཉམས)	128
व्यर्थ (དོན་འགལ)	131
एकार्थ (དོན་གཅིག་པ)	135
ससंशय (ཐེ་ཚོམ་ཅན)	139
अपक्रम (རིམ་པ་ཉམས་པ)	144
शब्दहीन (སྒྲ་ཉམས་པ)	148
यतिभ्रष्ट (གཅོད་མཚམས་ཉམས་པ) ..	152

CONTENTS

	Śloka
वृत्तभङ्ग (སྡེབ སྦྱོར ཉམས པ)	156
विसन्धि (མཚམས སྦྱོར་བྲལ བ)	159
देशकालकलालोकन्यायागमविरोध (ཡུལ་དང དུས དང སྒྱུ་རྩལ་དང འཇིག་ རྟེན དང རིགས་དང་ལུང དང འགལ་བ)	162
देशविरोधोदाहरण (ཡུལ དང་འགལ་བའི་ དཔེ)	165,166
कालविरोधोदाहरण (དུས་དང འགལ བའི་ དཔེ)	167,168
कलाविरोधोदाहरण (སྒྱུ རྩལ དང འགལ་བའི དཔེ)	170
लोकविरोधोदाहरण (འཇིག རྟེན དང་འགལ བའི་ དཔེ)	172
न्यायविरोधोदाहरण (རིགས་དང་འགལ བའི དཔེ)	174,175
आगमविरोधोदाहरण (ལུང་དང འགལ བའི་ དཔེ)	177,178
देशविरोधगुण (ཡུལ དང་འགལ་བའི ཡོན ཏན)	180
कालविरोधगुण (དུས་དང་འགལ་བའི ཡོན་ཏན)	181
कलाविरोधगुण (སྒྱུ རྩལ་དང་འགལ བའི་ ཡོན་ཏན)	182
लाकविरोधगुण (འཇིག་རྟེན་དང་འགལ་བའི་ཡོན ཏན)	183
न्यायविरोधगुण (རིགས དང འགལ བའི ཡོན ཏན)	184
आगमविरोधगुण (ལུང་དང འགལ བའི་ ཡོན ཏན)	185

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyādarśa* of Dandin. It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late Rai Sarat Chandra Das Bahadur, C I E I rejoiced not only to get hold of but to utilize Das's manuscript preserved in the University Tibetan Seminar The *Kāvyādarśa* was translated into Tibetan by Śrīlaksmīkara and Śon ston. Lo. tsā ba and others in the great Sa-skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition, Cordier, III, p 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version There is also an independent Tibetan commentary on the text by Mi pham. dge legs rnam rgyal. As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyādarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand, so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra* This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled, e g, I. 95 उद्गीरर्ण, 103 मार्ग्ग, II. 9 वरर्ण, 10 घूरिर्णतेक्षणः, etc Though such doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me, e.g.

Chap I 30[a] ग्री for ग्रीस, 42[c] एषा विपर्यय for एषाम्विपर्यय, 83[b] बभ्रन्त्योजस्विनीर्गिर, for बभ्रन्त्योजस्विनीगिर 90[c d] ०पातधौत for ०पात.धोत

Chap. II 5[a] उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो, 6[d] व्याज for व्यज, 11[a] बभ्रन्नङ्गेषु for वधून्नङ्गेषु, 14[d] प्रपञ्चोयं for प्रपञ्चायं, 20[a] पद्मन्तावत् for षद्मान्तावत्, 24[a b] पद्मं सुभ्रु for पद्मसुद्भ्रू, 27[d] निर्णयोपमा for निर्ल्लयोपमा, 28[b] བཟང for བཟངས, 38[a] प्रभासारः for प्रभासार, 47[d] पारिजातस्य for परिजात., 49[a] रक्षायै for राक्षायै, 49[d] सावलेपा for सावलेया, 54[a] सौभाग्यं for सौभग्यं. 58[a] संवादि for सम्बादि; 81[a] ཁྱད་པར for ཁྱད་པ, 87[d] रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं, 100[d] दैवतर्धयः for देवतर्धय, 120[a] पुष्पै for पौष्पै, 152[c] अयतापि for अयातापि, 156[d] सकलं वयः for सकलम्बयः; 158[b] किंवा for किम्बा, 158[c] ०संवादि for ०सम्बादि, 165[c] दिशान्येपि for दिशन्येपि, 188[a] རི དྭགས for རི་དྭགས, 234[c] उद्दिष्टं for दृष्टं, 274[b] धृतिः for वृत्ति, 281[a] ས་ལ for ས་ལས; 302[d] གྲུགས for གྲུག, 329[a] मृगाक्षीणा for मृगाक्षीनान्.

Chap III 8[d] किन्न्विद for कीन्निद, 23[d] दशा for देशां, 118[d] कलभाषिणि for कलभाषिणी; 134[b] གྲི for གྲིས. 174[a-b] संस्कृताभङ्ग [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभङ्गं सत्येन च क्षिताहिवै; 176[a-b] गतिर्न्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमत्ययं—which can in no way be supported The Tibetan text supports the reading in the printed text. 176°-¹ अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्ध ते प्रवेशावपि दर्शिता—which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to, e g

Chap I 1° दीर्घं for नित्यं, 2ᵇ उपलक्ष्य for उपलभ्य, 10ᵇ अलंकार for अलंकारा, 12ᶜ विविक्षणा for तितीर्षूणा, 13° अंश for अंग, 15ᶜ आयत्तं for उपेतं, 19ᶦ सर्गान्ते for वृत्तान्तै, 19ᵇ रञ्जनं for रञ्जकं, 20ᵇ वर्ज्यते for दुष्यति, 22ᵈ कथनं for वर्णनं, 25ᵈ कारण for लक्षणं, 26ᵇ साश्वासत्वं for सोच्छ्वासत्वं; 27ᶦ आश्वास for उच्छ्वास, 29ᶦ न ते for नैते, 32ᵈ आसा. for आर्या, 36ᵇ स्थिति for स्मृता, 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु, 37ᵇ स्कन्धकादि यत् for स्कन्धका-दिक, 37ᶦ ओसरादीनि for आसारादीनि, 38ᶦ कथादि for कथाहि, 38ᵇ पठ्यते for वध्यते, 38ᶜ त्वाहु for प्राहु; 39ᵃ शाम्यादि for शल्यादि, 42ᵈ लक्ष्यते for दृश्यते, 49ᶦ आननं for मुखं, 50ᶜ वर्तते for वर्धते; 51ᵇ स्थित for स्थिति; 52ᶜ तद्रूपादि for तद्रूपाहि, 53ᶜ तदा for ततः, 54ᵈ इप्सितं for इष्यते, 57ᵈ कर्तुं for हन्तु, 63ᶦ वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते, 67ᵃ परं for खरं; 69ᶜ हि for तु, 71ᵈ मुखं for मनः, 72ᶜ क्षपित· for क्षयित· 78° अन्यच्च for अन्यत्र, 85ᵈ विद्यते for दृश्यते, 89ᵈ यथा for जनाः, 97ᵈ मतौ for स्मृतो, 99° इह for इमे, 99ᶦ अन्यत्र for अप्यत्र.

Chap II 2ᵃ प्रतिसंस्कर्तुम् for परिसंस्कर्तुम्; 3ᵈ अद्य for अन्यत्; 6ᵃ श्लिष्ट for श्लेष, 7ᵇ संसृष्टि. for सङ्कीर्णम्; 10ᵃ परिक्षिप्य for परिभ्रम्य, 14ᵈ प्रदर्श्यते

for निदर्श्यते , 15^{d} प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् , 17^{a} त्वद् for तव , 28^{d} मता for स्मृता , 30^{1} मता for स्मृता , 31^{d} इष्यते for उच्यते , 33^{d} उदिता for मता , 40^{d} प्रथयन्ती for बोधयन्ती , 42^{d} एव सा for मता , 48^{a} समाहृत्य for समीकृत्य , 50^{d} स्मृता for मता , 54^{a} इत्येवमादि for इत्येवमादौ , 54^{c} च for एव , 56^{b} त्वत्र for तत्र , 60^{b} अन्यूनार्थवाचिन for अन्यूनार्थवादिनः , 62^{a} संरुन्धे for सन्धत्ते , 64^{d} सादृश्यसूचिन for सादृश्यसूचका , 65^{b} इष्यते for उच्यते , 71^{a} धर्म्माम्बु for घर्म्माम्भ', 74^{c} मुग्धे for मुग्ध , 75^{b} च for अपि , 82^{d} पश्यति for कल्पते , 97^{c} नवाय च नताङ्गीना for स एवावनताङ्गीना , 100^{d} दैवतर्धयः for दैवतर्धय , 105^{a} वर्णोत्पल for नीलोत्पलं , 113^{b} अपि for तथा , 114^{c} अनुगति for अवगति , 115^{b} इत्यपि for एव च , 116^{b} कुटजोद्गमा for कुटजद्रुमा , 117^{b} वर्ग for वृन्द , 117^{c} अद्य for एप ; 118^{a} अद्य for अत्र , 128^{d} तत्र नाश्रय for न तदाश्रय , 129^{c} अत्र for एव and तद् for यद् , 132^{1} न्वह for न्विदं , 137^{a} प्रत्याचक्षाणया for इत्याचक्षाणया , 137^{b} विबन्धिन for अनुबन्धिन , 137^{d} ईदृश for उच्यते , 144^{d} प्रतिबन्धिन for परिपन्थिनः , 145^{d} एकान्तरक्तया for एवानुरक्तया , 146^{b} मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी , 149^{d} उपसूचनात् for उपदर्शनात् , 153^{d} निवार्यते for निषिध्यते , 154^{d} जीर्णं for नीलं , 161^{c} दर्शयित्वेति for दर्शयित्वेह , 162^{b} तृप्यति for शाम्यति , 163^{b} अयं निवर्त्यते for यन्निवार्य्यते , 172^{a} आह्लादयति for आनन्दयति , 180^{d} च्छवि for द्युति ; 182^{c} इयता for अयन्तु , 182^{d} जलात्मा for जडात्मा , 186^{d} सोऽनुविधीयते for सोप्यभिधीयते , 190^{d} लोलदृष्टि for लोलनेत्र , 192^{b} वियदम्भसो' for चन्द्रहसयोः , 192^{d} चन्द्रहसयो for वियदम्भसो , 195^{d} अदर्शयत् for अदर्शि यत् , 197^{c} सूक्ष्म for शुद्ध , 199^{b} हेतुकं for हेतुजं , 207^{c} सच्छाय for सुच्छायः,

215c अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते, 215d स्थिते. for स्थिति, 219d उत्सुक for उद्यत, 222c चैवन्तु for वेत्येव, 222d कथ्यते for वर्ण्यते, 224b जन्यते for जायते, 226d अनुन्मत्तो for उन्मत्तो, 230d उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यता, 236d मनोज्ञारोचके for मदनाग्न्यातुरे, 240b कृता for स्थिता, 243d व्याक्रियन्ते for व्याह्रियन्ते, 245d आश्रये for आश्रमे, 260c त्वदर्पित for मदर्पित, 266b एव for एष, 276d अनुगम्यता for अवगम्यता, 277a सैवावन्ती for सैषा तन्वी, 283c देवी for तन्वी, 291a इति मुक्त्वा for एवमुक्त्वा, 295b दैवबलात् for दैववशात्, 296a तस्या for अस्या, 296b नमस्यतः for पतिष्यत, 300c अतिव्यक्त for इति प्रोक्त, 302c शीता किल for मयि शीता, 304b नाम नो for नामतो, 311c वा for च, 323c कुलं for बल 325c जगत्त्रयं for नभस्तल, 326d कल्प्यते for कल्पने, 327c स्मृता for मता, 329b अपि for च, 335d लोचनम् for लोचने, 337d अप्रक्रान्तेप्सिता for अप्रक्रान्तेषु या, 344c प्रविस्तर for विस्तर, 346c एव for एष, 348a सह-भावस्य for सहभावेन, 348d यथा for स्मृता, 349a पाण्डरा for पाण्डुरा, 350d अश्रुभि for असुभि, 352c निरूपण for निदर्शनं, 353d पाण्डर for पाण्डुरं, 355d कीर्त्तितं for दर्शितं, 356d संसृष्टि कथ्यते पुन for सङ्कीर्णन्तु निगद्यते, 360d य. स्थित for संस्थित.

Chap III 6b साम्प्रतं for सत्पतिं, 8d किन्न्विद for किन्तु ते, 21c वा for च, 38b ईप्सिता for ईहिता., 41a आमोद for आनन्द, 41d न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि; 55d तापनेन for तायनेन, 63d पिष्टपस्य for विष्टपस्य, 80a आहु. for प्राहु, 111d तायवो for वायवो, 117a जन for नरं, 119b रुषा for क्रुधा; 127b च for वा, 129a-b सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि, 129c ऐरावत. for ऐरावण.; 132a कुलं for बलं, 132c न च ते कोपि for तव नैकोऽपि, 137d

अलङ्कृति for अलङ्क्रिया , 145^b अजा for अमी , 146^d न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूषण , 153^1 एष for एव 156^c यत्र for तत्र , 158^a वियुक्ता for विमुक्ता , 158^c मदनबाण for स्मरस्य बाण , 158^d मृगेक्षणा for वामेक्षणा , 160^d अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्वपुष्यपि , 161^a न्यङ्ग for न्यस्त , 165^a अस्पर्शी for अमर्शं , 174^a-^b सुगतै सस्कृताभङ्ग. [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगत. संस्कारानविनश्वरान् , 176^a प्रवेश उपदिश्यते for प्रस्थानमुपदिश्यते , 184^b सकल for सफल and निष्कल for निष्फल. , 185^b कन्यका for पुत्रिका

The differences between our readings of the text and those of Dr F W Thomas (JRAS , 1903, pp 349-354) are noted below for comparison —

Chap I 12^c विविक्षूणा for तितीर्षूणा , 13^c अंश for अग , 20^c उपात्तेषु सम्पत्ति for उपात्तार्थसम्पत्ति , 60^b नियच्छति for निगच्छति 62^c एन for एतं , 80^b एतद for तद्

Chap II 2^c प्रतिसंस्कर्तुं for परिसंस्कर्तुं , 10^c परिक्षिप्य for परित्यज्य , 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते , 64^a सूचिन for सूचक , 82^a पश्यति for यस्यति , 134^c यातव्यं for याहि त्वं , 142^a रन्ध्रावेक्षेण for रन्ध्रान्वेषण , 148^c त्वं for ते , 149^a अस्यार्थस्य for तस्यार्थस्यैव , 155^b सानुक्रोशमिवोत्पले for सानुक्रोशोऽयमाक्षेप. , 182^c इयता for अय तु , 197^c सूक्ष्माम्बु for शुद्धाम्बु , 255^a रागबालातप for रविबालातप , 300^c अतिव्यक्त for प्रोक्त , 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता , 350^a अश्रुभि for असुभि , 364^a एष for एव

Chap III 38^d वर्ण्यन्ते for वक्ष्यन्ते , 41^c आमोद for आनन्द ; 70^c तस्यापि for तत्रापि , 158^c मदनबाण for स्मरस्य बाण

With reference to the xylograph used by Dr F W T h o m a s he himself observes that in some cases (viz II 155, 362, and III 128) it is scarcely decipherable Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones, as for instance, II 109, 118, III 141

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here In II 116[b] we read कुटजोङ्गमा· for कुटजद्रुम It seems that *ungama in Kutajongama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation Cf *pungala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala* The word *udgama*, literally 'shootingforth' appears to mean 'a bud '

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan According to the printed Sanskrit text, one line in II 56 and another in II 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two Thus the śloka II 65 in our text is II 66 in the printed Sanskrit text, and so on Again, ślokas II 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas, e g II. 156, 160 and 161 in our text are II 161, 159 and 160 respectively in the printed text Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission In a rare instance, e.g , in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyādarśa* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script, it is just one of the many The study of the remaining works may prove equally useful and interesting

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor Vidhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, MA, and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, MA, for their occasional assistance

Lastly I must also express my thanks to Mr J C Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesy while this work was being seen through the press

The University of Calcutta,
July, 1939

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚA

༄༅། །སློབ་དཔོན་ དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པའི་

སྙན་ངག་མེ་ལོང་མ་ ཞེས་བྱ་བ་

སྐད་གཉིས་ཤན་སྦྱར་

བཞུགས་སོ །།

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

[1b] नम आर्य्यमञ्जुश्रीकुमारभूताय

འཕགས པ འཇམ དཔལ གཞོན ནུར གྱུར་པ ལ་ ཕྱག་འཚལ ལོ ॥

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहसवधूर्म्मम ।
मानसे रमतां दीर्घं सर्व्वशुक्ला सरस्वती ॥१॥

གདོང་བཞི་ གདོང་གི པད ཚལ་གྱི །
ངང་པའི་ བུ་མོ་ ཐམས་ཅད དཀར །
དབྱངས ཅན་མ་ ནི་ ཁོ་དོ་ཡི །
ཡིད ལ་ རིང་དུ་ གནས་པར་མཛོད ॥ ༡

पूर्व्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।
यथासामर्थ्यमस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणं ॥२॥

བསྟན་བཅོས་སྔ་མ་རྣམས་ བསྡུས་ཤིང་ །
སྦྱོར་བ་རྣམས་ ཀྱང་ ཉེར་མཚོན་ ཏེ །

ཇི་ལྟར་ནུས་བཞིན་ བདག་གིས་ནི །

སྙན་ངག་ དག་གི་ མཚན་ཉིད་བྱ ॥ ༢

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्व्वथा ।

वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥३॥

འདི་ན་ ཀུན་དུ་ མཆོག་རྣམས་ཀྱིས །

རྗེས་སུ་བསྟན་ དང་ ལྷག་མའི་ཡང་ །

ཚིག་རྣམས་ཉིད་ ཀྱི་ དྲིན་གྱིས་ ནི །

འཇིག་རྟེན་ལུགས་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད ॥ ༣

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रय ।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥४॥

གལ་ཏེ་ སྒྲས་ བོད་ སྣང་བ་ཡིས །

འཁོར་བ་ གསལ་བར་མ་བྱས་ན །

འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ མཐའ་དག་ འདི །

སྨག་རུམ་མུན་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར ॥ ༤

आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वयम्पश्य नश्यति ॥५॥

སྔོན་གྱི་རྒྱལ་པོ་གྲགས་པའི་གཟུགས། །
ངག་གི་རང་བཞིན་མེ་ལོང་ཐོབ། །
དེ་དག་ཉེ་བར་མི་གནས་ཀྱང་། །
རང་ཉིད་ཉམས་པ་མེད་ལ་ལྟོས། ॥ ༥

गौर्गौः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

མཁས་པས་ཡང་དག་རབ་སྦྱར་བའི། །
ངག་ནི་འདོད་འཇོའི་བ་རུ་བཤད། །
དེ་ཉིད་ཉེས་པར་སྦྱར་ན་སྨྲར། །
སྦྱོར་པོ་བ་ལང་ཉིད་བརྗོད་བྱེད། ॥ ༦

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगं ॥७॥

དེ་ཕྱིར་ སྙན་ངག་ དག་ལ་ སྐྱོན།

ཆུང་བར་གྱུར་ ཀྱང་ ཅི་ཞིག་ ལྷུར།

བཏང་སྙོམས་ མི་བྱ་ ལུས་མཛེས་ཀྱང་།

སྐྱོན་གཅིག་གིས་ནི་ སྐལ་ངན་འགྱུར།། ༧

गुणदोषानशास्त्रज्ञ. कथं विभजते जनः ।

किमन्धस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

སྐྱེ་བོ་ བསྟན་བཅོས་ མི་ཤེས་པས།

ཡོན་ཏན་ སྐྱོན་དག་ ཇི་ལྟར་དབྱེ།

གཟུགས་ཀྱི་ དབྱེ་བ་ དམིགས་པའི་ སྐབས།

ལོང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ཅི།། ༨

अत. प्रजानां व्युत्पत्तिमभिसन्धाय सूरयः ।

वाचां विचित्रमार्गाणा निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

དེ་ཕྱིར་ མཁས་པས་ སྐྱེ་དགུ་རྣམས།

བྱེ་བྲག་ རྟོགས་ལ་ མངོན་དགོངས་ནས།

རྣམ་བཀྲ་ལམ་ལྷན་ ཚིག་རྣམས་ ཀྱི །

བྱ་བའི་ཚོག་ ངེས་པར་སྦྱར ॥ ༩

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ སྙན་ངག་གི །

ལུས་དང་ རྒྱན་ ཡང་ རབ་ཏུ་བསྟན །

ལུས་ ནི རེ་ཞིག་ འདོད་པ་ཡི །

དོན་གྱི་རྣམ་བཅད་ ཚིག་གི་ ཕྲེང་ ॥ ༡༠

पद्यं गद्यञ्च मिश्रञ्च तत्त्रिधैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཚིགས་བཅད་ ལྷུག་པ་ དང་ །

སྤེལ་མ་ རྣམ་གསུམ་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཚིགས་བཅད་ རྐང་བཞི་པ་ དེ་ཡང་ །

བྲྀཏྟཾ་ ཛཱ་ཏི་ ཞེས་ རྣམ་གཉིས ॥ ༡༡

छन्दोविचित्यां स[2b]कलस्तत्प्रपञ्चो निदर्शित· ।
सा विद्या नौर्विविक्षूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

དེ་ཡི་སྤྲོས་པ་ མཐའ་དག་ནི །
སྡེབ་སྦྱོར་ གཞུང་དུ་ ངེས་པར་བསྟན །
རིག་དེ་ སྙན་ངག་ རྒྱ་མཚོ་ནི །
ཟབ་མོར་ འཇུག་ འདོད་ རྣམས་ ཀྱི་ གྲུ ॥ ༡༢

मुक्तकं कुलकङ्कोष संघात इति तादृशः ।
सर्गबन्धांशरूपत्वादनुक्तः पद्यविस्तर· ॥१३॥

གྲོལ་བ་ དང་ནི་ རིགས་ དང་ མཛོད །
འདུས་པ་ ཞེས་བྱ་ དེ་འདྲ་ཡི །
ཚོགས་བཅད་ རྒྱ་ཆེ་ སཀྲས་ བཅིངས །
ཆ་ཤས་ རང་བཞིན་ ཕྱིར་ མ་བརྗོད ॥ ༡༣

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥

སགས་ བཅིངས་པ་ སྙན་ངག་ཆེ །
དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བརྗོད་པར་བྱ །
ཞེས་ བརྗོད ཕྱག་བྱ་ དངོས་པོ་ ནི །
ངེས་པར་ བསྟན་པའང་ དེ་ཡི་སྒོ ॥ ༡༤

इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं ।
चतुर्वर्गफलायत्तं चतुरोदात्तनायकं ॥१५॥

སྔོན་བྱུང་གཏམ་ ལས་ གྱུར་པའམ ॥
ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བརྟེན་པ །
སྡེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་གྱུར་ དང་ །
མཁས་ཤིང་ རྒྱ་ཆེའི་ འདྲེན་པ་ཅན ॥ ༡༥

नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।
उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྱེར་ རྒྱ་མཚོ་ རི་དང་ དུས །
ཉི་ཟླ་འཆར་བའི་ བསྔགས་པ་ དང་ །

སྐྱེད་ཚལ་ཆུ་ཡི་ རོལ་རྩེད་ དང་ །

ཆང་འཐུང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དང་ ༎ ༡༦

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयव*र्णनै. ॥

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि ॥१७॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་མ་ དང་ །

གཞོན་ནུ་སྐྱེ་ དང་ འཕེལ་བ་ དང་ །

གྲོས་ དང་ ཕོ་ཉ་ བགྲོད་པ་དང་ །

གཡུལ་དང་ འདྲེན་པ དར་བས་ ཀྱང་ ། ༡༧

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गैरनतिविस्तीर्णैः अव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥१८॥

བརྒྱན་པར་གྱུར ཅིང་ མདོར་བསྡུས་ མིན །

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གདམ །

སཀ་ཤིན་ཏུ་ རྒྱ་ཆེ་ མིན །

མཉན་འོས་ བྲྀད་ ལེགས་མཚམས་ སྦྱར ༎ ༡༨

सर्वत्र भिन्नसर्गान्तै[3a]रुपेत लोकरञ्जनं ।
काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलंकृति ॥१९॥

ཀུན་ཏུ་ སརྒ་དག་གི་ མཐའ། །
ཐ་དད་ལྡན་པས་ འཇིག་རྟེན་ མཛེས། །
སྙན་ངག་ དམ་པའི་རྒྱན་ལྡན་ནི། །
བསྐལ་པའི་ བར་དུ་ གནས་པར་འགྱུར། ༡༩

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदंगैः काव्यं न वर्ज्यते ।
यद्युपात्तेषु सम्पत्तिराराधयति तद्विदः ॥२०॥

གང་ཞིག་ ཡན་ལག་ འགའ་ དམན་ ཡང་། །
གལ་ཏེ་ སྦྱོར་རྣམས་ ཕུན་ཚོགས་ཀྱིས། །
དེ་རིག་ མགུ་བར་བྱེད་པ་ ན། །
འདིར་ནི་ སྙན་ངག་སྐྱོན་ མ་ཡིན། ༢༠

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्विषां ।
निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

ཐོག་མར་ འདྲེན་པ་ ཡོན་ཏན་ གྱིས །
ཉེ་བར་ བཀོད་ནས་ དེ་ཡིས་ནི །
དགྲ་ལ་ གནོད་པ་བྱེད་ ཅེས་པའི །
ལམ་འདི་ རང་བཞིན་ མཛེས་པ་ ཡིན ॥ ༢༡

वशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।
तज्जयान्नायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

རིགས་ དང་ བརྩོན་འགྲུས་ ཐོས་ སོགས་ཀྱིས །
དགྲ་བོ་ལ་ ཡང་ བསྔགས་བྱས་ནས །
དེ་ལས་ རྒྱལ་བར་ འདྲེན་པ་ ནི །
ཁྱད་འཕགས་ བརྗོད་པའང་ བདག་ དགའ་སྐྱེས ॥ ༢༢

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।
इति तस्य प्रभेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

རྐང་པ་མེད་པའི་ ཚིག་རྒྱུན་ ནི །
ལྷུག་པ་ བརྗོད་པ་ དག་ དང་ གཉིས །

ཞེས་པ་ དེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས །

དེ ལ འདྲེན པ ཉིད ཀྱིས་ ནི ༎ ༢༣

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरेण वा ।

स्वगुणाविष्क्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བརྗོད་པར་བྱ་བ བརྗོད པ པོ །

གཞན་ནི་ འདྲེན་པའམ་ གཞན་ གྱིས་ ཀྱང་ །

རང་གི་ ཡོན ཏན་ བསྔགས སྒྲོན་ འདིར །

ཡང དག་དོན་ བསྔགས ཕྱིར་ ཡོད་མིན་ ༎ ༢༤

अपि त्वनियमो दृष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति कीदृग्वा भेदकारणं ॥२५॥

འོན་ཀྱང ངེས པ་ མ མཐོང་སྟེ །

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བརྗོད་པའི་ཕྱིར །

གཞན་གྱིས་བརྗོད: དེ རང་གིས: ཞེས །

དབྱེ་བའི་རྒྱུ་ ནི་ ཅི་འདྲ་ཞིག ༎ ༢༥

वक्त्रञ्चापरवक्त्रञ्च साश्वासत्वञ्च भेदकं ।
चिह्नमाख्यायिकायाश्चेत्प्रसङ्गेन कथास्वपि ॥२६॥

གལ་ཏེ སྒོ་ དང གཞན སྒོ དང་ །
དབུགས མཚམས བཅས་ཉིད་ བརྗོད་པ་ཡི །
ཐ་དད་པ་ཡི རྟགས་ ཡིན ན །
ཞར་ གྱིས་ གཏམ་ རྣམས དག་ལ་ཡང ॥ ༢༦

आर्यादिवत्प्रवेशः किं न वक्त्रापरवक्त्रयोः ।
भेदश्च दृष्टो लम्भादिराश्वासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

འཕགས་མ་ སོགས་ བཞིན་ སྒོ་ དང་ནི །
གཞན་གྱི་སྒོ་ དག་ ཅེས་ མི་འཇུག །
ལམྦྷ སོགས་སམ་ ཨཱ་ཤྭཱ་སའ །
དབྱེ་བ་ མཐོང་ཡང་དེ་ ལས་ཅི ॥ ༢༧

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाङ्किता ।
तत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ གདམ་ དང་ བརྗོད་པ་ ཞེས།
མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོན།
ལྷག་མ་ བརྗོད་པའི་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་།
འདི་ཉིད་ ནང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར།། ༢༨

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोद्‌याद्‌यः ।
सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२९॥

བུ་མོ་འཕྲོག་ དང་ གཡུལ་ དང་ ནི།
བསླུ་བ་ དར་བ་ ལ་སོགས་ པ།
སརྒས་བཅིངས་ པ་ མཚུངས་ པ་ཉིད།
དེ་དག་ ཁྱད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ མིན།། ༢༩

कविभावकृतं चिह्नमन्यत्रापि न दुष्यति ।
मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतात्मनाम् ॥३०॥

སྙན་ངག་མཁན་གྱི་ བསམ་བྱས་ རྟགས།
གཞན་དུ་ དང་ ནི་ སྐྱོན་མི་ འགྱུར།

འདོད་དོན་ གྲུབ་ལ་ ཤློ་ཀ་ ནི །
མཁས་པ་རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྱུར ॥ ༣༠

मिश्राणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।
गद्यपद्यमयी कापि चम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྤེལ་མ་ ཟློས་གར་ལ་སོགས་དེ །
དེ་དག་ རྣམས་ནི་ གཞན་ན་ རྒྱས །
ལྷུག་པ་ ཚིགས་བཅད་རང་བཞིན་ ཡང་ །
ཙམྤུ་ ཞེས་པར་ མངོན་པར་ བརྗོད ॥ ༣༡

तदेतद्वाङ्मयम्भूयः संस्कृतम्प्राकृतन्तथा ।
[4a]अपभ्रंशश्च मिश्रश्चत्याहुराप्ताश्चतुर्विधं ॥३२॥

ངག་གི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ ཀྱང་ །
ལེགས་སྦྱར་ དེ་བཞིན་ རང་བཞིན་ དང་ །
ཟུར་ཆག་ འདྲེས་མ་ ཞེས་བྱ་བ །
རྣམ་པ་བཞི་རུ་ མཁས་པས་ གསུངས ॥ ༣༢

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

ལེགས་སྦྱར་ ཞེས་བྱ་ ལྷ་ཡི་ ནི །
སྐད་དུ་ དྲང་སྲོང་ ཆེན་པོས་ གསུངས །
དེ་སྐྱེས་ དེ་མཚུངས་ ཡུལ་ཅན་ ཞེས །
དུ་མ་ རང་བཞིན་ དག་གི་ རིམ ॥ ༣༣

महाराष्ट्राश्रयाम्भाषां प्रकृष्टम्प्राकृतं विदुः ।
सागरः सूक्तिरत्नाना सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

ཡུལ་འཁོར་ཆེན་པོ་ ལ་ བརྟེན་ སྐད །
ལེགས་བརྗོད་ རིན་ཆེན་ དག་གི་ མཚོ །
སེ་དུས་ བཅིངས་ སོགས་ རང་བཞིན་ གང་ །
རང་བཞིན་ མཆོག་ཏུ་ གྱུར་པར་ རིག ॥ ༣༤

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी ।
याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्निधिं ॥ ३५॥

སཱུ་ར་སེ་ནཱ་གཽ་ཊ་དང་ །

ལཱ་ཊཱ་ གཞན་ཡང་ དེ་འདྲ་ཡི །

སྐད་ ནི་ རང་བཞིན་ཉིད་ ཅེས་བྱའི །

ཕ་སྙད་ རྣམས་ ལ་ ཉེ་བར་འགྱུར ॥ ༣༥

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।

शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

བ་ལང་རྫི་ ལ་སོགས་པའི་ ཚིག །

སྙན་ངག་ལ་ ཟུར་ཆག་ ཅེས་ གནས །

བསྟན་བཅོས་ རྣམས་ ལས་ ལེགས་སྦྱར་ ལས །

གཞན་པ་ ཟུར་ཆག་ཉིད་དུ་ བརྗོད ॥ ༣༦

संस्कृतं सर्गबन्धादि प्राकृतं स्कन्धकादि *यत् ।

ओसरादोन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ལེགས་སྦྱར་ སགྲས་ བཅིངས་ ལ་སོགས །

རང་བཞིན་ སྐནྡྷ་ཀ་ སོགས་དང་ །

ཟུར་ཆག་ ཨོ་ས་ར་ སོགས་དེ །
ཟློས་གར་ ལ་སོགས་ འདྲེས་པའོ ॥ ༣༦

कथादि सर्वभाषाभिः संस्कृतेन च ःपठ्यते ।
भूतभाषामयी त्वाहुरद्भुतार्था″ बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གཏམ་ སོགས་ སྐད་ རྣམས་ ཐམས་ཅད་དང་ །
ལེགས་སྦྱར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅིངས་པ་སྟེ །
རྨད་བྱུང་ དོན་ཅན་ རྒྱ་ཆེའི་གཏམ །
འབྱུང་པོའི་སྐད་ཀྱི་ རང་བཞིན་ བརྗོད ॥ ༣༧

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्ष्यार्थमितरत्पुनः ।
श्रव्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

སྒེག་ དང་ རོལ་ དང་ སྟབས་ ལ་སོགས །
ལྟ་བའི་དོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤོས་ ཀྱང་ །
མཉན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ ཅེས་པ །
འདི་ཡང་ ལུགས་གཉིས་ དག་ཏུ་ བརྗོད ॥ ༣༨

अस्त्यनेको गिरां मार्गः सूक्ष्मभेदः परस्परं ।
तत्र वैदर्भगौडीयौ वर्ण्येते प्रस्फुटान्तरौ ॥४०॥

ཕན་ཚུན་ དབྱེ་བ་ ཕྲ་མོ་ཅན།
ཚིག་གི་ལམ་ ནི་ དུ་མ་ ཡོད།
དེ་ལ་ བཻ་ དརྦྷ་ དང་ནི།
གོ་ཌ་བ་ ཁྱད་ གསལ་བར་ བརྗོད॥ ༤༠

श्लेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।
अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजःकान्तिसमाधयः ॥४१॥

སྦྱར་བ་ རབ་དངས་ མཉམ་ ཉིད་ དང་།
སྙན་ དང་ ཤིན་ཏུ་ གཞོན་པ་ དང་།
དོན་ གསལ་བ་ དང་ རྒྱ་ཆེ་ ཉིད།
བརྗིད་ དང་ མཛེས་ལྡན་ ཏིང་ངེ་འཛིན॥ ༤༡

इति वैदभमार्गस्य प्राणा दशगुणाः *स्मृताः ।
एषां विपर्य्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडवर्त्मनि ॥४२॥

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བཻ་ དརྦྷའི །
ལམ་གྱི་ སྲོག་ཏུ་ བཤད་པ་ ཡིན །
འདི་དག་ ཕལ་ཆེར་ བཟློག་པས་ ནི །
གོ་ཊའི་ལམ་ དག་ མཚོན་པ་ ཡིན ॥ ༤༢

श्लिष्टमस्पृष्टशैथिल्यमल्पप्राणाक्षरोत्तरं ।
शिथिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

སྦྱར་བ་ ལྷོད་པས་ མ་ རེག་པའོ །
སྲོག་ཆུང་ ཡི་གེ་ མང་བ་ ནི །
ལྷོད་པ་ མཱ་ལ་ཏཱི་ མཱ་ལཱ །
ལོ་ལཱ་ལི་ཀ་ལི་ལཱ་ འདོད ॥ ༤༣

अनुप्रासधिया गौडैस्तदिष्टं बन्धगौरवात् ।
वैदर्भैर्मालतीदाम लंघितं भ्रमरैरिति ॥४४॥

གོ་ཌ་བ་ ཡིས་ རྗེས་ཟློས་བློས །
དེ་ འདོད་ མཱ་ལ་ཏཱི་ དཱ་མ །

ལཾ་གྟིྃ་ ཏྲཱ་མ་རེཿ ཞེས།
བེ་དྲྀ་ ཡིས་ སྒྲོར་ལྡེ་བྲེད॥ ༤༤

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति ।
लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྡན་པ་ གྲགས་དོན་ཅན།
ཟླ་བའི་མཚན་མ་ ཨུཏྤལ་ གྱི།
འོད་ཀྱིས་ མཛེས་པ་ ཀྲུས་ ཅེས་པ།
རྟོགས་པའི་ སྐལ་བཟང་ ལྡན་པའི་ ཚིག ॥ ༤༥

व्युत्पन्नमिति गौडीयैर्नातिरूढमपीष्यते ।
यथानत्यर्जुनाब्जन्मस[5a]दृक्षाङ्को बलक्षगुः ॥४६॥

ངེས་ཚིག་ ཡོད་ ཕྱིར་ གཽ་ཊ་བ།
ཤིན་ཏུ་ གྲགས་པ་ མིན་ ཡང་ འདོད།
ཤིན་ཏུ་ དཀར་ མིན་ ཆུ་ལས་སྐྱེས།
དེ་འདྲས་ མཚན་པ་ འོད་དཀར་ཅན॥ ༤༦

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।
बन्धा मृदुस्फुटोन्मिश्रवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

མཉམ་པ་ སྦྱོར་བ་ མི་མཉམ་ ཟལ།
དེ་ནི་ འཇམ་ རྩུབ་ བར་མ་ སྟེ།
སྦྱོར་བ་ འཇམ་ རྩུབ་ བར་མ་ ཡི།
ཡི་གེ་ བཀོད་པའི་ སྐྱེ་གནས་ཅན། ༤༧

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।
उच्छलच्छीकराच्छाच्छनिर्झरांभःकणोक्षितः ॥४८॥

ཁུ་བྱུག་ ཅ་ཅོར་སྒྲོག་བྱེད་ ཅིང་།
མ་ལ་ཡ་རླུང་ བདག་ལ་ འོང་།
ཉར་མ་ རབ་འཕྱོར་ དང་ཞིང་དང་།
ཆུ་རྒྱུན་ཆུ་ཐིགས་ཀྱིས་ བྲན་པ། ༤༨

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमारुतः ।
स्पर्द्धते रुद्धमद्धैर्यो वररामाननानिलैः ॥४९॥

ཙནྡན་གྱིས་བསྐོས་དྲི་ལྡང་ཞིང་།
འཛམ་པ་མ་ལ་ཡ་ཡི་རླུང་།
བདག་གི་བཏུན་འགོག་དགའ་མ་ནི།
མཆོག་གི་ཁ་ཡི་རླུང་དང་འགྲན།། ༤༩

इत्यनालोच्य वैषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।
अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞེས་པ་མི་མཉམ་མ་བརྟགས་པར།
དོན་གྱི་རྒྱན་དང་ཚོགས་དག་ལ།
ལྟོས་ནས་ཤར་ཕྱོགས་པ་དག་ལ།
སྙན་ངག་ལམ་ནི་བྱུང་བར་གྱུར།། ༥༠

मधुरं रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।
येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुव्रताः ॥५१॥

སྙན་པ་ཉམས་ལྡན་ཚིག་དང་ནི།
དངོས་པོ་ལ་ཡང་ཉམས་གནས་པ།

སྦྲང་རྩི་ སྦྱོར་བ་ སྦྲང་རྩིས་ བཞིན།
གང་གིས་ བློ་ལྡན་ དགའ་བྱེད་པའོ། ༥༡

यया कयापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
तद्रूपादिपदासत्तिः सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

སྒྲ་ ནི་ གང་ དང་ ཅི་ཡིས་ ཀྱང་།
གང་ཞིག་ མཚུངས་པར་ ཉམས་མྱོང་བ།
དེ་ཡི་ གཟུགས་ སོགས་ ཚིག་ཉེ་བ།
རྗེས་སུ་ ཕྲིད་ བཅས་ ཉམས་དང་ལྡན། ༥༢

एष राजा यदा लक्ष्मीम्प्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

གང་ཚེ་ བྲམ་ཟེ་ དགའ་བ་ཡི།
རྒྱལ་པོ་ འདི་ཡིས་ དཔལ་ཐོབ་གྱུར།
དེ་ནས་བཟུང་སྟེ་ ཆོས་ཀྱི་ ནི།
དགའ་སྟོན་ འཇིག་རྟེན་ འདི་རུ་ བྱུང་། ༥༣

इतीदं *नादृतं गौडैरनुप्रासस्तु तत्प्रियः ।
अनुप्रासादपि प्रायो वैदर्भैरिदमीप्सितं ॥५४॥

ཅེས་ འདི་ གཽ་ཊ་བ་ མི་ འདོད །
དེ་ དག རྗེས་སུ་ ཕྲིད་ ལ་ དགའ །
ཕལ ཆེར་ རྗེས་སུ་ ཕྲིད་ ལ་ དགའ །
བཻ་དརྦྷ་ ནི་ འདི ཉིད་ འདོད ॥ ༥༨

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।
पूर्व्वानुभवसंस्कारबोधिनी यद्यदूरता ॥५५॥

རྐང་པ རྣམས་ དང་ ཚིག་ རྣམས་ ལ །
ཡི་གེ་ བསྐྱར་བ་ རྗེས་སུ་ཕྲིད །
སྔ་མའི་ཉམས་མྱོང་ འདུ་བྱེད་ ནི །
རྟོགས་བྱེད་ གལ་ཏེ་ མི་རིང་ཉིད ॥ ༥༥

चन्द्रे शरन्निशोत्तंसे कुन्दस्तवकविभ्रमे ।
इन्द्रनीलनिभं लक्ष्म सन्दधात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

སྟོན་མཚན་ དབུ་རྒྱན་ ཟླ་བ་ ནི །
ཀུནྡའི་ ཕོན་པོར་ འཁྲུལ་པ་ ལ །
མཚན་མ ཨིནྡྲ་ནཱི་ལ་ མཚུངས །
བྱུང་བའི་ དཔལ་ ནི ཡང་དག་ འཛིན ॥ ༥༦

चारु चान्द्रमसं भीरु विम्बम्पश्येदमम्बरे ।
मन्मनो मन्मथाक्रान्त निर्दयं *कर्तुमुद्यतं ॥५७॥

མཛེས་མ་ མཁའ་ལ་ ཟླ་བ་ཡི །
དཀྱིལ་འཁོར་ མཛེས་པས་ བདག་གི་ཡིད །
ཡིད་སྨུབ་ ཀྱིས་ མནན་ བརྩེ་མེད་དུ །
འཇོམས་པར་ བརྩོན་པ་ འདི་ ལ་ ལྟོས ॥ ༥༧

इत्यनुप्रासमिच्छन्ति नातिदूरान्तरश्रुतिम् ।
न तु रामामुखाम्भोजसदृशश्चन्द्रमा इति ॥५८॥

ཅེས་པ་ ཤིན་ཏུ་ མི་རིང་བར །
ཐོས་པ་ དག་ ནི་ རྗེས་ཁྲིད་ འདོད །

དགའ་མ་ བཞིན་གྱི་ཚུ་སྐྱེས་ དང་།
མཚུངས་པ་ ཟླ་བ་ ཅེས་ མི་འདོད། ༥༨

स्मरः खरः खलः कान्त. कायः कोपश्च नः कृशः ।
च्युतो मानोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥५९॥

བདག་གི་ ལུས་ དང་ ཁྲོ་བ་ ཕྲ།
འདོད་པ་ རྩུབ་ ཅིང་ མཛའ་བོ་ ངན།
ཁེངས་པ་ཉམས་ ཤིང་ ཆགས་པ་ རྒྱས།
རྨོངས་པ་ སྐྱེས་ ཏེ་ སྒྲོག་ རྣམས་ སོང་། ༥༩

इत्यादि बन्धपारुष्य॑ शैथिल्यञ्च नियच्छति ।
अतो नैव[6a]मनुप्रास दाक्षिणात्याः प्रयुञ्जते ॥६०॥

ཅེས་སོགས་ སྦྱོར་བ་ རྩུབ་པ་ དང་།
གྲོལ་བ་ ཡང་ནི་ སྤྱིར་བར་བྱེད།
དེ་ཕྱིར་ དེ་ལྟའི་ རྗེས་ཁྲིད་ ནི།
[illegible] ཕྱོག་ [illegible]པ་ དག་ མི་སྦྱོར་རོ། ༦༠

आवृत्तिमेव सघातगोचरं यमकम्विदुः ।
तन्तु नैकान्तमधुरमतः पश्चाद्विधास्यते ॥६१॥

ཚོགས་པའི་ སྤྱོད་ཡུལ་ བསྐོར་བ་ནི །
ཁོ་ན་ཟུང་དང་ ལྡན་པར་ རིག །
དེ་ཡང་གཅིག་ཏུ་ སྙམ་པ་ མིན། །
དེ་ཕྱིར་ ཕྱི་ནས་ བསྟན་པར་བྱ ॥ ༦༡

काम सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।
तथाप्यग्राम्यतैवैनम्भारम्वहति भूयसा ॥६२॥

ངེས་པར་ རྒྱན་རྣམས་ ཀུན་ལ་ ཡང །
དོན་གྱི་ ཉམས་ དག་ སྤྲིན་པར་བྱེད། །
དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གྲོང་པ་ ཉིད། །
མིན་པས་ ཁུར་ འདི་ ཕལ་ཆེར་ འཛིན ॥ ༦༢

कन्ये कामयमान मान्त्वं न कामयसे कथं ।
इति ग्राम्योयमर्थात्मा वैरस्यायैव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྡན་ བདག་ལ་ གཞོན་ནུ་མ །
ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད །
ཅེས་ འདི་ གྲོང་པའི་དོན་ བདག་ ཉིད །
ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད ॥ ༦༣

कामं कन्दर्पचण्डालो मयि वामाक्षि निर्दयः ।
त्वयि निर्मत्सरो दिष्ट्येत्यग्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་པ་ གདུག་པོ་ནི །
ངེས་པར་ བདག་ལ་ བརྩེ་བ་མེད །
ཁྱོད་ལ་ ཁྲོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་པ །
གྲོང་པའི་ དོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྡན ॥ ༦༤

शब्देपि ग्राम्यतास्त्येव सा सभ्येतरकीर्तनात् ।
यथा यकारादिपदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

སྒྲ་ལའང་ གྲོང་པ་ཉིད་ ཡོད་དེ །
དེ་ནི་ ལེགས་པའི་ ཚིག་ཤོས་ གྲགས །

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བརྗོད་པ་ལ །
ཇི་ལྟར་ ཡ ཡིག ལ སོགས་བཞིན ༎ ༦༥

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।
दुष्प्रतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥

ཚིག་གི་མཚམས་སྦྱོར་གྱིས་ ཞུགས་ དང་ །
སླར་ཡང་ ངག དོན་དག་གིས་ ཀྱང་ །
ཉེས་པར་རྟོགས་བྱེད་ གྲོང་ པ སྟེ །
ཡཱ་ བྷ་བ་ཏཿ པྲི་ཡཱ་ བཞིན ༎ ༦༧

परं प्रहृत्य विश्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।
एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

གཞན་ལ་ བསྣུན་ནས་ སྐྱེས་བུ་ ནི །
བཱིརྱ ལྡན་པའི་ བི་ཤྲཱནྟཿ །
དེ་ལྟ་བུ་ སོགས་ ལམ དག་ ནི །
གཉིས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྔགས་མ་ཡིན ༎ ༦༨

भगिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।
विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

བྷ་ག་བ་ཏཱི་ བྷ་གི་ནཱི།
ཞེས་སོགས་ཀུན་དུ་ཁས་ལེན་ཉིད།
དེ་ལྟར་སྙན་པ་རྣམ་པར་ཕྱེ།
ཤིན་ཏུ་གཞོན་པ་བཤད་པར་བྱ།། ༦༨

अनिष्ठुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।
बन्धशैथिल्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

རྩུབ་མིན་ཡི་གེ་མང་བ་ནི།
ཤིན་ཏུ་གཞོན་པ་ཉིད་དུ་འདོད།
གང་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་མཉེན་པ་ནི།
སྦྱོར་བ་ལྷོད་པའི་སྐྱོན་དུ་བཤད།། ༦༩

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगीतिभिः ।
कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

སྤྲིན་གྲི་ཕྲེང་བ་ལྡན་ དུས་སུ། །
སྙན་པར་སྒྲོགས་པའི་མགྲིན་ལྡན་པ། །
རྨ་བྱ་ཡི་ ནི་ མཇུག་མ་དག །
ཟླུམ་པོར་བྱས་ནས་ གར་བྱེད་དོ།། ༧༠

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
सुकुमारतयैवैतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་རྒྱས་ཉིད་མ་ཡིན། །
རྒྱན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མིན་ཏེ། །
ཤིན་ཏུ་གཞོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ། །
དམ་པ་རྣམས་ཀྱི་ ཁ་ ན་ གནས།། ༧༡

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

གསལ་ ཕྱིར་ གཞན་དག་ ཕལ་ཆེར་ ནི། །
བརྗོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ སྦྱོར། །

རྒྱལ་རིགས་རྣམས་ཀྱི་ ཕྲོགས་མཐའ་དག །
སྐད་ཅིག་གིས་ ནི་ ཉམས་པར་བྱས ༎ ༧༢

अर्थव्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।
भूः खुरक्षुण्णनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བརྡག་མི་དགོས་ཉིད །
འཕྲོག་བྱེད་ཀྱིས་ ནི་ ས་གཞི་དག །
རྨིག་པས་ བཅད་པའི་ཀླུ་ཁྲག་གིས །
དམར་བ་ ཆུ་ཡི་གཏེར་ ལས་བྱུང་ ༎ ༧༣

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।
इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

ཕག་པ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །
ཆུ་གཏེར་དམར་པོ་དག་ལས་བྱུང་ །
ཞེས་པ་ འདི་ཉིད་ བསྟན་པ་ནི །
གླང་འགྲོའི་ཁྲག་ ནི་ བརྡག་དགོས་ཉིད ༎ ༧༨

नेदृशम्बहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।
न हि प्रतीतिः सुभगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལམ་ ནི་ གཉིས་ཀ་ དག་ལ་ ཡང་ །
རྟོགས་པའི་སྐལ་བཟང་མི་ལྡན་ ཞིང་ །
སྨྲ་ཡི་ཚུལ་ལས་འགོངས་གྱུར་པ་ །
འདི་འདྲ་ ཕལ་ཆེར་ བཞེད་མ་ཡིན ༎ ༧༥

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्ते यस्मिन्प्रतीयते ।
तदुदाराह्वयं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་དུ་ འགའ་ཞིག་ བརྗོད་པ་ལ །
ཁྱད་འཕགས་ལྡན་པའི་ཡོན་ཏན་རྟོགས །
དེ་ནི་ རྒྱ་ཆེར་བརྗོད་དེ་ དེས །
སྙན་ངག་ལམ་ཀུན་ མགོན་དང་བཅས ༎ ༧༦

अर्थिनां कृपणा दृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

སློང་བ་རྣམས་ ཀྱི་ བཀྲེན་པའི་མིག །
ལན་ཅིག་ ཁྱོད་ གདོང་ལ་ ལྷུང་བ །

ལྷ་ཅིག་ གནས་སྐབས་ དེ་ཡིས་ སྐར །
གཞན་གྱི་ གདོང་ལ་ ལྷ་མ་ཡིན ༎ ༧༧

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

ཞེས་པ་ ཉིད་ཀྱི་ ཚིག་ འདི་ལ །
གཏོང་བ་ ཁྱད་འཕགས་ ལེགས་པ་ མཚོན །
ལམ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །
རིགས་པ་ མཚུངས་པས་ དཔག་པར་བྱ ༎ ༧༨

श्लाघ्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कैश्चिदिष्यते ।
यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

བསྔགས་པར་འོས་པའི་ ཁྱད་པར་ དང་ །
ལྡན་པ་ རྒྱ་ཆེར་ འབའ་ཞིག་ འདོད །
རོལ་པའི་ཆུ་སྐྱེས་ རྩེ་དགའི་མཚོ །
གསེར་གྱི་རྒྱན་ ལ་སོགས་པ་ བཞིན ༎ ༧༩

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।
पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकम्परायणम् ॥८०॥

བརྗོད་པ ཚིག་ སྡུད་ མང་པོ ཉིད །
འདི་ནི ལྷུག་པ དག་གི་ གསོས །
ཚིགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ལྷོ་ཕྱོགས་པ །
མིན་པ་ འདི་ཉིད་ གཅིག་པུ་ བཞེད ॥ ༨༠

तद्गुरूणां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।
उच्चावचप्रकारं सद्दृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

དེ་ལ ལྕི་ དང་ ཡང་བ་ རྣམས །
མང་ དང་ ཉུང་བ་ཉིད་ སྤེལ་བ །
མཐོ་དམན་གྱི་ ནི་ རྣམ་པ་ དེ །
བརྗོད་པ་ལ་སོགས་རྣམས་ལ་མཐོང ॥ ༨༡

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।
पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

ནུབ ཀྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡི །
མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ སྟན་ཅན །
མཁྲིགས་པའི་ནུ་མ་ ལ་ གནས་པའི །
གོས དམར མཛེས བཞིན་ ཆུ་ལྷན་མ ॥ ༨༢

इति पद्येपि पौरस्त्या बध्नन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
अन्ये त्वनाकुल हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ।।८३।।

ཅེས པ་ བརྗོད་དང་ལྡན་པའི་ཚིག །
ཚིགས བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་པ་ སྦྱོར །
གཞན དག་ འཁྲུགས མིན མཛེས པ ཡི །
ཚིག་རྣམས་ བརྗོད་པར་ འདོད དེ དཔེར ॥ ༨༣

पयोधरतटोत्संगलग्नसन्ध्यातपांशुका ।
कस्य कामातुरं चेतो वारुणी न करिष्यति ।।८४।।

ཆུ་འཛིན ངོས་ཀྱི་ ཕང ན་ གནས །
མཚམས ཀྱི་ཉི འོད་ གོས དང ལྡན །

ཆུ་ལྷན་མ་ཡིས་ སྲུ་ཡི་ཡིད །

འདོད་པས་གཟིར་བར་བྱེད་མི་འགྱུར ༎ ༨༤

कान्त सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཛེས་པ་ འཛིག་རྟེན་ དོན་དག་ ལས །

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཛེས་པའོ །

དེ་ཡང་ གཏམ་གྱི་མངོན་བརྗོད་ དང་ །

བསྔགས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལའང་ *སྣུར ༎ ༨༥

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवादृशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनैः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀའ་ཐུབ་ཕང་པོ་ ཁྲིད་འདྲ་ཡི །

ཞབས་ཀྱི་རྡུལ་ ནི་ གཙང་མ་ དག །

ཡང་དག་ བདབ་པ་ གང་ ཡིན་པ །

དེ་དག་ ཁོ་ན་ ངེས་པར་ ཁྱིམ ༎ ༨༦

अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोर्जृम्भमाणयोः ।
अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

སྐྱོན་མེད་ལུས་ཅན་ཁྱོད་ཀྱི་ནི། །
ལག་པའི་འཁྲི་ཤིང་བར་དག་ཏུ། །
ནུ་མ་རབ་རྒྱས་འདི་དག་གིས། །
གོ་སྐབས་རྙེད་པར་འགྱུར་མ་ཡིན། ། ༨༧

इति [8a]संभाव्यमेवैतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।
कान्त भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८८॥

ཞེས་པ་ཁྱད་པར་བརྗོད་པ་ཡིས། །
ལེགས་སྦྱར་དེ་དག་སྲིད་པ་ཉིད། །
འཇིག་རྟེན་ལུགས་ཀྱི་རྗེས་སུ་ནི། །
འཇུག་པ་ཐམས་ཅད་མཛེས་པར་འགྱུར། ། ༨༨

लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।
योर्थस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥८९॥

འཇིག་རྟེན་ འདས་ བཞིན་ བརྗོད་ འདོད་ ཀྱིས །
དོན་གང་ ཤིན་ཏུ་ བཀོད་ གྱུར་པ །
དེ་ཡིས་ མཁས་པ་ ཤིན་ཏུ་ ནི །
ཆོས་འགྱུར་ ཅིག་ཤོས་ མ་ཡིན་ དཔེར ॥ ༨༩

देवधिष्ण्ययमिवाराध्यमद्यप्रभृति नो गृहम् ।
युष्मत्पादरजःपातधौतनिःशेषकिल्विषम् ॥९०॥

དེང་ནས་བཟུང་སྟེ་ བདག་གི་ཁྱིམ །
ལྷ་ཡི་ཁྱིམ་ བཞིན་ བརྟེན་པར་ འོས །
ཁྱོད་ཀྱི་ ཞབས་རྡུལ་ ལྷུང་བ་ ཡིས །
ཉེས་པ་ དག་ནི་ མ་ལུས་ བཀྲུས ॥ ༩༠

अल्पन्निर्मितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।
इदमेवंविधम्भावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥९१॥

ཁྱོད་ཀྱི་ ནུ་མ་ འདི་ལྟ་བུར །
རྣམ་པར་རྒྱས་པར་འགྱུར་བ་འདི །
ངེས་པར་མ་བརྟགས་ བྱེད་པོ་ ཡིས །
ནམ་མཁའ་ དག་ནི་ ཆུང་ངུར་ སྤྲུལ ॥ ༩༡

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्गौडोपलालित ।
प्रस्थानं प्राक् प्रणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ।।९२।।

འདི་ནི་ཧ་ཅང་བརྗོད་པ་འདི། །
གོ་ཊ་བ་ལ་མཛེས་པར་བརྗོད། །
འཇུག་པ་སྔ་མ་གཞན་གྱི་ནི། །
ལམ་ལ་སྙིང་པོ་ཉིད་དུ་བཤད། ། ༩༢

अन्यधर्मस्ततोन्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।
सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ।।९३।।

གཞན་གྱི་ཆོས་དེ་གཞན་དག་ལ། །
འཇིག་རྟེན་ལུགས་ཀྱི་རྗེས་འབྲངས་ནས། །
ཏིང་ངེ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་དེ། །
ཏིང་ངེ་འཛིན་དུ་བརྗོད་དེ་དཔེར། ། ༩༣

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।
इति नेत्रक्रियाध्यासाल्लब्धा [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ।।९४।।

ཀུ་མུ་ད་ ནི་ མིག་འཛུམ་ ཞིང་ །
པདྨ་དག་ ཀྱང་ མིག་འབྱེད་ ཅེས །
མིག་གི་བྱ་བ་ བཀོད་པ་ ལས །
དེ་ཡི་ བརྗོད་བྱེད་ སྒྲ་དག་ ཐོབ ॥ ༩༤

निष्ठूतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रय ।
अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥९५॥

ནིཥྛྱཱུ་ཏ་ དང་ ཨུདྒཱིརྞ །
སྐྱུགས་ སོགས་ བཏགས་པའི་ འཇུག་ བརྟེན་པ །
ཤིན་ཏུ་ མཛེས་ཏེ་ གཞན་དུ་ ནི །
གྲོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ ནུས་པ་ བརྟེན ॥ ༩༥

पद्मान्यर्कांशुनिष्ठूताः पीत्वा पावकविप्रुषः ।
भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीर्णारुणरेणुभिः ॥९६॥

པདྨ་ཉི་ཟེར་ སྐྱུགས་པ་ རྣམས །
འཐུངས་ནས་ རྡུལ་ དམར་ སྐྱུགས་པ་ཡི །

ཁ་ཡིས་དག་ བྱེད་ ཟེར་མ་ དག །
ཤིན་ཏུ་ སྐྱུགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན ॥ ༩༦

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठीवति बधूरिति ।
युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥९७॥

ཅེས་པ་ མཛེས་དེ་ མི་མཛེས་པ །
ཆུང་མ་ སྐྱུགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ །
ཅིག་ཅར་ ཉིད་དུ་ ཆོས་ དུ་མ །
བཀོད་པ་ དག་ ཀྱང་ འདོད་དེ་ དཔེར ॥ ༩༧

गुरुगर्भभराक्रान्ताः स्तनन्त्यो मेघपङ्क्तयः ।
अचलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिशेरते ॥९८॥

ལྷུ་བའི་མང་ལ་ ཁུར་གྱིས་ངལ་ཞིང་ །
འཁུན་པར་བྱེད་པ་ སྤྲིན་གྱི་ཕྲེང །
འདི་དག་ གཡོ་མེད་ སྟིང་གི་ ནི །
ཕང་བ་དག་ཏུ་ ཡང་དག་ཉལ ॥ ༩༨

उत्संगशयनं सख्याः स्तननं गौरवक्लमः ।
इतीह गर्भिणीधर्मा बहवोन्यत्र दर्शिताः ॥९९॥

གྲོགས་མོའི་ ཕང་པར་ ཉལ་བ་ དང་ །
འཁུན་ དང་ ལྕི་བ་ཉིད་ དང་ ངལ །
ཅེས་པ་ འདིར་ ནི་ མངལ་ལྡན་མའི །
ཆོས་དེ་ མང་པོ་ གཞན་དུ་ བསྟན ॥ ༩༩

तदेतत्काव्यसर्वस्वं समाधिर्नाम यो गुणः ।
कविसार्थः समग्रोपि तमेनमनुगच्छति ॥१००॥

ཏིང་འཛིན་ ཞེས་པའི་ ཡོན་ཏན་ གང །
འདི་ནི་ སྙན་ངག་ བདོག་ ཀུན་ཏེ །
སྙན་ངག་ མཁན་པོ་ དོན་མཐུན་གྱི །
ཚོགས་ ཀུང་ འདི་ཡི་ རྗེས་སུ་འབྲངས ॥ ༡༠༠

इति मार्गद्वयं भिन्नं तत्स्वरूपनिरूपणात् ।
तद्भेदास्तु न शक्यन्ते वक्तुम्प्र[9a]तिकवि स्थिताः ॥१०१॥

དེ་ལྟར་ རང་བཞིན་ བརྟགས་པ་ ལས །
ལམ་ན་ དེ་གཉིས་ རྣམ་པར་བྱེ །

དེ་དག་ དབྱེ་བ་ སྙན་ངག་མཁན། །
སོ་སོ་ལ་ གནས་ བརྗོད་ མི་ནུས ༎ ༡༠༡

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरम्महत् ।
तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

བུར་ཤིང་འོ་མ་ བུར་སོགས་ ཀྱི། །
མངར་བ་ཉིད་ ནི་ ཁྱད་པར་ཆེ། །
དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་ དེ་བརྗོད་པར། །
དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ ནུས་མ་ཡིན ༎ ༡༠༢

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।
अमन्दश्चाभियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ གྱིས་ གྲུབ་ སྤོབས་པ་ དང་། །
མང་དུ་ཐོས་པ་ དྲི་མེད་ དང་། །
མངོན་པར་ སྦྱོར་བ་མི་དམན་པ། །
སྙན་ངག་ ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་རྒྱུ ༎ ༡༠༣

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतं ।
श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्करोत्येव कमप्यनुग्रहं ॥१०४॥

གལ་ཏེ་ སྔོན་གྱི་ བག་ཆགས་ ཡོན་ཏན་ གྱིས །
རྗེས་འབྲེལ་ སྤོབས་པ་ རྨད་བྱུང་ མེད་པ་ ལའང་ །
ཐོས་ དང་ འབད་པ་ དག་གིས་ ངག་ བརྟེན་ ན །
རྗེ་ཞིག་ ལྷུར་ ཡང་ ངེས་པར་ རྗེས་འཛིན་ བྱེད ༎ ༡༠༤

तदस्ततन्द्रैरनिशं सरस्वती श्रमादुपास्या खलु कीर्त्तिमीप्सुभिः ।
कृशे कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥१०५॥

དེ་ཕྱིར་ གྲགས་འདོད་རྣམས་ ཀྱིས་ རྟག་ཏུ་ ནི །
སྙོམས་ལས་ མེད་པར་ རིམ་པས་ དབྱངས་ཅན་ བརྟེན །
སྙན་ངག་ ཆུང་ངུ་ལ་ ཡང་ ངལ་བྱས་ མི །
མཁས་པའི་འདུན་ས་དག་ཏུ་ འདུག་ལ་ དབང་ ༎ ༡༠༥

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ བྱས་པའི་ སྙན་ངག་མེ་ལོང་ ལས་ ལམ་ རྣམ་པར་ ཕྱེ་བའི་ རྣམ་པར་བཅད་པ་ སྟེ་ དང་པོའོ ༎

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।
ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कार्त्स्न्येन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

སྙན ངག མཛེས པར བྱེད པ ཡི །
ཆོས རྣམས རྒྱན ཞེས རབ་ཏུ་ བརྗོད །
དེ ནི ད ལྟའང རྣམ་རྟོག སྟེ །
དེ དག མ ལུས སུས་ འཆད་ ནུས ॥ ༡

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।
तदेव प्रतिसंस्कर्त्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

འོན ཀྱང རྣམ རྟོག་ ས བོན་ ནི །
སྔོན གྱི་སློབ དཔོན རྣམས་ཀྱིས བསྟན །
དེ ཉིད རབ་ཏུ ལེགས སྦྱར ཕྱིར །
ཡོངས་སུ་ངལ འདི བདག་གི་འོ ॥ ༢

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रिया ।
साधारणमलंकारजातमद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

ལམ་ ནི་ རྣམ་པར་དབྱེ་དོན་དུ། །
ཀུན་ འགའ་ཞིག་ནི་ སྔར་ ཡང་ བསྟན། །
ཐུན་མོང་དག་ཏུ་ ཀུན་ གྱི་ ནི། །
ཚོགས་ འདི་ རབ་ཏུ་ བསྟན་པར་བྱ ༎ ༣

स्वभावाख्यानमुपमा रूपक दीपकावृती ।
आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥४॥

རང་བཞིན་ བརྗོད་ དང་ དཔེ་ དང་ ནི། །
གཟུགས་ཅན་ གསལ་བྱེད་ བསྐོར་བ་ དང་། །
འགོག་ དང་ དོན་གཞན་བཀོད་པ་ དང་། །
ལྡོག་པ་ཅན་ དང་ སྒྲིད་པ་ཅན ༎ ༤

समासातिशयोत्प्रेक्षा हेतु सूक्ष्मो लव क्रम ।
प्रेयो रसवदूर्ज्जस्वि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

བསྡུས་ དང་ ཕུལ་བྱུང་ རབ་བརྟགས་ དང་། །
རྒྱུ་ དང་ ཕྲ་མོ་ ཆ་ དང་ རིམ། །

དགའ་ དང་ ཉམས་ལྡན་ གཟི་བརྗིད་ ཅན། །
རྣམ་གྲངས་ བརྗོད་ དང་ ཀུན་དུ་ ཕན། ॥ ༥

उदात्तापह्नुतिश्लिष्टविशेषास्तुल्ययोगिता ।
विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

རྒྱ་ཆེ་ བསྙོན་དོར་ སྦྱར་བ་ དང་ །
ཁྱད་པར་ མཚུངས་པར་ སྦྱོར་བ་ དང་ །
འགལ་ དང་ སྐབས་མིན་ བསྟོད་པ་ དང་ །
ཟོལ་བསྟོད་ ངེས་པར་ བསྟན་པ་ དང་ ॥ ༦

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः ससृष्टिरथ भाविकं ।
इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

ལྷན་ཅིག་ བརྗོད་ དང་ ཡོངས་བརྗེས་ ཤིས། །
རབ་སྦྲེལ་ དེ་ནས་ དགོངས་པ་ཅན། །
འདི་དག་ ཚིག་རྣམས་དག་གི་ ནི ། །
རྒྱན་དུ་ སྔོན་གྱི་མཁས་པས་ བསྟན ॥ ༧

नानावस्थ पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती ।
[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृतिर्यथा ॥८॥

དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ དང་ །
གནས་སྐབས་ སྣ་ཚོགས་ དངོས་གསལ་བྱེད །
དེ་ ནི་ རང་བཞིན་བརྗོད་པ་ དང་ །
རིགས་ ཞེས་ དང་པོའི་རྒྱན་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༨

तुण्डैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।
त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

མཆུ་ ནི་ དམར་ ཞིང་ གུག་པ་ དང །
གཤོག་པ་ ལྗང་ ཞིང་ མཉེན་པ་ དང །
མགྲིན་པ་ ཁ་དོག་ གསུམ་འཕྲེང་ཅན །
ནེ་ཙོ་ འདི་དག་ ཚིག་འཇམ་ལྡན ॥ ༩

कलक्वणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षण ।
पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुश्चुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

མགྲིན་པའི་ནང་ནས་ སྐྱར་སྒྲོགས་ ཀྱིང་།
མིག་ ནི ཀུན་དུ་ འཁྲུལ་པ་ ཡི།
ཕུག་རོན་ རྩེ་འདོད་ དགའ་མ་ལ།
ཡོངས་སུ་བསྐོར་ནས་ མཆུ་དག་སྦྱོར ༎ ༡༠

वध्नन्नङ्गेषु रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृति ।
नेत्रे चामीलयन्नेष प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

དགའ་མ་ཡི་ ནི་ རེག་པ་ འདི།
ལུས་ལ་ སྤུ་ལོང་ ཀྲུས་པ་དང་།
ཡིད་ ནི་ བདེ་བར་བྱེད་པ་ དང །
མིག་དག་ ཟུམ་པར་བྱེད་ ཅིང་ འཇུག ༎ ༡༡

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।
जटाभिः स्निग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

མགྲིན་སྔོན་ ལག་ན་ཐོད་པ་ནི།
གསལ་བ་ ཟླ་བའི་ ཅོད་པན་དང་།

ཟླུམ་ཞིང་དམར་བའི་རལ་པ་ཅན།
ཁྱུ་མཆོག་རྒྱལ་མཚན་གསལ་བར་གྱུར། ༡༢

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं काव्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

རིགས་དང་བྱ་བ་ཡོན་ཏན་རྫས།
རང་བཞིན་བརྗོད་པ་འདི་འདྲ་འདི།
བསྟན་བཅོས་རྣམས་ལ་རྒྱལ་སྲིད་ཉིད།
སྙན་ངག་རྣམས་ལ་རྒྱལ་སྲིད་ཉིད། ༡༣

यथा कथंचित्सादृश्य यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोयं ।प्रदर्श्यते ॥१४॥

ཇི་ལྟར་ཅི་ཞིག་ལྟར་མཚུངས་པར།
གསལ་བ་གང་དུ་རྟོགས་བྱེད་པ།
དེ་ནི་དཔེ་ཞེས་བྱ་སྟེ་དེའི།
སྤྲོས་པ་འདི་ནི་རབ་བཤད་བྱ། ༡༤

अम्भोरुहमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।
इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

མཛེས་མ་ཁྱོད་ཀྱི་ལག་མཐིལ་ནི། །
ཆུ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ཉུང་ཟད་དམར། །
ཞེས་པ་ཆོས་དཔེ་དངོས་སུ་ནི། །
མཚུངས་པའི་ཆོས་དག་བསྟན་ཕྱིར་རོ། ། ༡༥

राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव ।
इति प्रतीयमानैकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་ པདྨ་ ནི་ བཞིན། །
མིག་དག་ཨུཏྤལ་སྔོན་པོ་བཞིན། །
ཞེས་པ་ཆོས་གཅིག་རྟོགས་བྱེད་པ། །
དེ་ནི་དངོས་པོའི་དཔེ་ཉིད་དོ། ། ༡༦

त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्दमभूदिति ।
सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्विपर्यासोपमेष्यते ॥१७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ བཞིན་ པདྨ་ ནི །
རྣམ་པར་རྒྱས་པར་གྱུར་ ཅེས་པ །
དེ་ ནི་ གྲགས་པ་ བཟློག་པའི་ ཕྱིར །
བཟློག་པའི་དཔེ་ ཞེས་བྱ་བར་ འདོད ॥ ༡༧

नवाननमिवाम्भोजमम्भोजमिव ते मुखं ।
इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ བཞིན་ ཆུ་སྐྱེས་ ཏེ །
ཆུ་སྐྱེས་ བཞིན་དུ ཁྱོད་ཀྱི་ ཞལ །
ཞེས་པ་ ཕན་ཚུན་ ཁྱད་འཕགས་ ནི །
བརྗོད་པར་བྱེད་ འདི་ ཕན་ཚུན་དཔེ ॥ ༡༨

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित ।
इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

ཁྱོད་ཞལ་ པདྨ་ ཉིད་དང་ མཚུངས །
གཞན་ནི་ འགའ་ཞིག་ དང་ཡང་ མིན །

ཞེས་པ་ མཚུངས་པ་ གཞན་ བཟློག་ ཕྱིར །
འདི་ ནི་ ངེས་པ་ཉིད་ཀྱི་དཔེ །། ༡༨

पद्मन्तावत्तवान्वेति मुखमन्यच्च नादृशं ।
अस्ति चेदस्तु तत्कारीत्यसावनियमोपमा ॥२०॥

རེ་ཞིག་ ཁྱོད་ གདོང་ པདྨ་ཡི །
རྗེས་ འགྲོ་ གཞན་ཡང་ དེ་འདྲ་བ །
གལ་ཏེ་ ཡོད་ན་ དེ་ བྱེད་འགྱུར །
ཞེས་པ་ འདི་ནི་ ངེས་མེད་དཔེ །། ༡༩

समुच्चयोपमाप्यस्ति न कान्त्यैव मुखन्तव ।
ह्लादनाख्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमिनीदृशी ॥२१॥

ཁྱོད་ གདོང་ མཛེས་པ་ ཁོ་ན་ཡིས །
ཟླ་བའི་ རྗེས་སུ་ འགྲོ་མིན་ ཏེ །
དགའ་སྐྱེད་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ ཞེས་ཟ །
འདི་འདྲ་ བསྡུས་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད །། ༢༠

त्वय्येव त्वन्मुखं दृष्ट दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इयत्येव भिदा[11a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

ཁྱོད་ཀྱི་ཞལ་ ནི་ ཁྱོད་ཉིད་ལ །
མཐོང་གི་ ཟླ་བ་ མཁའ་ལ་ མཐོང་ །
འདི་ཉིད་ ཁྱོན་ ཐ་དད་ དེ །
གཞན་མེད་ ཅེས་ འདི་ ཁྱད་པར་དཔེ ॥ ༢༢

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्दोर्विकत्थनैः ।
पद्मेपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

དེ་ཡི་ བཞིན་དཔལ་ ང་ཉིད་ལ་ །
ཡོད་ ཅེས་ ཟླ་བ་ སྙེམས་ མི་དགོས །
པདྨ་ལ་ ཡང་ དེ་ ཡོད་ ཕྱིར །
ཞེས་པ་ འདི་ ནི་ རབ་བརྟགས་དཔེ ॥ ༢༣

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्मं सुभ्रु विभ्रान्तलोचनं ।
तत्ते मुखश्रियन्धत्तामित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

གལ་ཏེ་ པདྨ་ འགའ་ཞིག་ ལ །

སྨིན་ལེགས་ རྣམ་འཕྲུལ་ སེག་ལྡར་ ར །

ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དཔལ་ འཛིན་ དེ །

ཞེས་པ་ འདི་ ནི་ སྨད་བྱུང་དཔེ ॥ ༢༤

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वङ्गि त्वन्मुखं त्वन्मुखाशया ।

इन्दुमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

ལུས་ཕྲ་ ཁྱོད་ གདོང་ རི་བོང་ཅན །

ཞེས་ བརྟགས་ ཁྱོད་ གདོང་ བསམས་པ་ ཡིས །

ཟླ་བ་ཡི་ ཡང་ རྗེས་སུ་བསྙེགས །

ཞེས་ འདི་ རྨོངས་པའི་དཔེ་རུ་ བཤད ॥ ༢༥

किम्पद्ममन्तर्भ्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुखं ।

मम दोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ॥२६॥

པད་ནང་ བུང་བ་ འཁོར་རམ་ ཅི །

ཁྱོད་ གདོང་ ལ་ མིག་ གཡོ་ འམ་ ཅི །

བདག་གི་ སེམས་ ནི་ རྣམ་པར་ གཡོ།
ཞེས་པ་ འདི་ནི་ ཐེ་ཚོམ་དཔེ ॥ ༢༦

न पद्मस्येन्दुनिग्राह्यस्येन्दुलज्जाकरी द्युतिः।
अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

ཟླ་བ་ སྐྱེངས་བྱེད་ མཛེས་པ་ འདི།
ཟླ་བས་ ཚར་གཅོད་ པདྨ་ མིན།
དེ་ཕྱིར་ ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ ཉིད་དོ།
ཞེས་པ་ འདི་ ནི་ ངེས་པའི་དཔེ ॥ ༢༧

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्वि श्रीमत्सुरभिगन्धि च।
अम्भोजमिव ते वक्त्रमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱི་ དགྲ་ཟླ་དང་།
དཔལ་དང་ལྡན་ དང་ དྲི་བཟང་གིས།
ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་ ནི་ ཆུ་སྐྱེས་བཞིན།
ཞེས་པ་ སྦྱར་བའི་དཔེ་རུ་ བཤད ॥ ༢༨

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।
[11b]बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२९॥

མཚུངས་པའི་སྒྲ་ཡིས་ བརྗོད་བྱའི་ ཕྱིར །
མཉམ་ཉིད་དཔེ་ སྟེ་ ཇི་ལྟར་ ན །
སྐྱེད་ཚལ་ཕྲེང་ འདི་ བུ་མོ་ བཞིན །
མཛེས་ལྡན་ སཱ་ལ་ཀཱ་ན་ན ॥ ༢༨

पद्मं बहुरजश्चन्द्रः क्षयी ताभ्यां तवाननम् ।
समानमपि सोत्सेकमिति निन्दोपमा स्मृता ॥३०॥

པདྨ་ རྡུལ་ མང་ ཟླ་བ་ འཛད །
དེ་དག་ ལས་ ནི་ ཁྱོད་ཀྱི་བཞིན །
མཚུངས་པ་ ལ་ ཡང་ ཁྱད་པར་བཅས །
ཞེས་པ་ སྨད་པའི་ དཔེ་རུ་ འདོད ॥ ༢༩

ब्रह्मणोऽप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः ।
तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमेष्यते ॥३१॥

པདྨས་ ཚངས་པ་དག་ཀྱང་སྐྱེད །
ཟླ་བ་ བདེ་འབྱུང་གཙུག་ན་ འཛིན །
དེ་དག་ ཁྱོད་གདོང་ མཚུངས་ ཞེས་པ །
དེ་ ནི་ བསྔགས་པའི་དཔེར་ བརྗོད་ དོ ॥ ༣༡

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मन ।
सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡོན་དན་ལྡན་ ནམ་ སྐྱོན་ འགྱུར་ ཡང །
ཁྱོད་གདོང་ ཟླ་བ་ མཚུངས་ ཞེས་པ །
བརྗོད་འདོད་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡོད །
ཅེས་པ་ བརྗོད་འདོད་དཔེ་ ཞེས་ རིག ॥ ༣༢

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བརྒྱ་པ་ དང་ སྟོན་ཟླ་ དང་ །
ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ གསུམ་པོ་ ནི །

ཕན་ཚུན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་བྱ །
དེ་ནི་ འགལ་བའི་དཔེར་ བརྗོད་དོ ॥ ༢༦

न जातु शक्तिरिन्दोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम ।
कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

དྲི་མ་ལྡན་ ཞིང་ བླུན་གྱུར་པ །
ཟླ་བ་ལ་ ནི་ ཁྱོད་ གདོང་ དང་ །
འགྲན་པའི་ ནུས་པ་ ནམ་ཡང་ མེད །
ཅེས་པ་ དགག་པའི་དཔེ་ ཉིད་དོ ॥ ༢༧

मृगेक्षणाङ्कन्त्वद्वक्त्रम्मृगेणैवांकितः शशी ।
तथापि सम एवासौ नोत्कर्षीति चटूपमा ॥३५॥

ཁྱོད་ གདོང་ རི་དྭགས་མིག་གིས་མཚན །
ཟླ་བ་ རི་དྭགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན །
དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ མཚུངས་ཉིད །
ཁྱད་འཕགས་ མིན་ ཞེས་ མཛེས་པའི་དཔེ ॥ ༢༨

न पद्मं मुखमेवेदं न भृङ्गौ चक्षुषी[12a] इमे ।
इति विस्पष्टसादृश्यात्तत्त्वाख्यानोपमैव सा ॥३६॥

འདི་ནི་ བཞིན་ ཉིད་ པདྨ་ མིན། །
འདི་དག་ བུང་བ་ མ་ཡིན་ མིག །
ཞེས་པ་ རྣམ་གསལ་ མཚུངས་པ་ ལས། །
དེ་ནི་ དེ་ཉིད་བརྗོད་པའི་དཔེ། ། ༣༦

चन्द्रारविन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य मुखन्तव ।
आत्मनैवाभवत्तुल्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

ཟླ་བ་ པདྨ་ དག་གི་ ནི། །
མཛེས་པ་ ལས་ འདས་ ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་། །
བདག་རང་ཉིད་ དང་ མཚུངས་པར་གྱུར། །
ཞེས་པ་ ཐུན་མོང་མིན་པའི་དཔེ། ། ༣༧

सर्वपद्मप्रभासारः समाहृत इव क्वचित् ।
त्वदाननं विभातीति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

པདྨ་ མཛེས་པའི་ སྙིང་པོ་ ཀུན།
འགའ་ཞིག་ དག་ཏུ་ བསྡུས་པ་ བཞིན།
ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ ནི་ རྣམ་མཛེས་ ཞེས།
དེ་ནི་ བྱུང་མིན་དཔེ་ ཞེས་ རིག ॥ ༣༨

इन्दुबिम्बादिव विषं चन्दनादिव पावकः ।
परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३९॥

ཟླ་བའི་གཟུགས་ ལས་ དུག་ བཞིན་ དང་།
ཙནྡན་ ལས་ ནི་ མེ་བཞིན་དུ།
ཞལ་ འདི་ ལས་ ནི་ རྩུབ་མོའི་ ཚིག།
ཅེས་པ་ སྲིད་པ་མིན་པའི་ དཔེ ॥

चन्दनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
स्पर्शस्तवेत्यतिशयं प्रथयन्ती बहूपमा ॥४०॥

ཙནྡན་ཆུ་ དང་ ཟླ་འོད་ དང་།
ཟླ་ཤེལ་ སོགས་ བཞིན་ ཁྱོད་ཀྱི་ ནི།

ཟིག་པ་ བསིལ་ ཞེས་ ཁྱེད་པར་ དག །
གསལ་བར་བྱེད་པ་ མང་བའི་དཔེ ॥ ༤༠

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।
तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལུས་ཕྲ་ ཁྱོད་ གདོང་ བཞིན་རས་ ནི
ཟླ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ལས་ བརྡོན་ བཞིན །
པདྨའི་ ནང་ནས་ ཕྱུང་བ་ བཞིན །
ཞེས་པ་ འདི་ ནི་ རྣམ་འགྱུར་དཔེ ॥ ༤༡

पुष्ण्यातप इवाह्नीव पूषा व्योम्नीव वासरः ।
विक्रमस्त्वय्यधाल्लक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་ཀྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་མ་ ཡིས །
ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན །
རྣམ་པར་གནོན་པས་ ཁྱོད་ལ་ དཔལ །
འཛིན་ ཞེས་ དེ་ནི་ ཕྲེང་བའི་དཔེ ॥ ༤༢

वाक्यार्थेनैव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।
एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

གང ཡང་ ངག་དོན་ ཉིད་ཀྱིས་ ནི །
གལ ཏེ ངག་དོན་ ཉེར་འཇལ་ ན །
ངག་དོན་དཔེ སྦྱོ་ བཞིན་སྒྲ ནི །
གཅིག་ དང་ དུ་མས་ དེ་རྣམ་གཉིས ॥ ༤༣

त्वदाननमधीराक्षमाविर्दशनदीधिति ।
भ्रमद्भृङ्गमिवालक्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

ཁྱོད་ གདོང མིག་ ནི་ མི་བརྟན ཞིང་ །
སོ་ཡི་འོད་ཟེར་ རབ་གསལ་བ །
འདམ་སྐྱེས་ བུང་བ་ གཡོ་ལྡན་ ནི །
གེ་སར་ དག་གིས་ མཚོན་བཞིན་ མཛེས ॥ ༤༤

नलिन्या इव तन्वङ्ग्यास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।
मया मधुव्रतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

པདྨ ཅན བཞིན་ ལུས སྲ་མ །
པདྨ་ བཞིན་དུ་ དེ་ཡི་ གདོང་ །
སྤྱང་ཀི་ སྤྱོད་པས་ བཞིན་དུ་ ནི །
བདག་གིས་ འཕྲུངས ཤིང་ འཕྲུངས་ཤིང་ཀྱེས ॥ ༨༤

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।
साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངོས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉེར་བཀོད་ནས །
དེ་ཡི་ཆོས་ མཐུན་ རབ་བཀོད་པ །
མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་པ་ཅན །
ཀླུ་བོ་ དངོས་པོའི་དཔེ་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༨༥

नैकोपि त्वादृशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।
ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

རྒྱལ་པོ་རྣམས་ ནི་ སྐྱེས་གྱུར་ ཀྱང་ །
ད་ལྟ་ ཁྱོད་ འདྲ་ གཅིག་ ཀྱང་ མེད །

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀང་འཕྲུང་ནི །
གཉིས་པ་ ངེས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན ॥ ༤༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।
यद्‌ब्रुवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ལྷག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི །
ཚོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྡུས་ནས །
ཡང་ སྨྲས་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག །
སྦྱོར་བའི་དཔེ་རུ་ བཤད་དེ་ དཔེར ॥ ༤༨

दिवो जागर्ति रक्षायै पुलोमारिर्भुवो भवान् ।
असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

སྤུ་ལོ་མའི་དགྲ་ མཐོ་རིས་ དང་ །
ཁྱོད་ནི་ ས་སྐྱོང་ མེལ་ཚེ་བྱེད །
དེ་ཡིས་ དྲེགས་ལྡན་ ལྷ་མིན་ དང་ །
ཁྱོད་ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཇོམས ॥ ༤༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a]धाम्ना सूर्यन्धैर्येण चार्णवम् ।
राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

རྒྱལ་པོ་ མཛེས་པས་ཟླ་བ་ དང་ །
གཟི་བྱིན་གྱིས་ ནི་ ཉི་མ་ དང་ །
བརྟན་པས་ རྒྱ་མཚོའི་ རྗེས་སུ་བྱེད །
ཅེས་པ་ འདི་ ནི་ རྒྱུ་དཔེར་ དྲན ॥ ༥༠

न लिङ्गवचने भिन्ने न हीनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमतां ॥५१॥

བློ་ལྡན་ མི་དགྱེས་མེད་ གང་ལ །
ངེས་པར་ དཔེ་ཡི་སྐྱོན་ དག་ ནི །
ཐ་དད་ རྟགས་ དང་ ཚིག་ལ་མེད །
དམན་ དང་ ལྷག་པ་ ཉིད་ ཡའང་མེད ॥ ༥༡

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्त्येषा स्त्री पुमानिव ।
प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या धनमिवार्जिता ॥५२॥

མ་ཉིང་ འདི་འགྲོ་ བུད་མེད་ བཞིན། །
བུད་མེད་ འདི་ སྨྲ་ སྐྱེས་པ་ བཞིན། །
བདག་གི་ གྲོགས་ འདི་ སྒྲོག་རྣམས་ བཞིན། །
རིག་པ་ རྣམས་ བསྒྲུབས་ ནོར་བཞིན་ནོ། ། ༥༢

भवानिव महीपाल देवराजो विराजते ।
अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གཞི་སྐྱོང་བ་ ཁྱོད་ བཞིན་དུ། །
ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་ རྣམ་པར་མཛེས། །
ཚ་ཟེར་ཅན་གྱི་ ནུས་པ་ལ། །
མི་བདག་གཟི་ཡིས་ འགོང་བར་ནུས། ། ༥༣

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
अस्ति च क्वचिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

ཞེས་པ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སོགས། །
སྐལ་བཟང་ ནམ་ཡང་ གཏོང་མིན་ཉིད། །

སྦྱོར་བ་ འགའ་ ལ་ ངག་རིག་ རྣམས།
མི་དགྲེས་པ་ ཡོད་ ཇི་ལྟར་ན ༎ ༤༣

हसीव धवलश्चन्द्रः सरासीवामल नभः ।
भर्तृभक्तो भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ।।५५।।

ངང་མོ་ བཞིན་དུ་ ཟླ་བ་ དཀར།
མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་དུ་ མཁའ་དྲི་མེད།
ཁྱི་ བཞིན་ དཔའ་བོ་ རྗེ་ལ་ གུས།
ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ མེ་ཁྱེར་ གསལ ༎ ༤༤

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारण त्वत्र चिन्त्यताम् ।
इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ।।५६।।

འདི་འདྲ་ སྤངས་ཏེ་ མཁས་རྣམས་ ཀྱིས།
རྒྱུ་ ཡང་ འདིར་ ནི་ བསམ་པར་བྱོས།
བཞིན་ལྟར་ལྟ་བུ་ཇི་ལྟར་སྒྲ།
མཐུན་ མཚུངས་ཡང་དག་ མཚུངས་ དང་ མཉམ ༎ ༤༥

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।
प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्विप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང དག གསལ་དང ངེས པར་གསལ །
རབ་གསལ་གཟུགས ཀྱི་ཟླ་བོ་དང་ །
གཉེན པོ དང ནི་དགྲ ཟླ དང །
སོ སོར རྟོག དང འགལ དང་འདྲ ॥ ༥༧

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।
प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བསྡུ བཅས དང་ནི བསྒྲུ་བ དང །
རིགས མཐུན རྗེས སུ་སྒྲ་བ དང་ །
གཟུགས་བརྙན་དང་ནི སོ སོར སྙེབ །
གཟུགས་མཚུངས མཉམ་དང་ཡང དག་འཇལ ॥

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमा ।
कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད མཐུན་འདྲ་མཚུངས པ་དང་ །
མཐུན་ཕྱོགས དཔེར་བྱས་དཔེ དང་རྟོག །
དམན་དང་ཅུང་ཟད་དམན་སོགས་དང་ །
རབ་ཏུ སྨྲ་དང སོ སོར་བཟློག ॥ ༥༩

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिन. ।
समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥

རིགས་མཐུན མཉམ་བྱས་ སྨྲ་དག་ དང་ །
གང་ཡང་ དམན་མིན་ དོན ཅན ཚིག །
འདྲ་མང་པོ ཡི་ཚིག་སྡུད དང་ །
རི་བོང་མཚན་མའི་གདོང་ཅན་ སོགས ॥ ༦༠

स्पर्धते जयति द्वेष्टि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१।[

འགྲན་ དང་ རྒྱལ་ དང་ སྡང་བ་ དང་ །
འཁུ་ དང་ མི་མཐུན་ སྒྲོགས་པ་ དང་ །

འཐབ་པ་ དང་ ནི་ འཕྲུ་བ་ དང་ །
སྨ་འབེབས་བྱེད་ དང་ སྨོད་པ་ དང ॥ ༦༡

विडम्बयति सरुन्धे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।
तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ཙོ་འདྲི་བ་ དང་ འགོག་པ་ དང་ །
ཀོད་ དང་ ཕྲག་དོག་ མི་བཟོད་ དང་ །
དེ་ཡི་ སྐལ་བཟང་ འཕྲོག་བྱེད་ དང་ །
དེ་ཡི་ མཛེས་པ་ ཧྲུམ་བྱེད་ དང་ ॥ ༦༢

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना]14a]धिरोहति ।
तत्पदव्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

དེ་ དང་ འགྲན་ ལས་ ཚར་གཅོད་ དང་ །
དེ་ དང་ མཚུངས་ ལས་ ལྷག་པར་འཛེགས་ །
དེ་ཡི་ རྗེས་སུ་ རྐང་འཛོག་ དང་ །
དེ་ཡི་ནུས་པ་ ལ་ འཛོག་ དང་ ॥ ༦༣

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।
तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिन ॥६४॥

དེ་ཡི་རྗེས་འགྲོ་ རྗེས་སུ་འཆིང་ །
དེ་ཡི་ངང་ཚུལ་ དེ་འགོག་ དང་ །
དེ་ཡི་རྗེས་སུ་བྱེད་ ཅེས་པའི །
སྒྲ་ རྣམས་ མཚུངས་པ་ གསལ་བྱེད་ཡིན ॥ ༡༨

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।
यथा बाहुलता पाणिपद्मञ्चरणपल्लवम् ॥६५॥

ཐ་དད་ སྣང་མིན་གྱུར་པ་ཡི །
དཔེ་ཉིད་ དག་ ནི་ གཟུགས་ཅན་ འདོད །
དཔུང་པ་ འཁྲི་ཤིང་ལག་པ་ ནི །
པདྨ་རྐང་པ་ལལ་འདབ་པོ ॥ ༦༥

अगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखार्चिषः ।
बाहूलते वसन्तश्रीस्त्वन्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་པའི་འཁྲི་ཤིང་ སོར་མོ་ རྣམས །

ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་ འོད་ཟེར་ ནི །

མེ་ཏོག་ཏུ་གྱུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དཔལ །

ཁྱོད་ནི་ ངེད་ལ་ མངོན་སུམ་རྒྱུ ॥ ༦༦

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
स्मितम्मुखेन्दोर्ज्योत्स्नेति समस्तव्यस्तरूपक ॥६७॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བསྡུགས་ཏེ །

སྔ་མ་ བསྡུས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ །

བཞིན་ ཟླ་ འཛུམ་པའི་ཟླ་འོད་ཅེས །

གཟུགས་ཅན་ བསྡུས་ དང་ མ་བསྡུས་པའོ ॥ ༦༧

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्भवच्चरणपङ्कज ॥६८॥

སོར་མོ་དམར་བའི་ འདབ་ཕྲེང་དང་ །

སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན །

ཁྱོད ཀྱི་ ཞབས ཀྱི་ ཆུ སྐྱེས ནི །
ས སྐྱོང རྣམས་ཀྱི སྤྱི བོར་ འཛིན ॥ ༦༨

अगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्मताम् ।
तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६९॥

སོར མོ་ ལ སོགས འདབ སོགས་ དང །
ཀང པས པདྨ ཉིད་ བྱས ནས །
དེ འོས་ གནས སུ་ རྣམ བཀོད་པ །
འདི ནི་ མཐའ དག་ གཟུགས་ཅན་ཉིད । ༦༩

[14b] अकस्मादेव ते चण्डि स्फुरिताधरपल्लवम् ।
मुखं मुक्तारुचो धत्ते घर्माम्भःकणमञ्जरी ॥७०॥

གཏུམ མོ་ གློ་བུར་ ཉིད་དུ་ནི །
ཁྱོད་གདོང་ མཆུ ཡི་ཡལ འདབ་ གཡོ །
རྔུལ་གྱི་ཆུ་ཡི ཐིགས པ་ཡི །
ཏོག པ་ མུ ཏིག་ འོད་ཅན་ འཛིན ॥ ༧༠

मञ्जरीकृत्य घर्माम्बु पल्लवीकृत्य चाधरं ।
नान्यथा कृतमत्राङ्गमतोऽवयवरूपकं ।।७१।।

འདིར་ནི་རྔུལ་ཆུ་ཏོག་པར་བྱས།
མཆུ་ཡང་ཡལ་འདབ་ཉིད་བྱས་ཀྱི།
གདོང་ནི་རྣམ་པ་གཞན་མ་བྱས།
དེ་ཕྱིར་ཆ་ཤས་གཟུགས་ཅན་ནོ།། ༧༡

वल्लितभ्रु गलद्घर्मजलमालोहितेक्षणम् ।
विवृणोति मदावस्थामिद वदनपङ्कजम् ।।७२।।

གདོང་པའི་འདམ་སྐྱེས་སྨིན་འཁྱོག་ཅིང་།
རྔུལ་གྱི་ཆུ་ཟག་པ་དང་།
མིག་དག་ཀུན་དུ་དམར་བ་འདི།
མྱོས་པའི་གནས་སྐབས་གསལ་བར་བྱེད།། ༧༢

अविकृत्य मुखाङ्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।
आसीद्गमितमत्रेदमतोवयविरूपकम् ।।७३।।

འདིར་ནི་ གདོང་པའི་ཆ་ཤས་དག །
རྣམ་འགྱུར་ མ་བྱས་ གདོང་པ་ཉིད །
པདྨར་ བཀོད་བྱས་ དེས་ན་ འདི །
ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ༧༣

मद्पाटलगण्डेन रक्तनेत्रोत्पलेन ते ।
मुखेन मुग्धे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཛེས་མ་ མྱོས་པའི་ འཁུར་ཚོས་དམར །
མིག་གི་ ཨུཏྤལ་ དམར་པོ་ཅན །
ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ སྐྱེ་བོ་ནི །
འདི་ཡང་ དམར་བའི་ རང་བཞིན་ བྱས ॥ ༧༤

एकाङ्गरूपकञ्चैतदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ भिदाकरौ ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ གཉིས་ སོགས་ཀྱི །
ཡན་ལག་ རྣམས་ ཀྱང་ གསལ་བྱེད་པ །

འདི་ནི ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན །
ལྡན་དང་མི་ལྡན ཐ་དད་བྱེད ༎ ༧༥

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभृंगमिद् मुख ।
इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपक ॥७६॥

གདོང་ འདི འཛུམ་པའི་ མེ་ཏོག་འབར །
གཡོ་བའི མིག་གི་ བུང་བ་ཅན །
ཞེས་པ མེ་ཏོག བུང་བ དག །
འགྲོགས་པས་ལྡན་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ ༎ ༧༦

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं स्निग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।
इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तन्नाम रूपकम् ॥७७॥

གདོང་ འདི་ འཛུམ གཞེར་ ཟླ་འོད་དང །
སྣུམ་པའི མིག་གི་ ཨུཏྤལ་ཅན །
ཟླ་འོད ཨུཏྤལ་ མི་འོས་པས །
འོས་མིན་ཞེས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ༎ ༧༧

रूपणाद्ङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।
रूपक विषम नाम ललित जायते यथा ॥७८॥

ཡན་ལག་ཅན་གཟུགས ཡན་ལག་ རྣམས །
གཟུགས བྱས གཟུགས་སུ་མ་བྱས ལ །
བརྟེན པ མི་མཉམ་པ་ ཞེས པའི །
གཟུགས ཅན མཛེས་པ་ ཡིན དེ་ དཔེར ॥ ༧༨

मदरक्तकपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।
नर्तिते भ्रूलतेनाल मर्दितुम्भुवनत्रय ॥७६॥

མྱོས་པའི་ མཁུར ཚོས རབ དམར་ཞིང་ །
སྨིན་མའི འཁྲི་ཤིང་ གར བྱེད་པ །
ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བས་ ཡིད་སྐྱུབ ཀྱིས །
འཇིག་རྟེན་ གསུམ་པོ་ གཞོམ པར་ནུས ॥ ༧༩

हरिपादः शिरोलग्नजह्नुकन्याजलाशुकः ।
जयत्यसुरनि.शकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥

ཛ་ཧྣུའི་བུ་མོའི་ཆུ་གོས་ནི།
འཕྲོག་བྱེད་རྐང་པའི་རྩེར་ལྡན་པ།
ལྷ་མིན་དོག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི།
དགའ་སྟོན་རྒྱལ་མཚན་རྒྱལ་གྱུར་ཅིག ༎ ༨༠

विशेषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृश ।
पादे तदर्पणादेतत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥

གང་ཞིག་ཁྱད་པར་ཚོགས་པ་ཡི།
གཟུགས་ཀྱི་རྒྱལ་མཚན་འདི་འདྲ་བ།
དེ་ནི་རྐང་པ་ལ་བཀོད་དེ།
ཁྱད་པར་དང་བཅས་གཟུགས་ཅན་ནོ ༎ ༨༡

न मीलयति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।
त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव प [15b] श्यनि ॥८२॥

པདྨ་རྣམས་ནི་མི་ཟུམ་ཞིང་།
ནམ་མཁའ་ལ་ཡང་མི་འགྲོ་བ།

ཁྱོད་གདོང་ཟླ་བས་ བདག་གི་ནི །

སྒྲོག་རྣམས་ འཕྲོག་པ་ ཉིད་དུ་ བལྟ ॥ ༨༢

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।

अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धन्नाम रूपकं ॥८३॥

ཟླ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང །

གཞན་ གྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདིར །

ཡང་དག་ བསྟན་ དེ་ དེ་ ཡི་ ཕྱིར །

འགལ་བ་ ཞེས་བྱའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ༨༣

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।

कामदत्वाच्च लोकानामसि त्व कल्पपादपः ॥८४॥

ཁྱོད་ནི་ ཟབ་པས་ རྒྱ་མཚོ་དང །

བརླིང་བ་ ཉིད་ ཀྱིས་ རི་བོ་ ཡིན །

འཇིག་རྟེན་ རྣམས་ལ་ འདོད་པ་ནི །

སྟེར་ ཕྱིར་ དཔག་ བསམ་ཤིང་འཁྲུང་ངོ་ ॥ ༨༤

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।
कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिद हेतुरूपक ॥८५॥

འདིར་ནི་ ཟབ་པ་ལ་སོགས་པའི །
རྒྱུ་རྣམས་ དག་གིས་ རྒྱ་མཚོ་ རི །
དཔག་ བསམ་ཤིང་ ཡང་ བྱེད་པས་ན །
འདི་ནི་ རྒྱུ་ཡི་གཟུགས་ཅན་ནོ ། ༨༥

राजहसापभोगार्ह भ्रमरप्रार्थ्यसौरभ ।
सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति श्लिष्टरूपकं ॥८६॥

གྲོགས་མོ་ ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ པད་འདི །
རཱ་ཛ་ཧཾ་སས་ ཉེར་སྤྱད་འོས །
དྲི་ཞིམ་ བུང་བས་ དོན་ གཉེར་འོས །
ཞེས་པ་ སྦྱར་བའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ། ༨༦

इष्टं साधर्म्यवैधर्म्यदर्शनाद्गौणमुख्ययोः ।
उपमाव्यतिरेकाख्य रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

གཙོ་བོ་ དང་ནི་ ཕལ་པ་ལ།
ཆོས་མཐུན་ ཆོས་མི་མཐུན་ མཐོང་བས།
དཔེ་དང་ ལྡོག་པ་ཅན་ ཞེས་པའི།
གཟུགས་ཅན་ རྣམ་པ་གཉིས་ འདོད་དཔེར།། ༨༧

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमा ।
सन्नद्धोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

མྱོས་པས་ ཀུན་དུ་ དམར་བ་ ཡིས།
བཀབ་པ་ བཞིན་གྱི་ ཟླ་བ་ འདི།
འཆར་ཀའི་ དམར་བ་ ཕན་ཚོགས་པའི།
ཟླ་བ་ལ་ནི་ རབ་ཏུ་འགྲན།། ༨༨

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।
असमग्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་ རྣམས་ ཀྱིས་ ནི་ ཟླ་བ་ འཐུངས།
བདག་གིས་ ཁྱོད་གདོང་ཟླ་བ་ འཐུངས།

འདི་ནི་ གང་བ་ མ་ཡིན་ ཡང་ །
འདི་ནི་ ཧག་ཏུ་ དཀྱིལ་འཁོར་ རྫོགས ॥ ༨༩

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।
न ते सुन्दरि सवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥९०॥

མཛེས་མ་ ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བ་ནི །
འདི་ལྟར་ གཞན་ དག་ གདུང་བྱེད་པས །
ཟླ་བ་ཉིད་དུ་ བརྗོད་མིན་ ཞེས །
དེ་ནི་ སྨད་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ༩༠

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदय ।
भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥९१॥

གཏུམ་མོ་ ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བས་ ཀྱང་ །
བརྩེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྲེག་པ །
བདག་ཉིད་ སྐལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ སྐྱོན ।
ཞེས་འདི་ མཉམ་འཛོག་ གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ༩༡

मुखपङ्कजरङ्गेऽस्मिन् भ्रूलतानर्तकी तव ।
लीलानृत्यं करोतीति रम्यं रूपकरूपक ॥९२॥

ཁྱོད་གདོང་འདམ་སྐྱེས་རོ་ར་འདིར། །
སྨིན་མའི་འཁྲི་ཤིང་གར་མཁན་མ། །
རོལ་སྨིག་དགའ་བས་གར་བྱེད་དོ། །
ཞེས་པ་གཟུགས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན། ། ༩༢

नैतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे भ्रमराविमौ ।
एतानि केसराण्येव नैता दन्तार्चिषस्तव ॥९३॥

འདི་ནི་གདོང་མིན་འདི་པདྨ། །
འདི་དག་མིག་མིན་འདི་བུང་བ། །
འདི་རྣམས་གེ་སར་ཉིད་ཡིན་འདི། །
ཁྱོད་ཀྱི་སོ་ཡི་འོད་ཟེར་མིན། ། ༩༣

मुखादित्वं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।
उद्भावितगुणोत्कर्षन्तत्त्वापह्नवरूपकं ॥९४॥

གཏོང་ ལ་སོགས་པ་ཉིད་ བཟློག་སྟེ །
པདྨ་ ལ་སོགས་ གཟུགས་བྱས་པས །
ཡོན་ཏན་ ཁྱད་འཕགས་ གསལ་བྱེད་པ །
དེ་ཉིད་ བསྒྲོན་དོར་ གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ༩༨

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
दिङ्मात्रं दर्शित धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥९५॥

གཟུགས་ཅན་དཔེ་ཡི་ རྣམ་རྟོག་ རྣམས །
མཐའ་ཡོད་མ་ཡིན་ དེ་ཡི་ཕྱིར །
བློ་ལྡན་ རྣམས་ཀྱི་ ཕྱོགས་ཙམ་ བསྟན །
མ་བརྗོད་ རྗེས་སུ་དཔག་པར་བྱ ॥ ༩༧

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्त्तिना ।
सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥९६॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ རྫས །
ཚིག་ གཅིག་ ལ་ནི་ གནས་པ་ ཡིས །

གལ་ཏེ་ ངག་ ཀུན་ལ་ ཕན་ན །
དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བརྗོད་ དཔེར ༎ ༩༦

पवनो दक्षिणः पर्णं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।
नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥९७॥

ལྷོ་ཡི་རླུང་ གིས་ འཁྲི་ཤིང་གི །
འདབ་མ་རྙིང་པ་ ལྷགས་པར་བྱེད །
དུད་པའི་ལུས་ཅན་མ་རྣམས་ཀྱི །
ཁེངས་པ་ གསར་དུ་ འཇོམས་པར་བྱེད ༎ ༩༧

चरन्ति चतुरम्भोधिवेलोद्यानेषु दन्तिनः ।
चक्रवालाद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥९८॥

རྒྱུ་འོ་ ཆུ་གཏེར་ བཞི་ དོགས་ཀྱི །
སྐྱེད་མོས་ཚལ་དུ་ སོ་ཅན་དེ །
ཁོར་ཡུག་ རི་བོའི་ ཁོངས་སུ་ ཡང་ །
ཁྱོད་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ ཀུནྡའི་ འོད ༎ ༩༨

ཙནྡན་ བྱུག་པ་ ལྷུང་བ་ ཡང་ །
མཆོན་ལྷུང་ འཁྲུམས་པ་ རྣམས་ ལའོ ॥ ༡༠༣

जलं जलधरोद्गीर्णङ्कुलङ्गृहशिखण्डिनां ।
चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

ཆུ་འཛིན་ གྱིས་ནི་ རབ་གཏོར་ ཆུ །
ཁྱིམ་གྱི་ གཙུག་ཕུད་ལྡན་པའི་ ཚོགས །
གློག་གི་ ཐག་པ་ གཡོ་བ་ ཡང་ །
མི་རྟོག་གཞུ་ཅན་དག་གི་ དཔུང་ ॥ ༡༠༤

त्वया कर्णोत्पलं कर्णे स्मरेणास्त्रं शरासने ।
मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्सम कृतं ॥१०५॥

ཁྱོད་ཀྱིས་ ཨུཏྤལ་ རྣ་བ་ལ །
འདོད་པས་ མདའ་ ནི་ མདའ་སྦྱན་ལ །
ངས་ ཀྱང་ སེམས་ནི་ འཆི་བ་ ལ །
གསུམ་པོ་ འདི་ནི་ མཉམ་དུ་བྱས ॥ ༡༠༥

शुक्लः श्वेतार्चिषो वृद्ध्यै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।
स च रागस्य रागोपि यूनां रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

དཀར་ ཕྱོགས་ཀྱིས་ ནི་ འོད་དཀར་ཅན །
འཕེལ་བྱེད་ དེ་ཡིས་ མདའ་ལྔ་པ །
དེས་ ཀྱང་ ཆགས་ མདངས་ ཆགས་མདངས་ཀྱིས །
ན་ཆུང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་ དཔལ ॥ ༡༠༦

इत्यादिदीपकत्वेपि पूर्वपूर्वव्यपेक्षिणी ।
वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

ཞེས་ སོགས་ གསལ་བྱེད་ ཡིན་ མོད་ ཀྱང་ །
སྔ་མ་སྔ་མ་ལ་ ལྟོས་པའི །
ངག་གི་ ཕྲེང་བ་ རབ་ལྡན་ ཕྱིར །
དེ་ནི་ ཕྲེང་བའི་གསལ་བྱེད་དོ ॥ ༡༠༧

अवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति वलाहकाः ।
कर्शयन्ति तु घर्मस्य मारुतोद्धूतशीकराः ॥१०८॥

སྤྲུང་གིས་ གཙུབས་པའི་ཆུ་ཕྲིགས་ཅན།
སྤྲིན་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ ནི།
ཨ་བ་ལེ་པ་ འཕེལ་བར་བྱེད།
རྫུལ་གྱི་ དག་ནི་ སེལ་བར་བྱེད།། ༡༠༨

अवलेपपदेनात्र वलाहकपदेन च ।
क्रिये विरुद्धे सयुक्ते [176]**तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥**

འདིར་ནི་ སྤྲིན་གྱི་ཚིག་དག་ དང་།
ཨ་བ་ལེ་པའི་ ཚིག་དག་གིས།
བྱ་བ་ འགལ་བར་ལྡན་པ་ དེ།
འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ།། ༡༠༩

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।
आदत्ते चाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཆུ་འཛིན་ དག་གི་ ཕྲེང་བ་ འདིས།
ཕྱོགས་རྣམས་ཀྱི་ ནི་ གོ་སྐབས་ འཕྲོག།

སྐར་མ་ ཡི་ ནི་ ཚོགས་ རྣམས་ འཛིན།
དེང་ཡང་ བདག་གི་སྐྱོག་ རྣམས་ ལེན ॥ ༡༡༠

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकात्र दीप्यते ।
यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपक ॥१११॥

གང་ཕྱིར་ཆུ་ འཛིན་ ཕྲེང་བ་ཡི།
བྱ་བ་ གཅིག་ ཉིད་ གསལ་བྱེད་ འདིར།
དུ་མའི་ སྒྲ་ཡིས་ ཉེར་བླངས་པ།
དེ་ཕྱིར་ དོན་གཅིག་གསལ་ བྱེད་དོ ॥ ༡༡༡

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विष ।
दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

དྲི་ཡི་ བཞོན་པ་ ཡིད་འོང་ མཐོ།
སྔོ་བསངས ཏ་མཱ་ལ་ཡི་འོད།
སྤྲིན་ ནི་ མཁའ་ལ་ རྒྱུ་བྱེད་ དེ།
གླང་ཆེན་ འདི་དག་ ས་ལའོ ॥ ༡༡༢

अत्र धर्मैरभिन्नानामभ्राणां दन्तिनामपि ।
भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति श्लिष्टार्थदीपक ॥११३॥

འདིར་ནི་ཆོས་དག་ཐ་དད་མིན།
སྤྲིན་དང་གླང་པོ་རྣམས་དག་ཀྱང་།
རྒྱུ་བ་ཉིད་ཀྱིས་འབྲེལ་བའི་ཕྱིར།
སྦྱར་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ॥ ༡༡༣

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।
विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विचक्षणै ॥११४॥

རྣམ་པ་འདི་ཉིད་ཁོ་ན་ཡིས།
གསལ་བྱེད་ལ་ནི་རྣམ་རྟོག་པ།
ལྷག་མ་རྣམས་ཀྱང་རྗེས་འགྲོ་ཡིས།
མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྟོགས་པར་བྱ॥ ༡༡༤

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।
दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

གསལ་བྱེད་ཀྱི་ ནི་ གནས་ཉིད་དུ །
དོན་བསྐོར་ དང་ ནི་ ཚིག་བསྐོར་ དང་ །
གཉིས་ཀ་ བསྐོར་བ་ ཅེས་པ་ ཡི །
རྒྱན་ གསུམ་པོ་དག་ འདོད་དེ་ དཔེར ॥ ༡༡༥

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

ཀ་དམྦ་ ནི་ རྣམ་པར་རྒྱས །
ཀུ་ཊ་ཛོདྒམ་ རབ་གསལ །
ཀནྡ་ལུ་ནི་ རབ་ཏུ་ བྱེ །
ཀ་ཀུ་བྷ་ ཡང་ གྱེས་པར་གྱུར ॥ ༡༡༦

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गङ्कलापिनां ।
यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

སྤྲིན་གྱི་ ཕྲེང་བ་ དག་གིས་ ནི །
རྨ་བྱའི་ ཚོགས་ རྣམས་ སྒྲ་སྒྲོག་བྱེད །

ཆུ་སྤྲིན་ རྒྱལ་མཚན་ཅན་ གྱིས་ དེང །
ན་ཚུང་ རྣམས ཡིད་ འདོད་ལྡན་བྱེད ༎ ༡༡༧

जित्वा विश्वम्भवानद्य विहरत्यवरोधनैः ।
विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिवं गतः ॥११८॥

ཀུན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ ཁྱོད །
བཙུན་མོ་ རྣམས་ དང་ རྩེ་བར་བྱེད །
ཁྱོད་ཀྱི་དགྲ་སྡེ་ མཐོ་རིས་ སོང་ །
ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ རྩེ་བར་བྱེད ༎ ༡༡༨

प्रतिषेधोक्तिराक्षेपस्त्रैकाल्यापेक्षया त्रिधा ।
अथास्य पुनराक्षेप्यभेदानन्त्यादनन्तता ॥११९॥

དགག་པ་ བརྗོད་པ འགོག་པ་ སྟེ །
དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་པ་ གསུམ །
ཅི་སྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི །
དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ ཕྱིར མཐའ་ཡས ༎ ༡༡༩

अनङ्गः पञ्चभिः पुष्पैर्विश्वंव्यजयतेषुभिः ।
इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

ལུས་མེད་ཀྱི་ ནི་ མེ་ཏོག་ གི །
མདའ་ལྔས་ ཀུན་ལས་རྒྱལ་བར་གྱུར །
ཅེས་པ་ མི་སྲིད་ ཡང་ན་ ནི །
དངོས་པོའི་ནུས་པ་ རྣམ་པར་བཀྲ ॥ ༡༢༠

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।
प्रवृत्तैव यदाक्षिप्ता वृत्ताक्षेपस्तदीदृशः ॥१२१॥

ཞེས་པ་ འདིར་ནི་ རྒྱུ་སྟོབས་ ཀྱིས །
ལུས་མེད་ རྒྱལ་བར་མི་རིགས་ བློ །
དེ་ལྟར་ གྱུར་ བཀག་ གང་གི་ ཕྱིར །
བྱུང་བ་ འགོག་པ་ དེ་ འདི་འདྲ ॥ ༡༢༡

कुतः कुवलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।
किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

སྐྱན་སྒྲོགས་མ་ དག་ ཅི་ཡི་ཕྱིར།
ཉ་བ་ལ་ནི་ ཨུཏྤལ་ འཇུག།
ལས་ འདི་ལ་ ནི་ ཟུར་མིག་དག །
ཡོངས་རྫོགས་ མིན་པར་ སེམས་སམ་ ཅི ॥ ༡༢༣

स वर्तमानाक्षेपोयं कुर्वत्ये [186] वासितोत्पलं ।
कर्णे काचित्प्रियेणैव चाटुकारेण रुध्यते ॥१२३॥

འགའ་ཞིག་ དཀར་མིན་ ཨུཏྤལ །
ཉ་བར་འཇུག་ལ་ མཛའ་བོ་ཡིས །
དེ་ལྟར་ བསྟོད་པས་ མཛེས་བྱེད་པ །
འདི་ནི་ མངོན་གྱུར་ འགོག་པ་འོ ॥ ༡༢༣

सत्यं ब्रवीमि न त्वम्मान्द्रष्टुं वल्लभ लप्स्यसे ।
अन्यचुम्बनसंक्रान्तलाक्षारक्तेन चक्षुषा ॥१२४॥

ཇོ་བོ་ བདེན་པར་ སྨྲ་འོ་ བདག །
གཞན་ དང་ཙུམྦ་ནས་ འཕོས་པའི །

རྒྱ་སྐྱེགས་ཀྱིས་དམར་ མིག་གིས་ནི །
ཁྱོད་ཀྱིས་ མཐོང་བར་འགྱུར་ མ་ལགས ॥ ༡༢༤

सोय भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।
कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

སྔར་ཉིད་ ཤིན་ཏུ་ཁེངས་ལྡན་མས །
ནམ་ཞིག་ འདི་ཡིས་ གནོད་པ་ དག །
འབྱུང་བ་ དེ་ལྟར་ འགོག་བྱེད་པ །
འདི་ནི་ འབྱུང་འགྱུར་ འགོག་པའོ ॥ ༡༢༥

तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।
यदि सत्यम्मृदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

ལུས་ཕྲ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡན་ལག་ རྣམས །
འཇམ་པ་ ཉིད་དུ་ གནས་པ་ བརྫུན །
གལ་ཏེ་ བདེན་པར་ འཇམ་པ་ན །
གློ་བུར་དུ་ བདག་ ཅི་ལ་ གདུང་ ॥ ༡༢༦

धर्माक्षेपोयमाक्षिप्तमङ्गनागात्रमार्दवं ।
कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

གང་ཕྱིར་ དེ་ལྟར་ འདོད་ལྡན་ གྱིས །
དེ་ དང་ འགལ་བའི་ལས་ ཀྱིས་ ནི ༎ ༡༢༧
བུད་མེད་ ལུས་ འདི་ འཇམ་པ་ དག །
འགོག་པ་ འདི་ ནི་ ཆོས་ འགོག་པའོ །

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।
प्रभामात्रं हि तरल दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

དེ་ནི་ མཛེས་མ་འམ་ ཡིན་ཞེས །
རྣམ་རིག་ འདི་ནི་ ཅི་ལས་སྐྱེ །
དེར་ནི་ འོད་ཙམ་ གཡོ་བ་ ཉིད །
མཐོང་བར་ གྱུར་གྱི་ རྟེན་མ་ཡིན ༎ ༡༢༨

धर्म्याक्षेपोयमाक्षिप्तो धर्मीधर्मं प्रभाह्वयं ।
अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्चर्यं विवक्षता ॥१२९॥

གང འདིར་ གཟུགས་ཅན་མ ངོ་མཚར །
བརྗོད་པར་ འདོད་པས་ འོད་ཅེས་པའི །
ཆོས་ འདི ཁས་བླངས་ ཆོས་ཅན་ དག །
འགོག འདི་ ཁས་བླངས་ ཆོས་ཅན་ དག ॥ ༡༢༩

चक्षुषी [19a] तव रज्येते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
भ्रुवौ च भुग्ने न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥

ཁྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ དམར་གྱུར་ ཅིང་ །
མཆུ་ཡི་ ཡལ་འདབ་ གཡོ་བ་ དང་ །
སྨིན་མ་ འཁྱོག་སྟེ་ དེ་ལྟ་ནའང་ །
ཉེས་པ་ མེད་པས་ བདག་ མི་འཇིགས་ ॥ ༡༣༠

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं भियः ।
स्वापराधो निषिद्धोत्र यत्प्रियेण पटीयसा ॥१३१॥

གང་ཕྱིར་ མཛའ་བོ་ མཁས་པ་ ཡིས་ །
འདི་དག་ འདིར་ནི་ རྒྱུ་ འགོག་པའོ །

འཇིགས་པ་ ཡི་ནི་ རྒྱུ་ཡི་གཙོ །
རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་བྱེད་པ ༎ ༡༣༡

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।
दृष्टाश्च फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཛའ་བོ་ དག་ ནི་ རིང་ན་ གནས །
ཆུ་འཛིན་ བསྒྲོད་ལྡན་ འདི་ནི་ འོངས །
ནི་ཙུ་ལ་ ཡང་ རྒྱས་པར་ མཐོང །
བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག ། ༡༣༢

कार्यांक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।
तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་རྒྱུ་ ཆུ་འཛིན་ བསྒྲོད་པ་ ནི །
མི་བཟད་པ་ དག་ ཉེར་ བཀོད་ ནས །
འབྲས་བུ་ འཆི་བ་ བཟློག་པའི་ཕྱིར །
དེ་ནི་ འབྲས་བུ་ འགོག་ པ་འོ ༎ ༡༣༣

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।
यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ གཤེགས་པར་ མཛོད།
ཁྱོད་ཀྱི་ བགྲོད་པས་ བདག་ལ་ ནི།
གདུང་བ་ ཡུན་རིང་ འབྱུང་མི་འགྱུར།
འདི་ལ་ ཁྱོད་ནི་ དོགས་མི་འཚལ། ། ༡༣༤

इत्यनुज्ञामुखेनैव कान्तस्याक्षिप्यते गतिः ।
मरणं सूचयन्त्येव सोनुज्ञाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

ཞེས་པ་ འཆི་བ་ གསལ་བྱེད་པས།
རྗེས་གནང་ ཉིད་ཀྱི་ སྒོ་ནས་ ནི།
མཛའ་བའི་ བགྲོད་པ་ འགོག་བྱེད་པ།
འདི་ནི་ རྗེས་གནང་ འགོག་པར་ བརྗོད། ། ༡༣༥

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुख क्षेमं च वर्त्मनि ।
न च मे प्राणसं[19b]देहस्तथापि प्रिय मास्म गाः ॥१३६॥

ནོར་ནི་ མང་པོ་ རྙེད་ འགྱུར་ ཞིང་ །
ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དགེ །
བདག་སྒྲོག་ལ་ ཡང་ ཐེ་ཚོམ་མེད །
འོན་ཀྱང་ མཛའ་བོ་ འགྲོ་མི་བྱ ༎ ༡༣༦

प्रत्याचक्षाणया हेतून् प्रिययात्राविबन्धिन. ।
प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཛའ་བོ་ འགྲོ་བར་ སྒྲོར་བ་ ཡི །
རྒྱུ་ རྣམས་ དག་ ནི་ རབ་བཤད་ནས །
དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ ནི་ དེ་ འགོག་པ །
འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགོག་པ་འོ ༎ ༡༣༧

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ནི་ གསོན་རེ་ སྟོབས་ དང་ ལྡན །
ནོར་གྱི་ བསམ་པ་ སྟོབས་ལྡན་མིན །

མཛའ་བོ་ གཤེགས་ སམ་ བཞུགས་ལགས་སམ །
རང་གི་ གནས་སྐབས་ སྨོས་པ་ ལགས ॥ ༡༣༨

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।
प्रियप्रयाणं रुन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३९॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆགས་ལྡན་མས །
མཛའ་བོའི་ བགྲོད་པ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་ །
མ་གུས་བཞིན་དུ་ ཚིག་ སྨྲོར་བ །
འདི་ནི་ མ་གུས་པས་ འགོག་པའོ ॥ ༡༣༩

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।
ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

མཛའ་བོ་ གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ བཞུད །
ཁྱོད་ཀྱི་ ལམ་ནི་ ཞི་གྱུར་ཅིག །
གང་དུ་ ཁྱོད་ནི་ གཤེགས་པ་ དེར །
བདག་ ཀྱང་ སྐྱེ་བ་ ཉིད་ གྱུར་ཅིག ॥ ༡༤༠

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वादवर्त्मना ।
स्वावस्थां सूचयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

དེ་ལྟར་ ཤིས་བརྗོད་ལམ་ གྱིས་ གང་ །
རང་གི་ གནས་སྐབས་ གསལ་བྱེད་མས །
མཛའ་བོའི་ བགྲོད་པ་ འགོག་བྱེད་པ །
འདི་ནི་ ཤིས་བརྗོད་ ཀྱིས་ འགོག་པའོ ॥ ༡༤༡

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृग्यतां त्वया ।
अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्ध्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

གལ་ཏེ་ ཁྱོད་འགྲོ་ བདེན་ཉིད་ ན །
ཁྱོད་ཀྱིས་ གཞན་པ་ འགའ་ཞིག་ ཚོལ །
བདག་ནི་ གླག་ཚོལ་ འཆི་བ་ཡིས །
དེ་རིང་ ཉིད་དུ་ འགོག་པར་འགྱུར ॥ ༡༤༢

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।
कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिघ्नया ॥१४३॥

གང་ཕྱིར་ མཛའ་བའི་ དབང་གྱུར་མས །
མཛའ་བོའི་ བགྲོད་པ་འགོག་བྱེད་པ །
ཚིག་རྩུབ་ ཡི་གེ་ སྐྱོན་འགྲོ་ཅན །
འདི་ནི་ རྩུབ་ མོས་ འགོག་པ་འོ ॥ ༡༤༣

गन्ता चेद्गच्छ तूर्णन्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।
आर्त्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

གལ་ཏེ་ གཞེགས་ན་ མྱུར་དུ་ བཞུད །
ཕྱི་ནས་ གཉེན་ འདུན་ འཁྲུགས་པའི་ཁས །
བསྒྲགས་པའི་ཚོ་ངེ་ འགྲོ་བ་ ཡི །
གེགས་གྱུར་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྣ་བར་ འོང་ ॥ ༡༤༤

साचिव्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिषिध्यते ।
प्रियप्रयाणं साचिव्यं कुर्वंत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ མཐའ་གཅིག་ཏུ །
ཆགས་མས་ གྲོས་ཉིད་ བྱེད་པ་ ཡིས །

མཛའ་བོའི་ བགྲོད་པ་ འགོག་པ་ འདི།
གྲོས་ཉིད་ ཀྱིས་ནི་ འགོག་པ་འོ༎ ༡༤༥

गच्छेति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।
निर्गच्छति मुखाद्वाणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཞུད་ཅེས་ ཁྱོད་དགྱེས་ བརྗོད་ འདོད་ཀྱང་།
བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཚིག།
མ་ག་ཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི།
བྱུང་བར་ གྱུར་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད༎ ༡༤༦

यत्नाक्षेपस्स यत्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས།
འབྲས་བུ་ ཕྱིན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས།
དོན་མེད་ ཉེ་བར་ བསྟན་པའི་ ཕྱིར།
དེ་ནི་ འབད་པས་་འགོག་པའོ༎ ༡༤༧

क्षणदर्शनविघ्नाय पक्ष्मस्पन्दाय कुप्यतः ।
प्रेम्ण प्रयाणन्त्व ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

སྐད་ཅིག་ལྟ་བའི་ གེགས་བྱེད་པའི། ।
རྫི་མ་ བསྐྱོད་པ་ལ་ ཁྲོ་བ། །
ཁྱོད་ཀྱིས་ མཛའ་བར་ འགྲོ་བ་ སྨྲོས། །
བདག་ནི་ དེ་ཡི་ འདོད་པ་ འདོད། ༡༤༨

अय परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।
तया निषिध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

གང་ཕྱིར་ མཛའ་བོའི་ གཞན་དབང་མ། །
དེ་ཡིས་ བགྲོད་པ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་། །
དོན་ འདི་ ཉེ་བར་གསལ་བྱེད་ ཕྱིར། །
འདི་ནི་ གཞན་དབང་ འགོག་པ་འོ། ༡༤༩

सहिष्ये विरहं नाथ देह्यदृश्याञ्जनं मम ।
यद्क्तनेत्राङ्कन्दर्पः प्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲལ་བ བཟོད་པར བགྱི །
གང་གེས་ མིག བསྙོས་ བདག ལ་ནི །
འདོད པས་ བསྐུན དུ་ མི་མཐོང་བའི །
མཐོང་མིན་ མིག་སྐུན་ བདག་ལ་ སྐྱོལ ॥ ༡༥༠

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।
पत्युः प्रस्थानमित्याहुरुपायाक्षेपमीदृशं ॥१५१॥

འཚོ་བའི་ཐབས ནི་ དཀའ་བ་དག །
ཉེ་བར བཀོད ནས་ བདག་པོ་ནི །
འགྲོ་བ་ འགོག པར་བྱེད པའི་ ཕྱིར །
འདི་འདྲ ཐབས་ ཀྱིས འགོག པར་བརྗོད ॥ ༡༥༡

प्रवृत्तैव प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखात् ।
अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१५२॥

རྗེ་བོ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཞལ་ནས ཚིག །
བདག་ འགྲོ་ ཞེས པ ངེས་པར་བྱུང་ །

མཛའ་བ་ དམན་པ་ ཁྱོད་ཀྱིས་ ན།
མ་སྦྱིན་ན་ ཡང་ བདག་ལ་ཅི ༎ ༡༥༢

रोषाक्षेपोयमुद्रिक्तस्नेहनिर्यन्त्रणात्मया ।
संरब्धया प्रियारब्ध प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

མཛའ་བ་ ཀྲུས་པས་ མ་བསྒམས་པའི།
བདག་ཉིད་ ཁྲོ་བས་ མཛའ་བོ་ཡི།
འགྲོ་བ་ རྩོམ་པ་ བཟློག་པ་ གང་།
འདི་ནི་ ཁྲོ་བས་ འགོག་པ་འོ ༎ ༡༥༣

नाघ्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नार्पितं ।
त्वद्द्विषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णञ्जीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

མ་བསྣམས་ བུ་མོའི་རྣ་བ་ལ།
མ་བྲུས་ ཆང་ལ་ མ་བདབ་པར།
ཁྱོད་ཀྱི་ དགྲ་ཡི་ རྫིང་ ཉིད་དུ།
ཨུཏྤལ་ སྔོན་པོ་ ཞིགས་པར་གྱུར ༎ ༡༥༤

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिवोत्पले ।
व्यावर्त्त्यं कम तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

སྙིང་རྗེར་ བཅས་ བཞིན་ ཨུཏྤལ་ ལ །
དེ་ འོས་ ལས་ནི་ བཟློག་ བྱས་ནས །
ཀྱུ་ངན་འོས་པའི་ སྐབས་ སྟོན་ ཕྱིར །
འདི་ནི་ སྙིང་རྗེས་ འགོག་པ་ འོ ॥ ༡༥༥

अर्थो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।
न तपः संचित किंचिद्गतञ्च सकलं वयः ॥१५६॥

དོན་ནི་ འགའ་ཡང་ ཚོགས་མ་བྱས །
རིག་པ་ འགའ་ ཡང་ མ་བསྒྲུབས་ ཤིང་ །
དཀའ་ཐུབ་ འགའ་ ཡང་ མ་བསགས་ པར །
ན་ཚོད་ མཐའ་དག་ སོང་བར་ གྱུར ॥ ༡༥༦

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।
अर्थार्ज्जुनादेर्व्या।वृत्तिर्दर्शितेह गतायुषा ॥१५७॥

གང་ཕྱེར་ འདིར་ནི་ ཆོ་སོང་བས །
དོན་སྒྲུབ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི །
འགྲོད་པ་ གཙོ་བོར་ སྟོན་བྱེད་པ །
འདི་ནི་ འགྲོད་པས་ འགོག་པ་འོ ༎ ༡༥༧

किमयं शरदंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
रुतन्नूपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयदः ॥१५८॥

ཅི་འདི་ སྟོན་གྱི་ཆུ་འཛིན་ ནམ །
ཡང་ན་ ངང་པའི་ཚོགས་སམ་ཅི །
སྒྲ་ནི་ ཀང་གདུབ་ཀྱི་ འདྲ་བ །
ཐོས་པས་ དེ་ནི་ ཆུ་འཛིན་ མིན ༎ ༡༥༨

इत्यय संशयाक्षेपः संशयो यन्निवर्त्यते ।
धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टघनजातिना ॥१५९॥

ཆོས་འདི་ ངང་པ་ལ་ ཡོད་ཅིང་ །
སྤྲིན་གྱི་ རིགས་ལ་ མ་རེག་པས །

གང་ཞིག་ ཐེ་ཚོམ་ ཟློག་བྱེད་པ།
འདི་ནི་ ཐེ་ཚོམ་ འགོག་པ་འོ།། ༡༥༩

अमृतात्मनि पद्मानां द्वेष्टरि स्निग्धतारके ।
मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

བདུད་རྩིའི་ བདག་ ཉིད་ པདྨ་ལ །
སྡང་ ཞིང་ སྐྱུམ་པའི་ ཏཱ་ར་ཀེ །
ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བ་ འདི་ ཡོད་ བཞིན །
ཟླ་བ་ གཞན་གྱིས་ ཅི་ཞིག་ བྱ ། ༡༦༠

इति मुख्येन्दुराक्षिप्तो गुणान्गौणेन्दुवर्त्तिन. ।
तत्समान्दर्शयित्वेति श्लिष्टाक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

ཕལ་པའི་ཟླ་བ་ལ་ བརྟེན་པ །
དེ་ མཚུངས་ ཡོན་ཏན་ བསྟན་བྱས་ནས །
གཙོ་བོའི་ ཟླ་བ་ འགོག་བྱེད་པ །
རྨས་པ་ དེ་ལྟར་ སྦྱར་བས་ འགོག ། ༡༦༡

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तृप्यति ।
कदा वा दृश्यते तृप्तिरुद्दीर्णस्य हविर्भु[21b]जः ॥१६२॥

ཐམས་ཅད་མནན་ ཡང་ ཁྱོད་ཀྱི་ནི ༎
རྣམ་གནོན་ ཚིམ་པ་ མེད་པ་ མཚར །
ཡང་ན བསྲེག་ཟ་ འབར་བ་ལ །
ཚིམ་པ་དག ནི ནམ་ཞིག་ མཐོང་ ༎ ༡༦༢

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोय निवर्त्यते ।
विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི དོན་ གཞན་དག །
དེ་ཡི ཆོས་ མཚུངས་ བསྟན་བྱས་ནས །
ཡ་མཚན་ རྩོམ་པ འགོག་བྱེད་པ ༎
འདི་ནི་ དོན་ གཞན་ འགོག་པ་འོ ༎ ༡༦༣

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं ददासीति कदाचन ।
स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वद्धनमर्थिनः ॥१६४॥

སྤྲིན་པ་པོ་ ཞེས་ ནམ་ཡང་ ནི།
མི་དབང་ ཁྱོད་ལ་ མི་བསྟོད་དེ།
གང་ཕྱིར་ སློང་བས་ ཁྱོད་ཀྱི་ནོར།
རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན॥ ༡༦༨

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས་པ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི།
རྒྱུས་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ།
ཕྱོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ རྣམ་པར་རྟོག།
གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ དཔག་པར་ནུས॥ ༡༦༩

ज्ञेयः सोर्थान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः ।१६६।।

གང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཀོད་ནས།
དེ་ཡི་ སྒྲུབ་བྱེད་ ནུས་པ་ཅན།

དངོས་པོ་ གཞན་དག་ འགོད་པ་དེ །
དོན་གཞན་ བཀོད་པར་ ཞེས་པར་བྱ ॥ ༡༦༦

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्लेषाविद्धो विरोधवान् ।
अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ གནས་ དང་ །
སྦྱར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །
མི་རིགས་བྱེད་ དང་ རིགས་པའི་བདག །
རིགས་དང་ མི་རིགས་ བཟློག་པ་དེ ॥ ༡༦༧

इत्येवमाद्यो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।
उदाहरणमालैषां रूपव्यक्त्यै निदर्श्यते ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སོགས །
སྦྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་ཏུ་མཚོན །
འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ གསལ་བྱའི་ཕྱིར །
དཔེར་ བརྗོད་ ཕྲེང་བ་ བསྟན་པར་བྱ ॥ ༡༦༨

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।
पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घ्यते ॥१६९॥

ལེགས་ལྡན་ འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་མིག །
ཉི་མ་ དང་ནི་ ཟླ་བ་ ཡང་ །
ནུབ་པར་གྱུར་པ་ ཉིད་ལ་ ལྟོས །
ངེས་པ་ལ་ ནི་ སུ་ཡིས་ འགོངས ‖ ༡༦༩

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।
नन्वात्मलाभो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

ཆུ་འཛིན་ འདི་དག་ ལུས་ཅན་ གྱི །
ཡོངས་སུ་གདུང་བ་ འཕྲོག་པར་བྱེད །
ཆེན་པོ་རྣམས་ ཀྱིས་ བདག་ ཐོབ་ གྲགས །
གཞན་ གྱི་ སྡུག་བསྔལ་ ཞི་ སླད་དུའོ ‖ ༡༧༠

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।
ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सर्व्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

མ་ལ་ཡ་ཡི་ རླུང་གིས་ ནི །
འཇིག་རྟེན་ དགའ་བ་ སྐྱེད་པར་བྱེད །
ད་ཀྵི་ཎ་ དང་ ཡང་དག་ལྡན །
ཀུན་གྱི་ སྙིང་སྡུག་ མ་ཡིན་ནམ ‖ ༡༧༡

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निशाकरः ।
अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥१७२॥

མཚན་མོར་ བྱེད་ འདི་ དྲི་མ་ དང་ །
ལྡན་ཡང་ འགྲོ་བ་ དགའ་བ་སྐྱེད །
གཉིས་སྐྱེས་དབང་པོ་ སྐྱོན་ལྡན་ ཡང་ །
གཞན་དག་ རྗེས་སུ་འཛིན་པར་ནུས ‖ ༡༧༢

मधुपानकलात्कण्ठान्निर्गतोप्यलिनां ध्वनिः ।
कटुर्भवति कर्णस्य कामिना पापमीदृशम् ॥१७३॥

སྦྲང་རྩི་ འཐུངས་པའི་ མགྲིན་ སྐན་ ལས །
བྱུང་བ་ བུང་བའི་ སྒྲ་དག་ ཀྱང་ །

ཟླ་བར་ རྩུབ་པ་ ཉིད་ འགྱུར་བ །
འདོད་ལྡན་ རྣམས་ཀྱི་ སྡིག་ འདི་ འདྲ ॥ ༡༧༣

अय मम दहत्यङ्गमम्भोजदलसस्तरः ।
हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

ཆུ་སྐྱེས་འདབ་མའི་མལ་སྟན་ འདིས །
བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གདུང་བར་བྱེད །
སྲེག་པའི་ བདག་ ཉིད་ བསྲེག་ཟ་ དང །
འདྲ་བས་ རིགས་པ་ མ་ཡིན་ ནམ ॥ ༡༧༤

क्षिणोतु काम शीतांशु. किं वसन्तो दुनोति मा ।
मलिनाचरित कर्म सुरभेर्नन्वसाम्प्रतम् ॥१७५॥

བསིལ་ཟེར་ཅན་གྱིས་ ཉམས་བྱེད་ མོད །
དཔྱིད ི་ ཅི་ལ་ གདུང་ །
དྲི་མ པའི་ ལས །
དག མིན་ནམ ॥ ༡༧༥

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।
न हीन्दुगृह्येषूग्रेषु सूयगृह्यो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

ཀུ་མུད་ལྡན་ ཡང་ སྲེག་བྱེད་ན །
པདྨའི་འབྱུང་གནས་ ཅིས་མི་བྱེད །
ཟླ་བས་ གཟུང་རྣམས་ ཟུབ་པས་ན །
ཉི་མས་ གཟུང་བ་ འཇམ་མི་འགྱུར ॥ ༡༧༦

शब्दोपात्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।
तत्र यद्भेदकथन व्यतिरेकः स कथ्यते ॥७७॥

སྒྲ་ འཇུག་པ་འམ་ རྟོགས་པ་ ཡིས །
དངོས་པོ་ གཉིས་ནི་ མཚུངས་ གྱུར་པ །
དེ་ཡི་ དབྱེ་བ་ བརྗོད་པ་ གང་ །
དེ་ནི་ ལྡོག་པ་ཅན་ ཞེས་ བརྗོད ॥ ༡༧༧

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।
गुणैस्तुल्योसि भेदस्तु वपुषैवेदृशेन ते ॥१७८॥

བརྟན་དང་ཆེ་བའི་བདག་ཉིད་དང་།
ལཱ་བ་ཧཱུ་སོགས་ཡོན་ཏན་གྱིས།
ཁྱོད་དང་རྒྱ་མཚོ་མཚུངས་ཐ་དད།
ཁྱོད་ལུས་འདི་འདྲ་ཉིད་ཀྱིས་སོ། ༡༧༨

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मेणैकत्र वर्तिना ।
प्रतीतिविषयप्राप्तेर्भेदस्योभयवर्त्तिन. ॥१७९॥

གཅིག་ལ་གནས་པའི་ཆོས་ཀྱིས་ནི།
གཉི་ག་ལ་གནས་ཐ་དད་དག།
རྟོགས་པའི་ཡུལ་དུ་གྱུར་པའི་ཕྱིར།
འདི་ནི་གཅིག་གི་ལྡོག་པ་ཅན། ༡༧༩

अभिन्नवेलौ गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि ।
असावञ्जनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८०॥

ཆུ་ཡི་ཕུང་པོ་དག་དང་ཁྱོད།
མཚམས་ལས་མི་འདའ་ཟབ་པ་སྟེ།

འདི་ནི་ མིག་སྨན་ དང་ མཚུངས་ལ །
ཁྱོད་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནོ ॥ ༡༨༠

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।
कार्ष्ण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི །
འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ ནག་པོ་ དང་ །
སེར་པོ་དག་ནི་ ཐ་དད་ བསྟན །
འདི་ནི་ གཉི་གའི་ ལྡོག་པ་ཅན ॥ ༡༨༡

त्वं समुद्रश्च दुर्वारौ महासत्त्वसतेजसौ ।
इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

ཁྱོད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ དུ་ཝཱ་རོ །
མཧཱ་སཏྭ་ ཏེ་ཛོ་ བཅས །
འདི་ཡིས་ ཁྱེད་ གཉིས་ ཐ་དད་དེ །
དེ་ནི་ ཆུ་བདག་ ཁྱོད་མཁས་སོ ॥ ༡༨༢

स एष श्लेषरूपत्वात् सश्लेष इति गृह्यतां ।
साक्षेपश्च सहेतुश्च दर्श्यते तदपि द्वयं ॥१८३॥

འདི་ནི་ སྦྱར་བའི་ ཚུལ་ལྡན་ཕྱིར། །
སྦྱར་བ་ཅན་ ཞེས་ གཟུང་བར་མཛོད། །
འགོག་པ་ཅན་ དང་ གཏན་ཚིགས་ཅན། །
གཉིས་པོ་ དེ་ཡང་ བསྟན་པར་བྱ། ། ༡༨༣

स्थितिमानपि धीरोपि रत्नानामाकरोपि सन् ।
तव कक्षा न यात्येव मलिनो मकरालयः ॥१८४॥

ལུགས་དང་ལྡན་ ཞིང་ བརྟན་པ་ དང་། །
རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ ཡིན་ མོད་ ཀྱང་། །
དྲི་མ་ལྡན་པ་ ཆུ་སྲིན་གནས། །
ཁྱོད་ཀྱི་འགྲན་ཟླར་འགྱུར་མ་ཡིན། ། ༡༨༤

वहन्नपि महीं कृत्स्नां सशैलद्वीपसागराम् ।
भर्तृभावाद्भुजगानां शेषस्त्वत्तो निकृष्यते ॥१८५॥

རི་གླིང་རྒྱ་མཚོར་ བཅས་པ་ཡི །
ས་གཞི་ མཐའ་དག་ འཛིན་ མོད་ཀྱང་ །
ལག་འགྲོ་རྣམས་ ཀྱི་ རྗེར་ གྱུར་ ཕྱིར །
ལྐུག་མ་ཅན་ནི་ ཁྱོད་པས་དམན ॥ ༡༨༥

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोनुविधीयते ॥१८६॥

སྒྲ་དག་ འཇུག་པར་ མཚུངས་པ་ཡི །
ལྡོག་པ་ཅན་ནི་ འདི་འདྲ་སྟེ །
རྟོགས་པར་གྱུར་པ་ མཚུངས་པ་ ཡང །
ཡོད་པ་ དེ་ནི་ རྗེས་སུ་སྒྲུབ ॥ ༡༨༦

त्वन्मुखङ्कमल चेति द्वयोरप्यनयोर्भिदा ।
कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रय ॥१८७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་དང་ པདྨ་སྟེ །
འདི་ གཉིས་ཀྱི་ ནི་ ཁྱད་པར་ ཡང་ །

པདྨ་ ཆུ་ལས་ སྐྱེས་པ་ དང་།
ཁྱོད་ གདོང་ ཁྱོད་ལ་ བརྟེན་པའོ། ༡༨༧

अभ्रूविलासमस्पृष्टमदरागम् मृगेक्षणं ।
इदन्तु नयनद्वंद्व तव तद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་དྭགས་ མིག་ལ་ སྨིན་ སྣིག་ དང་།
སྒྱུས་པའི་དམར་བས་ རེག་པ་མེད།
ཁྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ གཉིས་པོ་ འདི།
ཡོན་ཏན་ དེ་དག་ ཉིད་ཀྱིས་ བརྒྱན། ༡༨༨

पूर्व्वस्मिन्भेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।
सादृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྔ་མར་ དབྱེ་བ་ཙམ་ ཞིག་ བསྟན།
འདིར་ནི་ ལྷག་པ་ ཉིད་ བསྟན་ཏོ།
སླར་ཡང་ མཚུངས་པའི་ ལྡོག་པ་ཅན།
གཞན་དག་ རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ། ༡༨༩

त्वन्मुखम्पुण्डरीकञ्च फुल्ले सुरभिगन्धिनी ।
भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टि मुखन्तु ते ॥१९०।

ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ པདྨ་ དཀར །
རྒྱས་ ཤིང་ དྲི་བཟང ལྡན་པ་སྟེ །
པདྨ་ལ་ནི་ བུང་བ འཁོར །
ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ ལ་ མིག་རབ་གཡོ ॥ ༡༩༠

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।
नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पय ॥१९१॥

ཟླ་བ འདི་ནི མཁའ་ཡི རྒྱན །
ངང་པ་ འདི་ནི་ ཆུ་ཡི་ རྒྱན །
མཁའ་ འདི་ རྒྱུ་སྐར་ ཕྲེང་བ་ཅན །
ཆུ་འདི་ ཀུ་མུ་ད་རྒྱས་པ་ཅན ॥ ༡༩༡

प्रतीयमानशौक्ल्याद्विसाम्ययोर्वियदम्भसोः ।
कृतः प्रतीतशुद्ध्योश्च भेदोस्मिंश्चन्द्रहसयोः ॥१९२॥

འདིར་ནི་ ཟླ་བ་ ངང་པ་ དག །
དཀར་བ་ཉིད་ སོགས་ རྟོགས་པ་ དང་ །
མཁའ་དང་ ཆུ་ ནི་དག་པར་ ཡང་ །
རྟོགས་པར་ མཚུངས་པའི་ དབྱེ་བ་ བྱས ॥ ༡༩༢

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्सादृश्यव्यतिरेकता ॥१९३॥

སྔ་མ་ལ་ ནི་ སྒྲ་ལྡན་ མཚུངས །
གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ །
བུང་བ་ མིག་ལ་ སོགས་པ་ མཚུངས །
དེ་ཕྱིར་ མཚུངས་པའི་ ལྡོག་པ་ ཅན ॥ ༡༩༣

•

अरत्नालोकसहार्यमवार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१९४॥

རིན་ཆེན་ སྣང་བས་མི་ འཕྲོག་ ཅིང་ །
ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ མི་ ཟློག་པ །

ཡང་ཆོ་ ལས་ བྱུང་ ན་ ཆུང་ གི།
སྐུན་ པས་ ལྟ་བ་འགོག་ པར་བྱེད། ༡༩༤

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।
दृष्टिरोधितया तुल्यं भिन्नमन्यैरदर्शयत् ॥१६५॥

སྐུན་ པའི་རིགས་ ལས་ མུན་ པ་ འདི།
ལྟ་བ་འགོག་ པ་ ཉིད་ ཀྱིས་ མཚུངས།
གཞན་དག་ གིས་ ནི་ ཐ་ དད་ བསྟན།
འདི་ ནི་ རིགས་མཐུན་ ལྡོག་ པ་ཅན། ༡༩༥

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]र ।
यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाव्य सा विभावना ॥१६६॥

རབ་ཏུ་གྲགས་ པའི་ རྒྱུ་བཟློག་ནས།
གང་ ཞིག་ རྒྱུ་ གཞན་ ཅུང་ ཟད་དམ།
གང་ དུ་ རང་ གི་ ངོ་བོ་ ཉིད།
སྟོན་པ་ དེ་ ནི་ སྒྲིད་པ་ཅན། ༡༩༦

अपीतक्षीवकादम्बमसंमृष्टामलाम्बरं ।
अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१९७॥

མ་འཐུངས་ སྨྱོས་པའི་ ཀ་དམྦ། །
མ་ཕྱིས་ དྲི་མ་མེད་པའི་ མཁའ། །
ཤུངས་པར་ མ་བྱས་ དྭངས་པའི་ ཆུ། །
འགྲོ་བའི་ ཡིད་ནི་ འཕྲོག་པར་བྱེད། ॥ ༡༩༧

अनञ्जितासिता दृष्टिर्भ्रूरनावर्जिता नता ।
अरञ्जितारुणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१९८॥

སྨན་མ་ བསྐུས་ པར་ དཀར་མིན་ མིག །
མནན་པ་ མེད་པར་ སྨིན་མ་ དམའ། །
ཚོན་ མ་བསྐུས་པར་ དམར་བ་ ནི། །
མཛེས་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་ མཆུ་ འདི་ འོ། ॥ ༡༩༨

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुक ।
अहेतुकश्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१९९॥

གང་ཕྱིར་ མ་འབྱུངས་ ལ་སོགས་ སྐྱེས །
སྐྱོས་པ་ཉིད་ སོགས་ རྒྱུ་གཞན་ཅན །
རྒྱུ་མེད་ དག་ཀྱང་ བརྗོད་ འདོད་པ །
དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད ॥ ༡༩༩

वक्त्र निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।
अकारणरिपुश्चन्द्रो निर्निमित्तसुहृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ གྱིས་ནི་ ཁ་ དྲི་ཞིམ །
སྒྲོལ་མེད་པར་ཡང་ ལུས་པོ་ མཛེས །
རྒྱུ་མེད་ དག་ཏུ་ ཟླ་བ་ དགྲ །
རྒྱུ་མཚན་མེད་པར་ འདོད་པ་ གྲོགས ॥ ༢༠༠

निसर्गादिपदैरत्र हेतुः साक्षान्निवर्त्तितः ।
उक्तश्च सुरभित्वादिफल तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་གྱི་སོགས་ ཚིག་གིས་ འདིར །
རྒྱུ་ནི་ དངོས་སུ་ རབ་བཟློག་ ཅིང་ །

དྲི་ཞིམ་ ཉིད་ སོགས་ འབྲས་བུ་ བརྗོད། །
དེ་ཕྱིར་ དེ་ནི་ སྲིད་པ་ཅན། ། ༢༠༡

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।
उक्तिसंक्षिप्तरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

དངོས་པོ་ འགའ་ལ་ བསམས་བྱས་ནས། །
དེ་དང་ མཚུངས་པའི་དངོས་པོ་གཞན། །
བསྡུས་པའི་ཚུལ་གྱིས་ བརྗོད་བྱེད་པ། །
དེ་ནི་ བསྡུས་པ་ བརྗོད་པར་ འདོད། ། ༢༠༢

[24b]पिबन्मधु यथाकाम भ्रमर फुल्लपङ्कजे ।
अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुड्मलं ॥२०३॥

བུང་བ་ ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན། །
པདྨ་ རྒྱས་ལ་ སྦྲང་རྩི་ འཐུངས། །
དྲི་ཞིམ་ རྒྱས་པ་མ་ཡིན་ ཡང་། །
མེ་ཏོག་ཁ་མ་བྲེ་ སྦྱོར་ལྟོས། ། ༢༠༣

इति प्रौढाङ्गनाबद्धरतिलीलस्य रागिणः ।
कस्याश्चिदिह बालायामिच्छा वृत्तिर्विभाव्यते ॥२०४॥

ཆགས་ལྡན་ བུད་མེད་ དར་མ་ལ།
དགའ་བའི་ རྩེ་དགས་ བཅིངས་པ་ དག །
བུ་མོ་ འགའ་ཞིག་ དག་ལ་ ཡང་ །
འདོད་པ་ འཕེལ་བ་ སྟོན་པར་བྱེད ॥ ༢༠༨

विशेष्यमात्रभिन्नापि तुल्याकारविशेषणा ।
अस्त्यसावपराप्यस्ति भिन्नाभिन्नविशेषणा ॥२०५॥

ཁྱད་པར་ཅན་ ཙམ་ ཐ་དད་ ཅིང་ །
ཁྱད་པར་ རྣམ་པ་ མཚུངས་པའང་ ཡོད།
ཁྱད་པར་ ཐ་དད་ ཐ་དད་ མིན།
འདི་ནི་ གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ ཡོད ॥ ༢༠༩

रूढमूलः फलभरैः पुष्णन्ननिशमर्थिनः ।
सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥

རྩ་བརྟན་ འབྲས་བུའི་ ཏུར་གྲིས་ ནི།
སྐྱོང་རྣམས་ རྟག་ཏུ་ རྒྱས་པར་ བྱེད།
གྲིབ་མ་ སྐྱུམ་པའི་ ལྗོན་པ་ཆེ།
འདི་ནི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ ཐོབ ॥ ༢༠༦

अनल्पविटपाभोग· फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
सच्छाय स्थैर्यवान्दैवादेष लब्धो मया द्रुमः ॥२०७॥

ཡལ་གའི་ ཁྱོན་ནི་ མི་ཆུང་ཞིང་ །
མེ་ཏོག་ འབྲས་བུ་ ཕུན་སུམ་ཚོགས།
དམ་པའི་ གྲིབ་བསིལ་ བརྟན་ལྡན་པའི།
ཤིང་འདི་ བདག་གིས་ སྐལ་བས་ རྙེད ॥ ༢༠༧

उभयत्र पुमान्कश्चिद्वृक्षत्वेनोपवर्णितः ।
सर्वे साधारणा धर्माः पूर्व्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ སྐྱེས་བུ་འགའ།
ལྗོན་པ་ཉིད་ ཀྱིས་ ཉེ་བར་ བསྔགས།

ཆོས་རྣམས་ ཐམས་ཅད་ སྔ་མ་ལ །
ཐུན་མོང་ གཞན་ལ་ རྣམ་པ་ གཉིས ॥ ༢༠༨

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशय ।
अयमम्भोनिधिः कष्टङ्कालेन परिशोष्यते ॥२०९॥

སྦྲུལ་ངན་ འགྲོགས་པ་ དང་ བྲལ་ཞིང་ །
རང་བཞིན་གྱིས་ ནི་ མངར་བའི་གཞི །
ཀྱེ་མ་ ཆུ་ ཡི་ གཏེར་ འདི་ ནི །
དུས་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་བསྐམ་པར་འགྱུར ॥ ༢༠༩

इत्यपूर्व्वसमासोक्तिः[25a] **पूर्व्वधर्मनिवर्त्तनात् ।**
समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

རྒྱ་མཚོ་ ལ་ ནི་ དེ་ མཚུངས་པ །
སྐྱེས་བུའི་ ལྡོག་པ་ གསལ་བྱེད་ཅིང་ །
སྔ་མའི་ཆོས་ ནི་ བཟློག་པའི་ ཕྱིར །
འདི་ནི་ སྔོན་མེད་ བསྡུས་པར་ བརྗོད ॥ ༢༡༠

विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तिनी ।
असावतिशयोक्ति स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

ཁྱད་པར་ཀྱི་ནི་བརྗོད་འདོད་གང་།
འཇིག་རྟེན་མཚམས་ལས་རྒལ་གྱུར་པ།
ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་བརྗོད་པ་འདི།
རྒྱན་གྱི་དམ་པ་ཡིན་དེ་དཔེར། ༢༢༢

मल्लिकामालभारिण्यः सर्व्वाङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।
क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

མལླི་ཀཱ་ཡི་ཕྲེང་ཚོགས་ཅན།
ལུས་ཀུན་ཁྱབ་པའི་ཙནྡན་གཤེར།
དཀར་བའི་གོས་ཅན་མངོན་འགྲོ་མ།
ཟླ་བའི་འོད་ལ་མཚོན་མ་ཡིན། ༢༢༣

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुक्तमुत्कर्षवत्तथा ।
संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिन्निदर्श्यंते ॥२१३॥

སྨྲ་བའི་ འོད་ནི་ ལྷག་པ་ ཉིད།
ཁྱད་འཕགས་ལྡན་ བརྗོད་ དེ་བཞིན་དུ།
ཐེ་ཚོམ་ ཕུལ་བྱུང་ ལ་སོགས་ ཀྱང་།
གསལ་ ཕྱིར་ ཅུང་ཟད་ བསྟན་པར་བྱ།། ༢༡༣

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मध्यं प्रिये तव ।
अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्त्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ནུ་མ་ དང་།
དཔྱི་ཡི་ བར་ན་ སྐེད་པ་ ནི།
ཡོད་ དང་ མེད་ ཅེས་ བདག་གི་ ནི།
ཐེ་ཚོམ་ ད་དུང་ ལྡོག་མ་གྱུར།། ༢༡༤

निर्णेतु मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरस्थितेः ॥२१५॥

ནི་ དཔྱི་ནི་ ཁྱོད་ ལ་ ནི།
སྐེད་པ་ ཡོད་ ཅེས་ ངེས་པར་ནུས།

འོ་མ་འཛིན་པའི་ཁྲུར་ གནས་པ །
རྣམ་པ་ གཞན་དུ་ སྲིད་མ་ཡིན ॥ ༢༡༥

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोदर ।
माति मातुमशक्योपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གྲགས་པའི་ ཕུང་པོ་ ནི །
དཔག་ ནས་ མིན་ ཡང་ འདིར་ ཤོང་བ །
ས་སྐྱོང་ སྲིད་པ་ གསུམ་ གྱི་ ནི །
ཁོངས་ དག་ ཨེ་མ་ ཤིན་དུ་ ཡངས ॥ ༢༡༦

अलकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।
वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

ངག་གི་དབང་པོས་ མཆོད་གྱུར་པ །
ཕུལ་བྱུང་ ཞེས་བྱ་ བརྗོད་པ་ འདི །
རྒྱན་ནི་ གཞན་པ་ རྣམས་ ཀྱི་ ཡང །
གཅིག་པུ་ དཔུང་གཉེན་ ཉིད་དུ་ བརྗོད ॥ ༢༡༧

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।
अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

སེམས་ལྡན་དག་གམ་ཅིག་ཤོས་ཀྱིས།
རྣམ་པ་གཞན་དུ་གནས་པའི་ཚུལ།
གང་དུ་རྣམ་གཞན་རབ་རྟོག་པ།
དེ་ནི་རབ་རྟོག་དུ་རིག་དཔེར། ། ༢༡༨

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसी गाहते गजः ।
मन्ये मार्त्तण्डगृह्याणि पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

ཉིན་གུང་ཉི་མས་གདུངས་པ་ཡི།
གླང་པོ་དག་ནི་མཚོར་འཇུག་པ།
ཉི་མའི་ཁྱོགས་ཀྱུར་པདྨ་རྣམས།
གཞོམ་པར་འདོད་པ་ཡིན་ནམ་སྙམ། ། ༢༡༩

स्नातुं पातुं बिसान्यत्तुं करिणो जलगाहनम् ।
तद्वैरनिष्क्रयायेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्ण्यते ॥२२०॥

ཁྲུས་དང་ བདུང་དང་ པད་ཙ་ དག །
བཟའ་ སྤྱིར་ ལག་ལྷན་ ཚུར་འཛུག་པ །
དེ་ནི་ ཁོན་ལན་ བླན་ སྤྱིར་ ཞེས །
སྙན་ངག་མཁན་ གྱིས་ རབ་བརྟགས་ བརྗོད ॥ ༢༢༠

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः ।
इति कर्णोत्पल प्रायस्तव दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥

འདི་ནི་ བདག་གི་ རྫིང་བ་དག །
འགོག་བྱེད་ ཉ་བའི་ རྒྱན་ ཞེས་ དེ །
ཁྱོད་ཀྱི་ མིག་གིས་ ཉ་བ་ཡི །
ཨུཏྤལ་ དག་ལ་ འགོངས་པ་ འདྲ ॥ ༢༢༡

अपाङ्गभागपातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पल ।
स्पृश्यते वा नचैवन्तु कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

མིག་ཟུར་ ཚར་ ནི་ ལྷུང་གྱུར་པ །
མིག་གི་འོད་ཀྱིས་ ཨུཏྤལ་ལ །

རིག་གམ་ མིན་ ཡང་ སྙན་ངག་མཁན། །
དེ་ལྟར་ རབ་ཏུ་བརྟགས་ཏེ་ བརྗོད། ༎ ༢༢༢

लिम्पतीव तमोङ्गानि वर्षतीवांजनं नभः ।
इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणान्वितं ॥२२३॥

སྨན་པ་ ལུས་ ལ་ འབྱུག་པ་ བཞིན། །
མཁའ་ནི་ མིག་སྨན་ ཆར་འབེབས་ བཞིན། །
ཞེས་འདི་ ཡང་ ངོ་ རབ་རྟོག་གི། །
མཚན་ཉིད་ལྡན་པ་ ཤིན་ཏུ་ མང་། ༎ ༢༢༣

केषांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]रिवश्रुत्येह जन्यते ।
नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिक्रम्याप्तभाषित ॥२२४॥

འདིར་ནི་ བཞིན་གྱི་ སྒྲ་ ཡིས་ འགའ། །
ཏིང་ ཡི་ མཐའ་ ཡིས་ དཔེ་ མ་ ཡིན། །
ཞེས་པ་ ཡིད་ཆེས་ གསུངས་ འདས་ནས། །
དཔེ་ཉིད་དུ་ ནི་ འཁྲུལ་པ་ སྐྱེ། ༎ ༢༢༤

उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।
लिम्पतेस्तमसश्चासौ धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

དཔེ་ དང་ དཔེར་བྱ་ཉིད་ དག་ནི།
མཚུངས་པའི་ཆོས་ ལ་ ལྟོས་པས་ ན།
འབྱུག་པ་ དང་ ནི་ མུན་པ་ ལ།
ཆོས་ འདི་ མཐོང་བར་གྱུར་ ཏམ་ ཅི། ༢༢༥

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपरः ।
स एव धर्मो धर्मी चेत्यनुन्मत्तो न भाषते ॥२२६॥

གལ་ཏེ་ འབྱུག་པ་ཉིད་ འདོད་ན།
འབྱུག་ ཅེས་བྱ་བ་ གཞན་པ་ ཅི།
དེ་ཉིད་ ཆོས་ དང་ ཆོས་ཅན་ ཡང་།
ཞེས་པ་ མ་སྨྱོས་ འཆད་ མ་ ཡིན། ༢༢༦

कर्त्ता यद्युपमानं स्यान्न्यग्भूतोऽसौ क्रियापदे ।
स्वक्रियासाधनव्यग्रो नालमन्यद्व्यपेक्षितुं ॥२२७॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་པ་ དཔེ་ ཡིན་ ན །
བྱ་ཚིག་ ལ་ འདི་ དབང་བྲལ་ འགྱུར །
རང་གི་ བྱ་ སྒྲུབ་ མི་ནུས་པ །
གཞན་གྱི་ ལྟོས་བྱུར་ མི་འགྱུར་རོ ॥ ༢༢༧

यो लिम्पत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।
अङ्गानीति न सम्बद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

གང་གིས་ འབྱུག་པ་ འདི་ དང་ ནི །
མུན་པ་ མཚུངས་ ཞེས་ སྨྲ་ ན་ ཡང་ །
ལུས་ལ་ ཞེས་པ་ མ་འབྲེལ་ ཏེ །
དེ་ ཡང་ ཡོན་ཏན་ མཚུངས་པ་ བལྟ ॥ ༢༢༨

यथेन्दुरिव ते वक्त्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।
न तथा लिम्पतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

དཔེར་ན་ ཁྱོད་ གདོང་ ཟླ་བ་ བཞིན །
ཅེས་པས་ མཛེས་པ་ རྟོགས་འགྱུར་ ཏེ །

དེ བཞིན འགྲུག པ་ འདི ལ་ ནི །
འགྲུག་པ་ ལས་ གཞན རྟོགས མ ཡིན ॥ ༢༢༩

तदुपश्लेषणार्थोयं लिम्पतिर्ध्वान्तकर्तृकः ।
अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

དེ ཕྱིར འགྲུག་པ འདི་ དང་ ནི །
མུན པ་ བྱེད་པ་ ལུས་ ཀྱང ལས །
ཉེ བར སྦྱར དོན སྐྱེས་བུ ཡིས །
དེ ལྟར རབ བརྟགས ཞེས འདོད བྱ ॥ ༢༣༠

मन्ये श[26b]ङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभि ।
उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

སྙམ་ དང རྟོགས དང་ ངེས་ དང་ འདྲ །
མིན ནམ་ ཞེས པ་ ལ་སོགས་པའི །
སྒྲ ཡིས་ རབ་བརྟགས གསལ་བར་བྱེད །
བཞིན་ གྱི སྒྲ་ ཡང དེ དང འདྲ ॥ ༢༣༡

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।
कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२

རྒྱུ་ དང་ ཕྲ་མོ་ ཆ་ དག་ ནི །
ཚིག་ རྣམས་ དག་ གི་ རྒྱན་ གྱི་ མཆོག །
རྒྱུ་ ནི་ བྱེད་ པོ་ ཤེས་ བྱེད་ དེ །
དེ་ དག་ རྣམ་ པ་ དུ་ མ་ དཔེར ༎ ༢༣༢

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।
उत्पादयति सर्वस्य प्रीति मलयमारुत ॥२३३॥

མ་ལ་ཡ་ ཡི་ རླུང་ གིས་ ནི །
ཙནྡ་ ལྗོན་ པ་ གསར་ བ་ ཡི །
ཡལ་ འདབ་ སྐྱོད་ པར་ བྱེད་པ་ འདི །
ཀུན་ གྱི་ དགའ་བ་ སྐྱེད་པར་བྱེད ༎ ༢༣༣

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपबृंहणं ।
अलंकारतयोद्दिष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

དགའ་བ་ སྐྱིད་པར་ འོས་པ་ ཡི །
རང་བཞིན་ ཉེ་བར་སྤྲུར་བ་ འདི །
རྒྱན་ ཉིད་ ཀྱིས་ ནི་ རབ་བསྟན་ དེ །
ལྡོག་པ་ དག་ ཀྱང་ དེ་ དང་ མཚུངས ༎ ༢༣༤

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्झरान् ।
पथिकानामभावाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

མ་ལ་ཡ་ ཡི་ ཆུ་རྒྱུན་ ལ །
རེག་ ཅིང་ ཙནྡན་ ནགས་ བསྐྱོད་ ནས །
རླུང་ འདི་ འགྲོན་པོ་ རྣམས་ དག་ ནི །
ཉམས་པར་ བྱ་ ཕྱིར་ ཉེ་བར་གནས ༎ ༢༣༥

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मारुतः ।
विरहज्वरसंभूतमनोज्ञारोचके जने ॥२३६॥

དེ་ལྟར་ བྱུང་བའི་ རླུང་ གིས་ ནི །
འབྲལ་བའི་ རིམས་ ལས་ བྱུང་གྱུར་ པ །

སྐྱེ་བོ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྲེད་པ།
ཉམས་པ་ སྐྲུན་པ་ བྱེད་པར་ནུས ༎ ༢༣༦

निर्वर्त्त्ये च विकाय च हेतुत्वन्तद्पेक्षया ।
प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ རྣམ་འགྱུར་ ལ།
དེ་ཉིད་ ལ་ ལྟོས་ རྒྱུ་ཉིད་དེ།
འཐོབ་པའི་ ལས་ ལ་ ཕལ་ཆེར་ ནི།
བྱ་བ་ ལ་ ལྟོས་ རྒྱུ་ཉིད་དོ ༎ ༢༣༧

हेतुर्निर्वर्त्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।
दत्त्वो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ རྒྱུ་ དག་ ནི།
བསྟན་ཏེ་ ལྷག་མ་ གཉིས་པོ་ ཡི།
དཔེར་ བརྗོད་ གཉིས་ ནི་ བཀོད་བྱས་ནས།
ཤེས་པར་བྱེད་པ་ བསྟན་པར་བྱ ༎ ༢༣༨

उत्प्रबालान्यरण्यानि वाप्यः संफुल्लपङ्कजाः ।
चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थदृष्टिविषङ्कृत ॥२३९॥

ལོ་འདབ་ གསར་འཁྲུངས་ ནགས་ཚལ་ དང་།
འདབ་བརྒྱ་ རབ་ཏུ་རྒྱས་པའི་ རྫིང་།
ཟླ་བ་ རྒྱས་པ་ འདོད་པ་ ཡིས།
འགྲོན་པོ་ ལྟ་བའི་ དུག་ཏུ་ བྱས། ༢༣༩

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।
बाला भ्रूभङ्गजिह्माक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

ཁེངས་པ་ གོམས་པར་བྱའོ་ ཞེས།
གྲོགས་མོ་ མཛའ་བོའི་ གནས་བཀོད་ ལ།
བུ་མོ་ སྨིན་འཁྲུག་ མིག་ཡོན་ གྱིས།
མཆུ་ ནི་ གཡོ་ ཞིང་ ལྟ་བར་བྱེད། ༢༤༠

गतोऽस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।
इतीदमपि साध्वेव कालावस्थानिवेदने ॥२४१॥

ཉི་མ ནུབ་གྱུར་ ཟླ་བ་ མཛེས །
འདབ་ཆགས རྣམས ནི གནས་སུ་ སོང །
ཞེས་པ་ འདི་ ཡང དུས་ ཀྱི་ སྐབས །
གོ་བར་བྱེད་པ ལེགས་པ ཉིད ॥ ༢༤༡

।अवध्यैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनांभसाम् ।
देहोष्मभिः सुबोध ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

གྲོགས་མོ་ འདོད་པས་ གཟིར་བའི་ ཡིད །
ཟླ་བའི་ ཟེར་ གྱིས་ མི་ཟློག ཅིང་ །
ཙནྡན ཆུ ཡིས་ མི་བཟློད་པ །
ལུས་ ཀྱི དྲོད་ ཀྱིས་ ལེགས་པར་རྟོགས ॥ ༢༤༢

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्या ज्ञापकहेतव ।
अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་པའི་ སྦྱོར་བ་ རྣམས་ ལ ནི །
ཡིད་འོང་ ཤེས་བྱེད རྒྱུ་ དག མཚོན །

དངོས་མེད་ རྒྱུ་ ནི་ ཡོད་ འཕྲོག་པ། །
འགའ་ཞིག་ རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ། ། ༢༤༣

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमतां ।
अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ते व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ ནི་ མ་གོམས་ དང་། །
བློ་ལྡན་ རྣམས་ དང་ མ་འགྲོགས་ དང་། །
དབང་པོ་ རྣམས་ ནི་ མ་བསྡམས་པས། །
མི་ རྣམས་ རབ་ཏུ་གདུང་བར་ གྱུར། ། ༢༤༤

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।
क्षतो मोहश्च्युता तृष्णा कृत पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

འདོད་པའི་ གཏམ་ གྱིས་ སྨྱོས་པ་ སོང་། །
ལང་ཚོ་ཡི་ ནི་ རིམས་ དག་ ཉམས། །
རྨོངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ སྲེད་པ་ འཕོས། །
བསོད་ནམས་གནས་ ལ་ ཡིད་ དག་ བྱས། ། ༢༤༥

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।
मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानस ॥२४६॥

ནགས་ཚལ་ འདི་དག་ ཁྱིམ་ མ་ཡིན །
ཆུ་ཀླུང་ འདི་དག་ བུད་མེད་ མིན །
རི་དྭགས་ འདི་དག་ བུ་ཚ་ མིན །
དེ་ཕྱིར་ བདག་ གི་ ཡིད་དགའ་འོ ॥ ༢༤༦

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टित ।
अतस्तेषा विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

ཤིན་ཏུ་ མ་བརྟགས་ སྤྱོད་པ་ ནི །
འཕགས་པ་ རྣམས་ ལ་ ཡོད་ མ་ཡིན །
དེ་ཕྱིར་ དེ་དག་ རྣམས་ ཀྱི་ ནི །
ཕུན་ཚོགས་ ཐམས་ཅད་ རྟག་ཏུ་ འཕེལ ॥ ༢༤༧

उद्यानसहकाराणामनुद्भिन्ना न मञ्जरी ।
देयः पथिकनारीणां सतिल सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྐྱེད་ཚལ་ས་ཧ་ཀཱ་ར་རྣམས། །
སྐྱེ་མ་མ་འཁྲུངས་པ་མིན་ན། །
འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་བུད་མེད་ནི། །
དེ་ལ་བཅས་ཁྲོར་ཆུ་ སྦྲིན་བྲུར་འགྱུར། ། ༢༤༨

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
भावाभावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनम्प्रति ।।२४९।।

ཡོད་དང་མེད་པའི་རང་བཞིན་གྱི། །
འབྲས་བུ་སྐྱེད་པ་དག་ལ་འདིར། །
སྔོན་མེད་ལ་སོགས་རང་བཞིན་གྱི། །
དངོས་པོ་ཡི་ནི་རྒྱུ་ཉིད་དོ། ། ༢༤༩

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यानन्तरजस्तथा ।
अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याश्चित्रहेतवः ।।२५०।।

རིང་འབྲས་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས། །
དེ་བཞིན་འབྲས་མ་ཐག་སྐྱེས་དང་། །

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་བྱེད་ ཅེས་པ །
མཚར་བའི་ རྒྱུ་ རྣམས་ གྲངས་མེད་དོ ॥ ༢༥༠

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।
अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདི་ དག་ སྦྱོར་བའི་ ལམ་ རྣམས་ ལ །
ཕལ་པའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ །
ཤིན་ཏུ་ མཛེས་པ་ དག་ མཐོང་སྟེ །
དེ་ཡི་ དཔེར་བརྗོད་ ཇི་ལྟར་ན ॥ ༢༥༡

त्वदपाङ्गाह्वयं जैत्रमङ्गजास्त्रं यदंगने ।
मुक्तन्तदन्यतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལུས་ཅན་ ཁྱོད་ མིག་ཟུར་ ཅེས་པ །
རྒྱལ་བྱེད་ ལུས་སྐྱེས་ དག་ གི་ མཚོན །
གང་ དེ་ གཞན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ །
དེ་ ཡིས་ བདག་ གི་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོམ ॥ ༢༥༢

आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशव ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

སྐྱེས་བུ་ ལུས་སྐྱེས་ ཀྱིས་ སྨྱོས་པའི།
རྣམ་འཕྲུལ་ སྣ་ཚོགས་ ལྷན་ཅིག་ ཉིད།
བུད་མེད་ རྣམས་ ལ་ བུ་མོ་ ནི།
ཡོངས་སུ་ནུབ་པའི་ ན་ཚོད་ སྐྱེས།། ༢༥༣

पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णश्चन्द्रमण्डल ।
प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागर ॥२५४॥

ཤར་ཉིད་ རི་དྭགས་ མིག་ཅན་ གྱི།
ཆགས་པའི་ རྒྱ་མཚོ་ རྒྱས་པར་གྱུར།
ཕྱིས་ནས་ འོད་ཟེར་ རབ་འཕྲོས་པས།
ཟླ་བ་ ཡི་ ནི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ཤར།། ༢༥༤

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुड्मलीकुरुते कुत ।
देव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

ལྷ་ཅིག་ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་གཉིས་པོ།
དམར་བ་ཉི་གཞོན་ལ་རེག་པས།
རྒྱལ་པོ་རྣམས་ཀྱི་ལག་པ་ཡི།
པདྨ་ཟུམ་པར་བྱེད་པ་ཅི།། ༢༥༥

पाणिपद्मानि भूपानां सकोचयितुमीशते ।
त्वत्पादनखचन्द्राणामर्च्चिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་སེན་ཟླ་བ་ཡི།
འོད་ཟེར་ཀུན་ད་དྲི་མེད་རྣམས།
ས་སྐྱོང་རྣམས་ཀྱི་ལག་པ་ཡི།
པདྨ་ཟུམ་པར་བྱེད་ལ་དབང་།། ༢༥༦

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
इङ्गिताकारलक्ष्योर्थः सौक्ष्म्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་པ་རྒྱུ་ཡི་རྣམ་རྟོག་གི།
ལུགས་ནི་འདི་འདྲ་དག་ཏུ་བསྟན།

ཟུར་ དང་ རྣམ་ པས་ མཚོན་པའི་ དོན །

ཕྲ་ ཕྱིར་ ཕྲ་མོ་ ཞེས་པར་ བཤད ༎ ༢༥༧

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णे वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

ནམ་ ཞིག་ ཁུ་ཅག་ འགྲོགས་འགྱུར་ ཞེས །

ཚོགས་སུ་ བརྗོད་པ་ མ་བཟོད་པའི །

མཛའ་བོ་ རིག་ནས་ བུད་མེད་ ཀྱིས །

རྩེ་ དགའི་ པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས ༎ ༢༥༨

पद्मसंमीलनादत्र सूचितो निशि सङ्गम ।

आश्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྐྱེས་ དག་ གིས་ གཟིར་བ་ ཡི །

མཛའ་བོ་ དབུགས་ དབྱུང་ འདོད་པ་ ཡིས །

པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས་པ་ ལས །

འདིར་ ནི་ མཚན་མོ་ འགྲོགས་པར་ བསྟན ༎ ༢༥༩

त्वदर्पितदृशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।
उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

གླུ་ ཡི མདུན་ སར ཁྲོད་ ལ མིག །
གཏད པས་ གདོང་གི ཆུ་སྐྱེས དེར །
ཆགས པ་ འབར་ཞིང རྒྱས པ ཡི །
མཛེས པ་ ཅི ཡང་ བྱུང་བར་གྱུར ༎ ༢༦༠

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वाद्रत्युत्सवमनोरथः ।
अनुलङ्घ्यैव सूक्ष्मत्वमभूदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

འདིར་ ཡང་ རང བཞིན་ མ་ བརྗོད་པར །
དགའ་བའི དགའ སྟོན འདོད པ དག །
ངེས པར གནས་པ ཉིད་གྱུར་པ །
ཕྲ་མོ་ ཉིད་ ལས་ རྒལ མ ཡིན ༎ ༢༦༡

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।
उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भविष्यति ॥२६२॥

ཆ་ཉི་ཆ་ ཡིས་ དངོས་པོ་ ཡི །
རང་བཞིན་ ངེས་པར་གསལ་བ་སྒྲིབ །
དཔེར་བརྗོད་ཉིད་ ཀྱིས་ འདི་ ཡི་ ནི །
རང་བཞིན་ ངེས་པར་གསལ་བར་བྱ ॥ ༢༦༢

राजकन्यानुरक्त मां रोमोद्भेदेन रक्षकाः ।
अवगच्छेयुरा ज्ञातमहो शीतानिल वनम् ॥२६३॥

རྒྱལ་པོའི་ བུ་མོ་ ལ་ ཆགས་ བདག །
སྤུ་ ལོང་ རྒྱས་པ་ སྲུང་པ་པོས །
རིག་པར་གྱུར་ལ་ ཀྱེ་མ་ ཚལ །
བསིལ་བའི་རླུང་ལྡན་ ཡིན་པར་ ཤེས ॥ ༢༦༣

आनन्दाश्रु प्रवृत्त मे कथं दृष्ट्वैव कन्यकाम् ।
अक्षि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन दूषितं ॥२६४॥

ཅི་ལྟར་ བུ་མོ་ མཐོང་ ཉིད་ ན །
བདག་ ལ་ དགའ་བའི་ མཆི་ མ་བྱུང །

རླུང་ གིས་ གཙུབ་པའི་ མེ་ཏོག་ གི །
རྡུལ་ གྱིས་ བདག་ མིག རྨུན་ཕྱུང་ངོ་ ॥ ༢༦༤

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलकारोतिशोभते ।
लेश*मेकेचिदुन्निन्दां स्तुति वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

ཞེས་པ་ ལ་སོགས་ སྐབས་སུ་ ནི །
རྒྱན་འདི་ ཤིན་ཏུ་ མཛེས་པ་ ཡིན །
ཁ་ཅིག་ ཆ་ལས་ སྨད་པ་ འམ །
བསྟོད་པ་ བྱས་པ་ ཆ་ ཞེས་ བརྗོད ॥ ༢༦༥

युवैव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरूर्जितः ।
रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवादपि ॥ २६६ ॥

གང་ ཡིད་ གཡུལ་ གྱི་ དགའ་སྟོན་ལ །
འདོད་པའི་ དགའ་སྟོན་པས་ ཀྱང་ ཆགས །
གཞི་ལྡན་ ལང་ཚོ་ ཡོན་ཏན་ཅན །
རྒྱལ་འདི་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདག་པོར་འོས ॥ ༢༦༦

वीर्योत्कर्षस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।
कन्थाया. कल्पते भोगान्निर्विविक्षोर्निरन्नरान् ॥

བརྩོན་འགྲུས་ ཁྲུད་འཕགས་ བསྟོད་པ་ འདིར །
སྨད་པ་ ཉིད་དེ་ ལོངས་སྤྱོད་ལ །
རྒྱུན་དུ་ སྤྱོད་འདོད་ བུ་མོ་ཡི །
བསམ་པ་ དག་ནི་ བཟློག་པར་ནུས ॥ ༢༦༧

चपलो निर्दयश्चासौ जनः किन्तेन मे सखि ।
आग.प्रमार्जनायैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

གནོད་པ་ རབ་ གཞིལ་ ཉིད་ ཀྱི་ ཕྱིར །
གང་གིས་ སྨན་པར་ སྨྲ་བ་ བསླབས །
སྐྱེ་བོ་ འདི་ནི་ བརྩེ་མེད་ གཡོ །
གྲོགས་མོ་ དེ་ཡིས་ བདག་ལ་ ཅི ॥ ༢༦༨

दोषाभासो गुण' कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।
मान सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्तया ॥ २६९ ॥

སྐྱེ་བོ་ གྲོགས་མོས་ རབ་བསྟན་ ཁྲིངས། །
ཚགས་ ཕྱིར་ བྱེད་པ་ མ་ནུས་ནས། །
སྐྱོན་ ལྟར་ སྣང་ཡང་ ཡོན་ཏན་ གང་། །
སྟན་པར་ སྨྲ་བ་ ཉིད་ ཀྱང་ བསྟན། ॥ ༢༦༩

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रम ।
यथासख्यमिति प्रोक्तं सख्यानङ्क्रम इत्यपि ॥ २७०

དངོས་པོ་ རབ་ཏུ་ བསྟན་པ་ རྣམས། །
རིམ་པ་ བཞིན་དུ་ རྗེས་སྟོན་པ། །
གྲངས་ དང་ རིམ་པ་ བཞིན་ ཅེས་པ། །
གྲངས་ བཞིན་ ཅེས་པར་ རབ་ཏུ་ བརྗོད། ॥ ༢༧༠

[29b]ध्रूवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्यु ति ।
स्नातुमम्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

ཁྲུས་ལ་ ཆུར་ནི་ རབ་ཞུགས་མ། །
ཁྱོད་ཀྱི་ འཛུམ་ མིག་གདོང་ མཛེས་ནི། །

ཀུ་མུད་ ཨུཏྤལ་ པདྨ་ལས།
བཀྲུས་པར ངེས་སོ་ གཟུགས་ཅན་མ ༎ ༢༧༡

प्रेयः प्रियतराख्यान रसवत् रसपेशल ।
ऊर्ज्जस्वि रूढाहकारं युक्तोत्कर्षं च तत्रयं ॥ २७२ ॥

དགའ་བ་ མཆོག་ཏུ་ དགའ་བར་ བརྗོད།
ཉམས་ལྡན་ ཡིད་འོང་ ཉམས་དང་ལྡན།
གཟི་བརྗིད་ ང་རྒྱལ་ སྐྱེས་པ་སྟེ།
དེ་གསུམ་ ཁྱད་འཕགས་ དག་དང་ལྡན ༎ ༢༧༢

अद्य या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।
कालेनैषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

གོ་བིནྡ་ ཁྱོད་ ཁྱིམ་ འོངས་པ།
དེང་ བདག དགའ་བ་ སྐྱེས་པ་ གང་།
དགའ་བ་ འདི་ནི་ སླར་ཡང་ ཁྱོད།
དུས་ཀྱིས་ འོངས་ན་ འབྱུང་བར་ འགྱུར ༎ ༢༧༣

इत्याह युक्तं विदुरो नान्यतस्तादृशी धृतिः ।
भक्तिमात्रसमाराध्यः सुप्रीतश्च ततो हरिः ॥ २७४ ॥

དེ་འདྲའི་ དགའ་བ་ བི་དུ་རས།
གཞན་ ལས་ མིན་ཞེས་ རིགས་པར་ སྨྲས།
དེ་ལ་ གུས་པ་ ཙམ་ གྱིས་ནི།
རབ་བསྟེན་ འཕྲོག་བྱེད་ ཤིན་ཏུ་ དགེས། ༢༧༨

सोमः सूर्यो मरुद्भूमिर्व्योम होतानलो जलं ।
इति रूपाण्यतिक्रम्य त्वां द्रष्टुं देव के वयम् ॥ २७५ ॥

ཟླ་བ་ ཉི་མ་ རླུང་ ས་ མཁའ།
སྦྱིན་སྲེག་བྱེད་ དང་ མེ་ དང་ ཆུ།
ཞེས་པའི་ གཟུགས་ རྣམས་ རབ་འདས་ནས།
ལྷ་ ཁྱོད་ ལྟ་བར་ ངེད་ཀྱིས་ ཅི། ༢༧༩

इति साक्षात्कृते देवे राज्ञो यद्राजवर्मणः ।
प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यनुगम्यतां ॥ २७६

མཛོན་སྲུམ་ བྲུས་པའི་ ལྷ་ལ་ནི །
རྒྱལ་པོ་ དགའ་བའི་ གོ་ཆ་ ཡིས །
དགའ་བ་ རབ་ཏུ་ གསལ་བྱས་ གང་ །
དེ་ ཡང་ དགའ་བར་ རྗེས་ རྟོགས་ བྱ ॥ ༢༧༦

मृतेति प्रेत्य संगतुं यया मे मरणम्मतम् ।
सैवावन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥१७७॥

ཤི་བ་ ཞེས་བྱ་ ཕ་རོལ་ཏུ །
གང་ དང་ འགྲོགས་ ཕྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད །
ཨ་བནྟི་ དེ་ བདག་ གིས་ ནི །
སྐྱེ་ འདི་ཉིད་ལ་ ཇི་ལྟར་ ཐོབ ॥ ༢༧༧

प्राक्प्रीतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्वचः ॥२७८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ སྔར་ བསྟན་ འདིར །
དགའ་བ་ སྒེག་པ་ ཉིད་ གྱུར་པའི །

རང བཞིན་ རྒྱས དང ལྡན་པས་ན །
འདི་ནི་ ཉམས་དང་ལྡན་པའི་ ཚིག ॥ ༢༧༨

निगृह्य केशेष्वाकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।
सोयं दुःशासनः पापो लब्धः कि जीवति क्षणं ॥२७९॥

གང གིས ནག མོ བདག མདུན ནས །
སྐྲ ནས་ བཟུང སྟེ་ དྲངས་གྱུར་པ །
བསྟན་དཀའ སྡིག་ཅན་ ཐོབ པ་ འདི །
སྐད ཅིག་ འཚོ་བར གྱུར་རམ་ ཅི ॥ ༢༧༩

इत्यारुह्य परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः
भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्वचः ॥२८०॥

ཅེས པ འཇིགས སྟེ་ དགྲ་དག་ལ །
ལྟ་བའི ཁྲོ་བ་ མཆོག གི་ མཐར །
འཇིགས་པ་ དྲག པོའི་བདག ཉིད་ གྱུར །
འདི་ ནི་ རོ་དང་ལྡན་པའི་ ཚིག ॥ ༢༨༠

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ट्वा विविधैर्मखैः ।
अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेय पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

མཚོར་བཅས་ས་ལ་མ་རྒྱལ་ཞིང་།
རྣམ་མང་མཆོད་ན་སྦྱི་མ་བྱས་ལ།
སློང་ལ་ནོར་རྣམས་མ་བྱིན་པར།
ས་སྐྱོང་དུ་བདག་ཇི་ལྟར་འགྱུར། ༢༨༡

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।
रसवत्त्वङ्गिरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

ཅེས་པ་སྤྲོ་བ་ཁྱད་འཕགས་བདག།
དཔའ་བོའི་ཉམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་གནས།
ཉམས་ལྡན་ཉིད་དུ་ནུས་པ་ལ།
ཚིག་འདི་དག་ནི་དབང་བ་ཡིན། ༢༨༢

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्ग्या रुजाकरी ।
साधिशेते कथं देवी हुताशनवती चिताम् ॥ २८३ ॥

ལུས་འཇམ་ གང་ལ པདྨ ཡི །

མལ་སྟན་ དག་ ཀྱང་ རྩུབ་བྱེད་མ །

ཀླུ་མོ་ དེ་ནི་ རོ་ཁང་ དག །

སྲིག་ཟ་ལྡན་པར་ ཇི་ལྟར་ ཞལ ॥ ༢༨༣

इति कारुण्यमुद्रिक्तमलं[30b]**कारतया स्मृतम् ।**

तथा परेपि बीभत्सहास्याद्भुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

ཅེས་པ སྙིང་རྗེ་ རྒྱས་པ་ཡི །

རྒྱན་ཉིད་དུ་ནི་ རབ་ཏུ་བཤད །

དེ་བཞིན་ གཞན་ ཡང་ མི་སྡུག་ དང །

བཞད་གད རྨད་བྱུང་ འཇིགས་རུང་ངོ་ ॥ ༢༨༤

पायं पाय तवारीणां शोणित करसपुटैः ।

कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धैरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ।

རྒྱུ་མས བརྒྱན་པའི་ སྲིན་པོ་ རྣམས །

མགོ་མེད་ རོ་དང་ ལྷན་ཅིག་ཏུ །

ལག་པ་ སྨྲར་བས་ ཁྱོད་ དགྲའི་ ཁྲག །
འཕྲུང་ཞིང་ འཕྲུང་ཞིང་ གར་བྱེད་དོ ‖ ༢༨༥

इदमम्लानमालाया लग्नं स्तनतटे तव ।
छाद्यतामुत्तरीयेण नवन्नखपदं सखि ॥ २८६ ॥

གྲོགས་མོ་ མེ་དོག་ མ་རྙིངས་མ །
ཁྱོད་ཀྱི་ ནུ་མའི་ ངོས་ལ་ནི །
སེན་རྗེས་ སར་པ་ ཆགས་པ་ འདི །
སྟོད་གཡོགས་ ཀྱིས་ ནི་ སྒྲིབ་པར་མཛོད ། ༢༨༦

अशुकानि प्रबालानि पुष्प हारादिभूषण ।
शाखाश्च मन्दिराण्येषां चित्रं नन्दनवासिनां ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ ལྗོན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི །
འདབ་མ་ གསར་པ་ གོས་ བཟང་ དང་ །
མེ་དོག་ དོ་ཤལ་ ལ་ སོགས་ཅན །
ཡལ་འདབ་ ཁང་པར་ གྱུར་པ་ མཚར ‖ ༢༨༧

इद मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।
स्मरण यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

རྩེ་མོ་ དག་ལ་ མེ་གནས་པ།
བརྒྱ་བྱིན་གྱི་ ནི་ རྡོ་རྗེ་ གང་།
འདི་ནི་ དྲན་ན་ ལྷ་མིན་ གྱི།
བུད་མེད་ མངལ་ ནི་ ལྷུང་བར་བྱེད། ༢༨༨

वाच्यस्याग्राम्यता योनिर्माधुर्ये दर्शितो रसः ।
इह त्वष्टरसायत्ता रसवत्ता स्मृता गिरा ॥ २८९ ॥

སྙན་པ་ གྲོང་པ་ ཉིད་མིན་ སྐྱེས།
བརྗོད་བྱ་ཡི་ནི་ ཉམས་ དག་ བསྟན།
འདིར་ནི་ ཉམས་ བརྒྱུད་ དབང་བྱས་ཏེ།
ཚིག་རྣམས་ ཉམས་དང་ལྡན་པར་ བཤད། ༢༨༩

अपकर्त्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्भयम् ।
विमुखेषु न मे खड्गः प्रहर्तुं जातु वाञ्छति ॥ २९० ॥

བདག་ནི་ གནོད་པ་བྱེད་པོ་ ཞེས །
ཁྱོད་ཀྱི་ སྙིང་ལ་ འཇིགས་ མ་བྱུང་ །
བདག་གི་ རལ་གྲི་ཕྱིར་ ཕྱོགས་རྣམས །
ནམ་ཡང་ འཇོམས་པར་ འདོད་ མ་ཡིན ༎ ༢༩༠

[31a] इति मुक्त. परो युद्धे निरुद्धो दर्पशालिना ।
पुंसा केनापि तज्ज्ञयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २९१ ॥

ཞེས་པ་ སྐྱེས་བུ་ དྲེགས་ལྡན་ འགས །
གཡུལ་དུ་ གཞན་ནི་ བཀག་བྱས་ནས །
གཏོང་བ་ རི་ལྷ་བུ་ ལ་སོགས །
གཟི་བརྗིད་ལྡན་པར་ ཤེས་པར་བྱ ༎ ༢༩༡

अर्थमिष्टमनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
यत्प्रकारान्तराख्यान पर्यायोक्तन्तदिष्यते ॥ २९२ ॥

འདོད་དོན་ དངོས་སུ་ མ་བརྗོད་པར །
དེ་ཉིད་ འགྲུབ་པར་བྱ་བའི་ ཕྱིར །

རྣམ་པ་ གཞན་དག་ བརྗོད་པ་ གང་ །
དེ་ནི་ རྣམ་གྲངས་ བརྗོད་པར་ འདོད ༎ ༢༩༢

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरीम् ।
तमहं वारयिष्यामि युवाभ्यां स्वैरमास्यताम् ॥ २९३ ॥

ས་ཧ་ཀཱ་རའི་ སྙི་མ་རྣམས །
གཞན་གྱིས་གསོལ་ འདིས་ ཟ་བར་བྱེད །
དེ་ནི་ བདག་གིས་ བཟློག་པར་བགྱི །
ཁྱེད་ གཉིས་ དལ་གྱིས་ འདུག་པར་མཛོད ༎ ༢༩༣

संगमय्य सखी यूना सकेते तद्गतोत्सवम् ।
निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं तत ॥ २९४ ॥

གྲོགས་མོ་ སྐྱེས་ཕྲན་ ཕྲད་བྱས་ནས །
དེ་དག་འདུས་པར་ དགའ་བ་ཡི །
དགའ་སྟོན་ སྒྲུབ་ཏུ་ གཞུག་ འདོད་པས །
འགའ་ཞིག་ དེ་ནས་ སོང་བར་གྱུར ༎ ༢༩༤

किञ्चिदारभमाणस्य कार्यं दैवबलात्पुन ।
तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २९५ ॥

བྱ་བ་ འགའ་ཞིག་ རྩོམ་པ་ལ།
སྐལ་བ་ཡི་ ནི་ སྟོབས་ལས་ ཀྱང་།
དེ་ཡི་ སྒྲུབ་བྱེད་ ཕུན་ཚོགས་ གང་།
དེ་ ནི་ ཀུན་ཏུ་ ཕན་པར་ བརྗོད། ༢༩༥

मानन्तस्या निराकर्तुं पादयोर्मे नमस्यतः ।
उपकाराय दिष्ट्येदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २९६ ॥

ཁེངས་པ་ གཞོམ་ཕྱིར་ དེ་ཡི་ ནི།
རྐང་པ་དག་ལ་ ཕྱག་འཚལ་བ།
བདག་ལ་ ཕན་ཕྱིར་ སྐལ་བ་ཡི།
འབྲུག་གི་ སྒྲ་ འདི་ གྲགས་པར་ གྱུར། ༢༩༦

आशयस्य विभूतेर्वा यन्महत्त्वमनुत्त[31b]मं ।
उदात्तं नाम तम्प्राहुरलंकार मनीषिणः ॥ २९७ ।:

བསམ་པ ལམ་ ནི་ འགྲོར་པ ཡི །
ཆེན་པོ་ ཉིད་ནི་ ཟླ་མེད་ གང །
དེ་ ནི་ རྒྱ་ཆེ་ ཞེས་པ་ཡི །
ཀུན་དུ་ མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ བརྗོད ॥ ༢༩༧

गुरोः शासनमत्येतुं न शशाक स राघव. ।
यो रावणशिरश्छेदकार्यभारेप्यविक्लवः ॥ २९८ ॥

རཱ་བ་ཎ་ཡི་ མགོ་གཅོད་པའི །
བྱ་བའི་ ཁུར་ ཡང་ བཟོད་པ་ཡི །
ར་གྷུའི་བུ་ རེས་ བླ་མ་ཡི །
བཀའ་ལས་ འདའ་བར་ ནུས་མ་ གྱུར ॥ ༢༩༨

रत्नभित्तिषु संक्रान्तैः प्रतिबिम्बशतैर्वृतः ।
ज्ञातो लङ्केश्वरः कृच्छ्रादाञ्जनेयेन तत्त्वतः ॥ २९९ ॥

རིན་ཆེན་ རྩིག་པ་ ལ་ འཕོས་པའི །
གཟུགས་བརྙན་ བརྒྱ་ཡིས་ བསྐོར་གྱུར་པ །

ཡཀྵའི་དབང་ཕྱུག་ དེ་ ཁོན།
ཨཏྟཱན་ བྲུས་ དཀར་བས་ ཤེས༎ ༢༩༩

पूर्व्वत्राशयमाहात्म्यमत्राभ्युदयगौरवं ।
सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

སྔ་མར་ བསམ་པའི་ བདག་ཉིད་ཆེ།
འདིར་ནི་ མངོན་པར་ འབྱོར་པས་ བརླིང་།
རྒྱ་ཆེ་ གཉིས་པོ་ འདི་དག་ ཀྱང་།
རབ་ཏུ་ གསལ་བར་ མཆོན་པ་ ཡིན༎ ༣༠༠

अपह्नुतिरपह्नुत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शन ।
न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བསྙོན་དོར་དག་ ནི་ བསྙོན་བྱས་ནས།
དོན་གཞན་ ཅུང་ཟད་ བརྗོད་པ་ སྟེ།
འདོད་པ་དག་ནི་ མདའ་ལྔ་པ།
མ་ཡིན་ སྒྲོ་ལྡན་ སྟོང་ཕྲག་ ཡོད༎ ༣༠༡

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिश्शीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

ཙནྡན་ ཟླ་འོད་ དལ་བུ་ ཡི།
ལྷོ་ ཕྱོགས་ དྲི་ཡི་ བཞོན་པ་ འདི།
མེ་ཡི་ རང་བཞིན་ སྦྱོར་བ་ སྟེ།
གཞན་གྱི་ ངོར་ནི་ བསིལ་ ཞེས་ གྲགས ॥ ༣༠༢

शैशिर्यमभ्युपेत्यैव परेष्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शनात्तस्य सैषा विषयनिह्नुति ॥३०३॥

འདོད་ལྡན་གྱིས་ ནི་ གཞན་ ལ་ རེ།
བསིལ་བར་ ཁས་བླངས་ བདག་ཉིད་ལ།
ཚ་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བསྟན་ ཕྱིར།
འདི་ནི་ ཡུལ་ལ་ བསྙོན་དོར་རོ ॥ ༣༠༣

अमृतस्यन्दि[32a]किरणश्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्थात्मा विषनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

བདུད་རྩི་ ཟག་པའི་ འོད་ཟེར་ཅན།
ཟླ་བ་ ཞེས་པར་ བདག་ཅག་ འདོད།
དོན་གྱི་ བདག་ཉིད་ འདི་ནི་ གཞན།
དུག་ཟག་ ཟེ་དང་ ལྡན་པ་ ཉིད།། ༣༠༤

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
उक्तं स्मरात्तनेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

ཅེས་པ་ ཟླ་བའི་ ཟླ་ དངོས་ ཉིད།
བཟློག་ནས་ དོན་ གཞན་ བདག་ཉིད་ ནི།
འདོད་པས་ གཟིར་བ་ བརྗོད་པའི་ ཕྱིར།
འདི་ནི་ རང་བཞིན་ བསྙོན་དོར་ འདོད།། ༣༠༥

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्वेव दशिता ।
इत्यपह्नुतिभेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तर. ॥३०६॥

དཔེ་ཡི་ བསྙོན་དོར་ སྔར་ ཉིད་དུ།
དཔེ་རྣམས་ ལ་ ནི་ རབ་བསྟན་ཏོ།

འདི ཡིས་ བསྐྱོན་ ཇོར་ དབྱེ བ་ རྣམས །
མཆོན་བྱ་དག་ ལ་ རྒྱ ཆེར མཆོན ॥ ༣༠༦

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྦྱར བ་ གཟུགས་གཅིག ལྡན པའི་ ཚིག །
དུ་མའི་ དོན་ཅན ཉིད་དུ འདོད །
དེ་ཚིག་ ཐ་དད་ མིན པ་ དང་ །
ཐ་དད ཚིག་ འདྲ རྣམ་པ གཉིས ॥ ༣༠༧

असावुदयमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुभिः करैः ॥३०८॥

ཨུ་ད་ཡ་ གནས་ མཛེས་པ་ཅན །
དཀྱིལ་འཁོར ལ ཆགས་ རྒྱལ་པོ་ འདི །
སྨྲི་དུ་ཀ་རས་ འཛིག རྟེན་ གྱི །
ཡིད་ནི་ རབ་ཏུ་འཕྲོག་པར་བྱེད ॥ ༣༠༨

दोषाकरेण सम्बद्धनक्षत्रपथवर्त्तिना ।
राज्ञा प्रदोषो मामित्थमप्रियं किन्न बाधते ॥३०६॥

རྒྱ་སྐར་ལམ་ལ་རབ་གནས་པ།
མཚན་མོར་བྱེད་པ་དང་འབྲེལ་ནས།
སྐྱོད་ལ་ཡིས་ནི་བདག་འདི་ལྟར།
དགའ་བ་མེད་པར་ཅིས་མ་མནར། ༣༠༩

उपमारूपकाक्षे[32b]पव्यतिरेकादिगोचराः ।
प्रागेव दर्शिता श्लेषा दश्यन्ते केचनापरे ॥३१०॥

དཔེ་དང་གཟུགས་ཅན་འགོག་པ་དང་།
ཟློག་པ་ཅན་སོགས་སྤྱོད་ཡུལ་ཅན།
སྦྱར་བ་གོང་དུ་བསྟན་ཟིན་ཏེ།
གཞན་པ་འགའ་ཞིག་བསྟན་པར་བྱ། ༣༡༠

अस्त्यभिन्नक्रियः कश्चिदविरुद्धक्रियोपरः ।
विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमवानपि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྲུ་བ་ ཕྲ་དད་མིན །
གཞན་པ་ བྲུ་བ་ འགལ་མིན་ ཡོད །
འགལ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ གཞན །
སྤྲུར་བ ངེས་པ་ཅན ཡང་ ཡོད ॥ ༣༡༡

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
तेषां निदर्शनेष्वेव रूपमाविर्भविष्यति ॥३१२॥

ངེས པ་ འགོག་པ་ གཟུགས་ བརྗོད་ དང་ །
འགལ་མེད་ འགལ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ །
དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་ །
དཔེར་ བརྗོད་ དག་ལ་ གསལ་བར་འགྱུར ॥ ༣༡༢

वक्रस्वभावमधुराः शसन्त्यो रागमुल्वणम् ।
दृशो दूत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འཁྲུག་ཅིང་ ཡིད་འོང་ རང་བཞིན་ཅན །
ཆགས་པ་ གསལ་བ་ སྤྲོནར་བྱེད་མ །

མཛེས་མས་ བསྐུལ་བའི་ མིག་ དང་ ནི །
ཕོ་ཉ་མོས་ ཀྱང་ མཛའ་བོ་ འགུགས ༎ ༣༡༣

मधुरा रागवर्धिन्य· कोमला· कोकिलागिरः ।
आकर्ण्यन्ते मद्कलाः श्लिष्यन्ते चासितेक्षणा ॥३१४॥

ཡིད་འོང་ ཆགས་པ་འཕེལ་བར་བྱེད །
འཇམ་ཞེང་ མོས་པའི་ གདངས་སྙན་ཅན །
ཁུ་བྱུག་སྨྲ་ ནི་ ཐོས་གྱུར་ཏེ །
དཀར་མིན་མིག་ཅན་དག་ལ་ འཁྱུད ༎ ༣༡༤

रागमादर्शयन्नेष वारुणीयोगवर्धितः ।
पराभवति घर्मांशुरङ्गजस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

ཆུས་ དང་ སྦྱར་ འཕེལ་བ་ཡི །
དམར་བ་ རབ་ཏུ་སྟོན་བྱེད་ ཅིང །
ཚ་ཟེར་ཅན་ འདི་ ནུབ་གྱུར་ཏེ །
ལུས་སྐྱེས་ དག་ ནི་ རྣམ་པར་རྒྱས ༎ ༣༡༥

निस्त्रिंशत्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।
शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

རལ་གྲི་ཉིད་ལ་ནི་སྡི་ཤཾ།
གཞུ་ཉིད་ལ་ནི་འཁྱོག་པོ་ཉིད།
མི་དབང་འདི་ཡི་མཱརྒ་ཎ།
མདའ་རྣམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ཡིན། ‖ ༣༡༦

पद्मानामेव दण्डेषु कण्टकस्त्वयि रक्षति ।
अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिगनेष्वपि ॥३१७॥

ཁྱོད་ཀྱིས་བསྐྱངས་ལ་ཚེར་མ་ནི།
པདྨའི་ཡུ་བ་ཉིད་ལ་འོ།
འོན་ཀྱང་ཆགས་ཅན་འཁྲིག་པ་ལ།
འཁྱུད་པར་གྱུར་པ་རྣམས་ལའང་མཐོང་། ‖ ༣༡༧

महीभृद्भूरिकटकस्तेजस्वी नियतोदयः ।
दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥

ས འཛིན་ ཀ་ཊ་ཀ་ མང་ཉིད་ །
གཟི་བརྗིད་ལྡན་པ་ ངེས་པར དར །
སྐྱེ དགུའི་བདག་ བྱུང་ སྒྱུར་བ་སྟེ །
ཛེ བོ་ ནུས་པ འཛིན ཡང་དེ ༎ ༣༡༨

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
देवोप्यविबुधो जज्ञे शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१९॥

ཉམས་མེད ཡིན་ ཡང ཆོས་གཅོད་མིན །
རྒྱལ་པོ་ ཡིན་ ཡང ཟད་མི་ཤེས །
བདེ་བྱེད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད །
ལྷ ཡང་ བི་བུ་དྷ་ མིན་ཤེས ༎ ༣༡༩

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

ཁྱད་པར་ རབ་ཏུ་ བསྟན་པའི་ཕྱིར །
ཡོན་ཏན རིགས་ དང བྱ་བ་ སོགས །

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།
དེ་ནི་ ཁྱད་པར་ བརྗོད་པར་ འདོད། ༣༢༠

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।
तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་ཏོག་ གཞུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།
ཙུབ་པ་མ་ཡིན་ རྣོ་བའང་མིན།
དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།
ས་གསུམ་ དག་ལས་ རྒྱལ་བར་གྱུར། ༣༢༡

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसभवा ।
तथाप्येषा तपोभङ्ग विधातु वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བུ་མོ་ མིན།
དྲི་ཟའི་ རིགས་ལས་ བྱུང་བའང་ མིན།
དེ་ལྟ་ མོད་ཀྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།
དཀའ་ཐུབ་ གཞོམ་པ་ སྒྲུབ་པར་ ནུས། ༣༢༢

न बद्धा भ्रुकु[33b]टिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न च रक्ताभवद्दृष्टिर्ध्वस्तञ्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

ཁྲོ་གཉེར་ དག་ནི་ མ་བསྒྱུས་ ཤིང་ །
སོ་ཡི་ གཡོགས་ ཀྱང་ མ་བསྐྱོད་ལ །
མིག་ཀྱང་ དམར་པོར་ མ་གྱུར་པར །
དགྲ་ཡི་ རིགས་ ནི་ ཉམས་པར་བྱས ॥ ༣༢༣

न रथा न च मातंगा न हया न च पत्तयः ।
स्त्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रय ॥३२४॥

ཤིང་རྟ་ མེད་ ཅིང་ གླང་པོའང་ མེད །
རྟ་མེད་ རྐང་ཐང་མེད་པར་ ཡང་ །
ཟུར་མིག་ཉིད་ ཀྱིས བུད་མེད་རྣམས །
འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ དག་ལས་ རྒྱལ ॥ ༣༢༤

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगत्त्रयं ॥३२५॥

ཤིང་རྟ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་ །
ཁ་ལོ་པ་ ཉམས་ རྟ་མི་མཉམ །
དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཟི་བྱིན་ཅན །
ཉི་མས་ འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མནན ॥ ༣༢༥

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
अयमेव क्रमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཟི་བྱིན་ཅན་ སོགས་ ཁྱད་པར་ལས །
འདི་ནི་ རྒྱུ་ཡི་ ཁྱད་པར་ བརྗོད །
རིམ་པ་ འདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ནི །
དབྱེ་བ་རྣམས་ ཀྱང་ བརྟག་པར་བྱ ॥ ༣༢༦

विवक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བརྗོད་ འདོད་ ཡོན་ཏན་ ཁྱད་འཕགས་ དང་ །
མཚུངས་པར་ བྱས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི །

བསྟོད་ སྐད་ དོན་དུ་ བསྒྲགས་པ་ གང་ །
དེ་ནི་ མཚུངས་པར་ སྦྱོར་བར་ བཤད ༎ ༣༢༧

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।
बिभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤིན་རྗེ་ ལུས་ངན་ ཆུ་ལྷ་དང་ །
མིག་སྟོང་པ་ དང་ ཁྱོད་ཉིད་ ཀྱང་ །
འཇིག་རྟེན་ སྐྱོང་བ་ ཞེས་པའི་ སྒྲ །
ཡུལ་གཞན་མེད་པར་ རྣམ་པར་ འཛིན ༎ ༣༢༨

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।
क्षणद्वयन्न तिष्ठ[34a]ति घनरब्धान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་ དགས་ མིག་ དང་ འགྲོགས་པ་ དང །
གློག་གི་ རྩེ་དགའ་དག་ དང་ ནི །
སྤྲིན་གྱི་ རྩོམ་པའང་ རང་བཞིན་གྱིས །
སྐད་ཅིག་ གཉིས་པར་ མི་ གནས་སོ ༎ ༣༢༩

विरुद्धानाम्पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

འགལ་ཟླ་ སྒྲུབ་བྱེད་ སླད་དུ་ནི །
གང་དུ་ དངོས་པོ་ འགལ་བ་ རྣམས །
ཡང་དག་ འགྲོགས་པར་ རབ་བསྟན་པ །
དེ་ནི་ འགལ་བ་ བཤད་ དེ་ དཔེར ॥ ༣༣༠

कूजितं राजहंसानां वर्द्धते मदमञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

ངང་པའི་ རྒྱལ་པོ་ རྣམས་དག་ནི །
སྨྲོས་པའི་ གདངས་སྙན་ ཆ་ཆེ་ འཕེལ །
རྨ་བྱ་རྣམས་ཀྱི་ སྒྲ་དག་ནི །
ཡིད་འོང་ ཉིད་དང་ བྲལ་བས་ཉམས ॥ ༣༣༡

•

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बर दुर्दिनायते ।
रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

དབྱར་སྐྱེས་ ཆུ་འཛིན་དག་གིས་ནི །
ནམ་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ ལྟ་བུར་ སྤྱོད །
ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགྲོ་བ་ཡི །
ཡིད་ནི་ ཀུན་དུ་ ཆགས་པར་གྱུར ॥ ༣༣༢

तनुमध्यं पृथुश्रोणि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
नतनाभि वपुः स्त्रीणां क न हन्त्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

སྐེད་པ་ ཕྲ་ ཞིང་ རོ་སྨད་ སྦོམ །
མཆུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་བ་ མིན །
ལྟེ་བ་ དམའ་ ཞིང་ ནུ་མ་ མཐོ །
བུད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སུ་ མ་ བཅོམ ॥ ༣༣༣

मृणालबाहु रम्भोरु पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

པད་རྩའི་ ལག་པ་ ཆུ་ཤིང་ བརླ །
པདྨའི་གདོང་ དང་ ཨུཏྤལ་ མིག །

ཁྱོད་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་རྣམས །
གདུང་ནུས་ མིན་ནམ ལུས་ཅན་མ ། ༣༣༤

उद्यानमारुतोद्धूताश्चूताश्चम्पकरेणवः ।
उदश्रयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३५॥

སྤྲེད་ཚལ་ རླུང་གིས རབ་བསྐྱོད་པ །
ཙཱུ་ཏ་ཙམྤ་ཀ་ཡི་རྡུལ །
རིག་པ་མིན་ ཡང་ འགྲོན་པོ་ཡི །
མིག་ལ་ མཆི་མ་ཟག་པར་བྱེད ॥ ༣༣༥

कृष्णार्जुनानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।
याति विश्वसनीयत्व कस्य त कलभाषिणि ॥३३६॥

སྙན་པར་སྒྲོགས་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་མིག །
ནག་དཀར་རྗེས་སུ་དམར་བ་ ཡང་ །
རྣ་བ་དག་ལ་ བརྟེན་པ་ ནི །
སུ་ཡི་ ཡིད་བརྟན་ཉིད་དུ་འགྱུར ॥ ༣༣༦

इत्यनेकप्रकारोयमलंकार प्रतीयते ।
अप्रस्तुतप्रशसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

དེ་ལྟར་རྒྱན་འདི་རྣམ་པ་ ནི །
དུ་མ་ཉིད་དུ་ རབ་རྟོགས་བྱ །
སྐབས་ མིན་ འདོད་པས་ བསྟོད་པ་ ནི །
སྐབས་སུ་ མ་བབ་ བསྟོད་པ་ ཡིན ॥ ༣༣༧

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।
अर्थैरयत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

གཞན་མི་བསྟེན་པ་ རི་དྭགས་རྣམས །
འབད་མེད་ རྙེད་པར་སླ་བའི་ནོར །
ཆུ་དང་རྩྭ་ཡི་མྱུག་སོགས་ཀྱིས །
ནགས་རྣམས་སུ་ ནི་ བདེ་བར་ འཚོ ॥ ༣༣༨

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।
राजानुवर्त्तनक्लेशनिर्विण्णेन मनस्विना ॥३३९॥

རྒྱལ་པོའི་རྗེས་འབྲངས་ ཉོན་མོངས་པ །
ཤིན་ཏུ་ སྐྱོ་བའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས །
སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་དུ་ འདིར །
རི་དྭགས་ སྤྱོད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྟགས ॥ ༣༣༩

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।
दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གལ་ཏེ་ སྨད་པ་ བཞིན་ བསྟོད་ནས །
སྐྱོན་ ལྟར་ སྣང་བའི་ཡོན་ཏན་ཉིད །
གང་དུ་ ཉེ་བར་ཐོབ་གྱུར་པ །
འདི་ནི་ ཐོལ་གྱིས་བསྟོད་པར་ བཤད ॥ ༣༤༠

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।
त्वया राज्ञापि सैवेयं जिता मा भून्मदस्तव ॥३४१॥

རཱ་མ་དཀའ་ཐུབ་པ་ཡིས་ ཀྱང་ །
འབྱུང་པོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་རྒྱལ །

དེ་ཉིད་ རྒྱལ་པོ་ ཁྱོད་ཀྱིས་ ཀྱང་ །
འདི་ལ་ ཁྱོད་ནི་ རྒྱགས་ མ་ མཛད ॥ ༣༤༡

पुंसः पुराणादाच्छिद्य श्रीस्त्वया परिभुज्यते ।
राजन्निक्ष्वाकुवंशस्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

སྔོན་གྱི་སྐྱེས་བུ་ ལས་ བཅད་ནས །
དཔལ་འདི་ཁྱོད་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་སྤྱོད །
རྒྱལ་པོ་ བུ་རམ་ཤིང་པའི་རྒྱུད །
ཁྱོད་ཀྱི་ འདི་ནི་ རིགས་སམ་ཅི ॥ ༣༤༢

भुजंगभोगसंसक्ता कलत्रं तव मेदिनी ।
अहंकारः पराङ्कोटिमारोहति कुतस्तव ॥३४३॥

ཁྱོད་ཀྱི་ བཙུན་མོས་ གཞི་ནི །
ལག་འགྲོའི་ ལྡོ་ག་དག་ལ་ཆགས །
ཅི་སྐད་ ཁྱོད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་ནི །
མཆོག་གི་མཐའ་རུ་ འཛེགས་པར་གྱུར ॥ ༣༤༣

इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ।।३४४।।

དེ་ལྟར་ ཉེ་བར་ མཚོན་པ་ལས །
སྦྱར་བ་ཅན་ དང་གཞན་དག་གི །
ཟོལ་གྱིས་བསྟོད་པའི་ རྣམ་པ་རྣམས །
རབ་ཏུ་རྒྱ་ཆེ་མཐའ་དང་བྲལ ༎ ༣༨༨

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्श्येत यदि स्यात्तन्निदर्शनं ।।३४५।।

གལ་ཏེ་ དོན་གཞན་ འཇུག་པ་ ཡིས །
དེ་དང་མཚུངས་པའི་འབྲས་བུ་འགའ །
མཆོག་གམ་ མཆོག་མིན་ སྟོན་བྱེད་པ །
དེ་ནི་ ངེས་པར་བསྟན་པ་ ཡིན ༎ ༣༨༩

उदयन्नेव सविता पद्मेष्वर्पयति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रह ।।३४६।।

ཉི་མ་ འཆར་བ་ཉིད་ཀྱིས་ ནི །
པདྨ་ རྣམས་ལ་ དཔལ་སྟེར་བྱེད །
ཕུན་ཚོགས་རྣམས་ཀྱི་ འབྲས་ བུ་ དག །
གྲོགས་ པོ་རྗེས་འཛིན་ བསྟན་པའི་ ཕྱིར ॥ ༣༤༦

यातिचन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराजी पराभवं ।
सद्योराजविरुद्धाना सूचयन्ती दुरन्ततां ॥३४७॥

ཟླ་བའི་ཟེར་གྱིས་ རེག་པ་ན །
མུན་པའི་ཕྲེང་བ་ ནུབ་པར་འགྱུར །
འཕྲལ་ལ་རྒྱལ་པོ་ དང་ འགལ་རྣམས །
ངན་པའི་མཐར་འགྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ॥ ༣༤༧

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणा ।
अर्थाना यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་ཏན་ལས་རྣམས་ ལྷན་ཅིག་གི །
དངོས་པོ་ བརྗོད་པ་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད །

དོན་རྣམས་ བསྒྲོལ་བ་ གང་ ཡིན་པ །
ཡོངས་བརྗེས་ཡིན་ཏེ་ དེ་དག་ དཔེར ༎ ༣༤༨

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।
पाण्डराश्च ममैवाङ्गैः सह ताश्चन्द्रभूषणाः ॥३४९॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས །
བདག་གི་དབུགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་ །
ཟླ་བའི་རྒྱན་ལྡན་མ་རྣམས་ ཀྱང་ །
བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ སྐྱ ༎ ༣༤༩

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।
पतन्ति च समन्तेषामश्रुभिर्मलयानिलाः ॥३५०॥

འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ སྨོངས་པ་ དང་ །
ལྷན་ཅིག་ ཙཱུ་ཏའི་ཏོག་པ་རྒྱས །
དེ་དག་ མཆི་མ་ དང་ མཉམ་དུ།
མ་ལ་ཡ་ཡི་རླུང་དག་ འབབ ༎ ༣༥༠

कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिवनवायवः ।
यान्ति सार्धं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरभिवासराः ॥३५१॥

ཁུ་བྱུག་ སྒྲོགས་པའི་སྐལ་བཟང་ དང་ །
ནགས་ཀྱི་རླུང་ ནི་ དྲི་བཟང་ དང་ །
དཔྱིད་ཉིན་ སྐྱེ་བོའི་ ཀུན་དགའ་རྣམས །
ལྷན་ཅིག་དག་ཏུ་ འཕེལ་བར་འགྱུར ॥ ༣༥༡

इत्युदाहृतयो दत्ताः सहोक्तेरत्र काश्चन ।
क्रियते परिवृत्तेश्च किञ्चिद्रूपनिरूपणं ॥३५२॥

དེ་ལྟར་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད་པ་ཡི །
དཔེར་བརྗོད་ འགའ་ཞིག་ འདིར་ བྱས་ཏེ །
ཡོངས་སུ་བརྗེས་པའི་ རང་བཞིན་ ཡང་ །
ངེས་པར་བསྟན་པ་ ཅུང་ཟད་བྱ ॥ ༣༥༢

शस्त्रप्रहारन्ददता भुजेन तव भूभुजा ।
चिरार्जितं हृतं तेषां यशः कुमुदपाण्डरं ॥३५३॥

ས་སྐྱོང་རྣམས་ལ་ མཚོན་ བསྣུན་པ །
སྟར་བྱེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས །

དེ་དག་ གྲགས་པ་ ཀུ་མུད་ དཀར །

ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྒྲུབས་པ་ ཕྲོགས ‖ ༣༥༣

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसन यथा ।
पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་པར་འདོད་པའི་དངོས་པོ་ལ །

སྨོན་པ་ ཤིས་བརྗོད་ ཅེས་བྱ་ དཔེར །

ངག་ཡིད་ སྤྱོད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི །

སྣང་བ་ དམ་པས་ ཁྱོད་ལ་ སྲུངས ‖ ༣༥༨

अनन्वयससंदेहावुपमास्वेव दर्शितौ ।
उपमा रूपक[36a]चापि रूपकेष्वेव कीर्त्तितम् ॥३५५॥

རྗེས་འགྲོ་མེད་དང་ཐེ་ཚོམ་ཅན །

དག་ནི་ དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བསྟན །

དཔེ་ཡི་གཟུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདིར །

གཟུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ ངེས་པར་བསྒྲགས ‖ ༣༥༥

उत्प्रेक्षाभेद एवासावुत्प्रेक्षावयवोपि च ।
नानालङ्कारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

རབ་རྟོག་ཆ་ཤས་ འདི་ ཡང་ ནི །
རབ་རྟོག་དག་གི་དབྱེ་བ་ཉིད །
ཐ་དད་རྒྱན་རྣམས་བསྲེས་པ་ནི །
སྤྲེལ་མ་དག་ཏུ་ བརྗོད་པ་སྟེ ། ༣༥༦

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

ཡན་ལག་ཡན་ལག་ཅན་དངོས་ཀྱི །
སྐབས་ དང་ ཐམས་ཅད་ སྟོབས་མཚུངས་ཉིད །
ཅེས་པའི་ལུགས་ གཉིས་ སྤྲེལ་མ་ཡི །
རྒྱན་དག་ལ་ ནི་ མཚོན་པར་བྱ ། ༣༥༧

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखश्रियं ।
कोषदण्डसमग्राणां किमेषामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཛེས་མ་ ཁྲོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དཔལ། །
པདྨ་དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད། །
མཛོད་དང་ ལྷུ་བ་ ཕུན་ཚོགས་པ། །
འདི་ལ་ བྱ་ དཀའ་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད། ། ༣༥༨

श्लेषः सर्वासु पुष्णाति प्रायो वक्रोक्तिषु श्रियं ।
भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मय ॥३५९॥

རང་བཞིན་ བརྗོད་དང་ འཁྱོག་ བརྗོད་ཅེས། །
ངག་གི་ རང་བཞིན་ ཐ་དད་ གཉིས། །
འཁྱོག་པོར་ བརྗོད་པ་ ཐམས་ཅད་ལ། །
ཕལ་ཆེར་ སྦྱར་བས་ དཔལ་རྒྱས་བྱེད། ། ༣༥༩

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
भावः कवेरभिप्रायः काव्येष्वासिद्धि यः स्थितः ॥३६०॥

སྙན་ངག་མཁན་ བསམ་དགོངས་པ་ སྟེ། །
སྙན་ངག་ གྲུབ་པར་ གང་ གནས་པ། །

རབ་སྦྱོར་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན། །

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བརྗོད། ॥ ༣༦༠

परस्परोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।
विशेषणाना व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཚིགས་རྣམས་ཀུན། །

ཕན་ཚུན་ ཕན་པར་བྱེད་པ་ ཉིད། །

དོན་དང་ བྲལ་བའི་ ཁྱད་པར་ རྣམས། །

མ་བྱས་ གནས་སུ་ བསྒྲགས་པ་ དང་། ॥ ༣༦༡

व्यक्तिरुक्तिक्रमबलाद्गम्भीरस्यापि वस्तुनः ।
भावायत्तमिदं सर्वमिति त भाविकं विदुः । ३६२

བརྗོད་རིམ་ སྦྱོར་བས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི། །

ཟབ་མོ་དག་ ཀྱང་ གསལ་བ་སྟེ། །

དེ་ཀུན་ དགོངས་པའི་དབང་གྱུར་ ཕྱིར། །

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག ॥ ༣༦༢

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिद् चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

གང་ཡང་ མཚམས་ སྦྱོར་ ཡན་ལག་ དང་ །
འཇུག་པའི་ཡན་ལག་ མཚན་ ཉིད་ སོགས །
ལུང་ གཞན་ དག་ཏུ་ བརྗོད་ འདི་ ཡང་ །
རྒྱན་ཉིད་དུ་ ནི་ བདག་ཅག་ འདོད ༎ ༣༦༣

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणां ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमल विशेषान् ॥ ३६४

རྒྱ་ཆེ་ མཐའ་ཡས་ རབ་བསྡུས་ཚད་དུ་ གྱུར་པ་ཡི །
རྒྱན་རྣམས་ དག་གི་ལམ་ འདི་ཉིད་ ནི་རྣམ་པར་ཕྱེ །
བརྗོད་པའི་ཡུལ་ལས་ འདས་པར་ ཡོངས་སུ་གནས་པ་ཡི །
ཁྱད་པར་རྣམས་ནི་ གོམས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དབྱེ་བར་ནུས ༎ ༣༦༤

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीय परिच्छेदः ॥

ཞེས་ སློབ་དཔོན • དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྙན་ངག་ མེ་ལོང་ལས་ དོན་གྱི་རྒྱན་ ཅེས་བྱ་བ་ ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ གཉིས་པའོ ༎

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसहतेः ।
यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

བར་མ་ཆོད་དང་ བར་ཆོད་ བདག །
ཡི་གེ་ ཚོགས་པ་ བསྐྱར་བ་ནི །
ཟུང་ལྡན་ དེ་ཡང་ རྐང་པ་ཡི །
དང་པོ་ བར་ མཐའ་ སྤྱོད་ ཡུལ་ ཅན ༎ ༡

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।
आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

གཅིག་ གཉིས་ གསུམ་ བཞི་ རྐང་པ་ཡི །
ཟུང་ལྡན་རྣམས་ཀྱི་ རྣམ་རྟོག་ནི །
ཐོག་མ་ བར་ མཐའ་ བར་ དང་ མཐའ །
བར་དང་ ཐོག་མ་ ཐོག་མཐའ་ ཀུན ༎ ༢

[37a] अत्यन्तबहवस्तेषां भेदा. सभेद्योनयः ।
सुकरा दुष्कराश्चैव दर्श्यन्ते तत्र केचन ॥३॥

ཀུན་ཏུ་ དབྱེ་བ་ ལས་ སྐྱེས་པ །
དེ་དག་ དབྱེ་བ་ ཤིན་ཏུ་ མང་ །
དེ་ལ་ བྱ་སླ་ བྱ་དཀའ་ ཡང་ །
དཀའ་ཞིག་ དག་ནི་ བསྟན་པར་བྱ ॥ ༣

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये जने ।
खण्डिता कण्ठमाश्लिष्य तमेव कुरु सत्रपम् ॥४॥

གྲོགས་མོ་ མཛའ་བོའི་ སྐྱེ་བོ་ལ །
ཁེངས་པ་ འདི་དང་ འགྲོགས་མ་བྱེད །
བསྐུས་པའི་ མགྲིན་པ་ ནས་ འཁྱུད་ལ །
དེ་ཉིད་ ངོ་ཚ་ལྡན་པར་ གྱིས ॥ ༤

मेघानादेन हंसानां मदनोमदनोदिना ।
नुन्नमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहते ॥५॥

ངང་པ་རྣམས་ཀྱི་ དྲིགས་ འཛོམས་པ །
སྤྲིན་གྱི་ སྒྲ་ ཡིས་ ཀྱོས་ བྱེད་ ནི །
དགའ་མ་ དང་ བཅས་ བྱུད་མེད་ཀྱི །
ཁངས་ བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད ॥ ༥

राजन्वत्यः प्रजा जाता भवन्त प्राप्य साम्प्रतं ।
चतुरं चतुरंभोधिरसनोर्वीकरग्रहे ॥६॥

ཆུ་གཏེར་བཞི་ཡི་ སྐ་རགས་ཅན །
ས་ཡི་ལག་ དབྱུ་འཛིན་ལ་ མཁས །
ཁྱོད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ ནི །
སྐྱེ་དགུ་ རྒྱལ་པོ་ བཟང་ ལྡན་ གྱུར ॥ ༦

अरण्यं कैश्चिदाक्रान्तमन्यैः सद्म दिवौकसां ।
पदातिरथनागाश्वरहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀང་ཐང་ ཤིང་རྟ་ གླང་པོ་དང །
རྟ་ དང་ བྲལ་བ་ ཁྱོད་ཀྱི་ དགྲ །

འགའ་ ཞིག་ ནགས་དང་ གཞན་དག་ནི །
ཀླུ་ རྣམས་དག་གི་ གནས་སུ་ སོང་ ༎ ༧

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।
विभ्रमम्भ्रमरभ्रान्त्या विडम्बयति किन्न्विद् ॥८॥

ཆུ་སྐྱེས་གདོང་ལྡན་ མིག་དག་གི །
རྣམ་འཕྲུལ་ ཡིད་འོང་ འདི་ལ་ ནི །
དཔྱིད་ཀྱི་ བུང་བའ་རྣམ་འཕྲུལ་གྱིས །
ཅོ་འདྲི་བྱེད་པ་ ཅི་ ཡིན་ སྨྲོས ༎ ༨

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धर ।
न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི །
གླང་པོའམ་ གཟུང་དཀའ་ རྟ མེད་ཀྱིས །
གང་ཕྱིར་ *བདག་ཅག་ མཐར་ བྱས་པ །
དེ་ཕྱིར་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྣམ་གནོན་ མཚར ༎ ༩

राजितैराजितैक्ष्ण्येन जीयते त्वादृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

གཡུལ དུ་ རྣོ་བས་ མཛེས་པ་ཡི །
མི་བདག་ ཁྱོད་འདྲས་ ནོར་འཛིན་ ནི །
རྒྱལ་བར་གྱུར་དེ་ ནོར་རྒྱུན་གྱིས །
ཚིམ པ་དག་ ཀྱང་ སྤོབ པར་གྱུར ॥ ༡༠

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्वन. ॥११॥

ས་ཧ་ཀཱ་རའི་ མེ་ཏོག་ གསར །
བདག་ ཡིད མཆོག་ཏུ་ སྨྱོད་ལྡན་བྱེད །
ཁུ་བྱུག་ མྱོས་པ་དག་གི་སྒྲ །
ཡིད་དུ་འོང་བ་ འདིས ཀྱང་ངོ་ ॥ ༡༡

कथं त्वदुपलम्भाशा विहताविह तादृशीं ।
अवस्था नालमारोढुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

ཁྱོད་ལ་ དམིགས་ པའི་རི་བ་ དང་ །
མ་བྲལ་ འདི་ལ་ དེ་འདྲ་ ཡི །
གནས་སྐབས་ ལུས་ནི་ འཛིག་བྱེད་པས །
བུད་མེད་ འཛོགས་ ནུས ཅི་ལྟར་མིན ॥ ༡༢

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདབ་ གསར་པས་ མཛེས་པ་ཡི །
ཟློན་ པས་ དྲངས་ པའི་ གཞོན་ནུ་ རྣམས །
པདྨར་ མངོན་ ཕྱོགས་ བུང་བ་ཡིས །
མིག་ ནས་ བཟུང་ སྟེ་ འགུགས་པར་བྱེད ॥ ༡༣

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
कुरुते कुरुतेनेय हंसो मामन्तकामिष ॥१४॥

སྐྱེས་པའི་ བཞད་ནི་ རབ་འཛུག་པ །
ཛང་གི ཆུ་ལ་ དཀར་བ་ཡི །

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཙ་ཙོ་ ཡིས།
བདག་ནི་ མཐར་བྱེད་ཟས་སྲུ་བྱེད། ། ༡༤

विषम विषमन्वेति मदन मदनन्दनः ।
सहेन्दुकलयापोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

ཏྲི་ཐྲལ་ ཟླ་བའི་ཆ་དག་ དང་།
ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རླུང་།
བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ ནི།
མི་བཟད་དུག་གི་ རྗེས་སུ་འགྲོ། ། ༡༥

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।
हारिणी हारिणी[38a]शर्म्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ སྙེན་མི་ འདོད་ ཁེངས་པ་ཅན།
དོ་ཤལ་དང་ལྡན་ འཕྲོག་བྱེད་མ།
ལུས་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ དོང་པ་ ཉིད།
ཕྲ་གྱུར་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་རྒྱས་ མཛོད། ། ༡༦

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथ न कथं जित ।
कमलं कमलकुर्वद्‌लिमद्दलिमत्प्रिये ॥१७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ བདག་ ལས་ རྒྱལ །
ཆུ་ཡི་རྒྱན་ གྱུར་ བུང་བ་ཅན །
འདབ་ལྡན་ པདྨ་ གདམ་ མེད་ལས །
ཅི་ལྟར་ མི་རྒྱལ་ བདག་ དགའམ ॥ ༡༧

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलाशुका ।
वारुणीवारुणीभूतसौरभा सौरभास्पदं ॥१८॥

ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ དམར་ གྱུར་པའི །
ཆུ་ལྷ་མོ་ བཞིན་ པཱ་ཊ་ལ །
དཀར་དམར་ གོས་ཅན་ དྲི་བཟངས་ གནས །
བདག་གི་ དགའ་མ་ དགའ་བར་བྱ ॥ ༡༨

•

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पित ।
व्यपेतस्यापि वर्ण्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པའི་ ཐོག་མ་ཡི །
ཟུང་ལྡན བར་ཆོད་མེད་ རྣམ་རྟོག །
དེ་ནི བར་དུ་ཆོད་པ་ ཡི །
རྣམ་རྟོག འགའ་ཡང་ བསྟན་པར་བྱ ॥ ༡༩

मधुरेणदृशां मान मधुरेण सुगन्धिना ।
सहकारोद्गमेनैव शब्दशेष करिष्यति ॥२०॥

ས་ཧ་ཀཱ་ར་ ལས འབྱུངས་ ཉིད །
ཡིད་འོང་ དྲི་བཟངས ལྡན་པ་ ཡིས །
དཔྱིད་ཀྱི་ ཨེ ཊའི་ མིག་ཅན་གྱི །
ཁེངས་པ་ སྒྲ་ཡི་ ལྷག་མར་བྱེད ॥ ༢༠

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
करोति सेर्ष्यं कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་པ ཤིན་ཏུ དམར །
རྒྱུད་མངས་ལ བསྣུན་ རྣམ་འཕྲལ་ལ །

ཕྲག་དོག་ ལྡན་ནམ་ མཛོད་བོ་ལའང་ །

ཧ་བཙི་ཨ་ཊྲུལ་གྱིས་ བསྒྲུན་བྱེད ॥ ༢༡

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।
मेघाली नर्त्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

སྤྲུང་ གྲིས གར་ བསྒྱུར་ སྤྲིན་གྱི་ཕྲེང་ །

མཐའ་དག་ ཚུ་ནི་ འཕྲོར་བར་བྱེད །

དེ་ རྫེས་ མཇུག་ མ་ རབ་བསྒྲང་བའི །

མཇུག སྒྲོ་ལྡན་པ་ གར་དག བྱེད ॥ ༢༢

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।
कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृद्दशेशां ॥२३॥

འདོད ལྡན་མ་ དག་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡིད །

ཁེངས་རྩོད་ རང་ཉིད་ ཞམས་འགྱུར་དེ །

ནཱི་པའི་ཀ་ལི་ཀཱ་ མཐོང་ན །

ཀླནས་སྐབས་ ཅི་ལ་ རེག་འགྱུར་རམ ॥ ༢༣

आरुह्याक्रीडशैलस्य चन्द्रकान्तस्थलीमिमां ।
नृत्यत्येष लसच्चारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

ཀྱེ དགའི རི ཡི་ཟླ འོད་ཀྱི །
ཐང འདི་ལ ནི་ འཛེགས་ གྱུར ནས །
མདོངས མཐའ་ མཆོག ཏུ རབ མཛེས་པའི །
གཙུག ཕུད་ཅན་ འདི་ གར་བྱེད དོ ॥ ༢༤

उद्धृता राजकादुर्वी ध्रियतेद्य भुजेन ते ।
वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

གང ཞིག་ སྤྲུལ་ མཆོག སྟེང་ གནས་ཞིང་ །
ཕག པས གཟུང་བའི ས་ འདི་ནི །
རྒྱལ པོའི་ ཚོགས ལས རབ་ཕྲངས་ ནས །
ད ལྟ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ལག པས་ བཟུང་ ॥ ༢༥

करेण ते रणेष्वन्तकरेण द्विषतां हताः ।
करेणवः क्षरद्रक्ता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥२६॥

གཡུལ་དུ་ དགྲ་ཡི་ གླང་པོ་རྣམས །
ཁྲོད་ཀྱི་ ལག་པ་ མཐར་བྱེད་ཀྱིས །
བསྣུན་པའི་ཁྲག་ ནི་ རབ་ཟག་པ །
ཐུན་མཚམས་དག་གི་ སྤྲིན་ བཞིན་ མཛེས ॥ ༢༦

परागतरुराजीव वातैर्ध्वस्ता भटैश्चमूः ।
परागतमिव क्वापि परागततमम्बरं ॥२७॥

རླུང་གིས་ རི་ཡི་ཤིང་སྡོང་ བཞིན །
གཞན་གྱི་ སྡེ་ནི་ དཔའ་བོས་ བཅོམ །
མཐའ་ནི་ ག་ཤེད་ སོང་བ་ བཞིན །
རྡུལ་གྱིས་ ནམ་མཁའ་ ཁྱབ་པར་གྱུར ॥ ༢༧

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युति. ।
स दानवकुलध्वसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

ལེགས་ལྡན་ ཆུ་འཛིན་ གསར་པའི་འོད །
ལྷ་མིན་དག་གི་རིགས་ཉམས་བྱེད །

ཚད་ལྡན་ གླང་པོ་ མཆོག་ བཅོམ་པ །
ཁྲབ་འཛུག་དེས་ ཁྱེད་ དག་ཏུ་ སྐྱུངས ॥ ༢༨

कमलेस्समकेशन्ते कमलेर्ष्याकरं मुखं ।
कमलेख्य करोषि त्व कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२९॥

ཁྱོད་ཀྱི་མགོ་སྐྲ་བྱུང་བ་འདྲ །
གདོང་ནི་ པདྨར་ ཕྲག་དོག་བྱེད །
དཔལ་གྱིས་ བཞིན་དུ་ རབ་སྨྲོས་པ །
ཁྱོད་ཀྱིས་ སུ་ཞིག་ སྨི་མི་བྱེད ॥ ༢༩

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।
मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

རྒྱ་ཆེ་ རིན་ཆེན་ རྒྱན་དང་ལྡན །
རྒྱགས་པས་ མིག་ འཁོར་ ཛ་གྷ་ན །
ཆུང་བ་ མིན་པས་ མཛེའ་བོ་ ནི །
དགའ་བ་ལྡན་པ་ བྱ་བར་བཟོད ॥ ༣༠

उदितैरन्यपुष्टानामारुतैर्मे हतं मनः ।
उदितैरपि ते दूति मारुतैरपि दक्षिणैः ॥३१॥

གཞན་གསོས་རྣམས་ཀྱིས་ བསྔགས་པ་ དང །
ཁྱོད་ཀྱི་ བརྗོད་པའི་སྒྲ་ དང་ ནི །
ལྷོ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ རླུང་གིས་ ཀྱང་ །
བདག་ཡིད་ ཕྲོགས་སོ་ ཕོ་ཉ་མོ ༎ ༣༡

सुराजितह्रियो यूना तनुमध्यासते स्त्रियः ।
तनुमध्या क्षरत्स्वेदसुराजितमुखेन्दवः ॥३२॥

སྐེད་པ་ཕྲ་ ཞིང་ རྡུལ་ཟག་པས །
གདོང་གི་ཟླ་བ་ རབ་མཛེས་པའི །
བུད་མེད་ ཚང་གིས་ ངོ་ཚ་ བཅོམ །
སྐྱེས་པའི་ལུས་ལ་ འཛེགས་པར་བྱེད ༎ ༣༢

इति व्यपेतयमकप्रभेदोप्येष दर्शितः ।
अव्यपेतव्यपेतात्मा विकल्पोप्यस्ति तद्यथा ॥३३॥

དེ་ལྟར་ བར་ཚོད་ཟུང་ལྡན་གྱི །
རབ་ཏུ་དབྱེ་བ་ འདི་ཡང་ བསྟན །
བར་ཚོད་ མ་ཚོད་ བདག་ཉིད་ཀྱི །
རྣམ་རྟོག་ ཀྱང་ ཡོད་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༣༣

सालं सालंबकलिकासालं सालं न वीक्षितुं ।
नालीनालीनवकुलानालो नालीकिनीरपि ॥३४॥

ཀ་ལི་ཀཱ་ འཁྱུང་ ཡལ་ག་ཅན །
སཱ་ལ་ བལྟ་བར་ དེ་ མི་ནུས །
བ་ཀུ་ལར་ ཆགས་ བུང་བ་ དང །
གྲོགས་མོས་ པདྨ་ཅན་ ཡང་ མིན ॥ ༣༤

कालं कालमनालक्ष्यतारतारकमीक्षितुं ।
तारतारम्यरसितं कालं कालमहाघन ॥३५॥

སྤྲིན་ནག་ ཆེན་པོ་ལྡན་པའི་དུས །
སྣང་དང་ རྒྱུ་སྐར་ ཀུན་ མི་མཚོན །

གསང འཕྲོར་ དགའ་བ་ སྨྲོགས་བྱེད་པ །
དུས་འདྲ་ སུ་ཡིས་ བལྟ་བར་ནུས ‖ ༣༥

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।
यामयाम धि[39b]याऽस्वत्यायिा मया मथितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གྱུར་ རིང་བ་ཡི །
མཚན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་ཤི་ཅིག །
གང་ལ་ བདག་ སོང་ སྲོག་ གཟིར་ འགྲོ །
དེ་ནི་ གློ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ ‖ ༣༦

इतिपादादियमकविकल्पस्येदृशी गतिः ।
एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

ཅེས་རྐང་ དང་པོ་ ཟུང་ལྡན་གྱི །
རྣམ་རྟོག་ ལུགས་ནི་ འདི་འདྲ་ སྟེ །
འདི་ལྟ་ ཁོ་ན་ ཟུང་ལྡན་གྱི །
རྣམ་རྟོག་ གཞན་པ་ རྣམས་ ཀྱང་ངོ་ ‖ ༣༧

न प्रपञ्चभयाद्भेदाः कार्त्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्कराभिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

སྤྲོས་པས་ འཇིགས་ ཕྱིར་ དབྱེ་བ་ནི །
མཐའ་དག་ བརྗོད་པར་ མི་འདོད་དེ །
དེ་ལ་ བྱ་དཀར་ མངོན་འདོད་ གང་ །
འགའ་ཞིག་དག་ནི་ བསྟན་པར་བྱ ༎ ༣༨

स्थिरायते यतेन्द्रियो न हीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

བརྟན་ལྡན་ དབང་པོ་ རབ་བསྡམས་པ །
ཁྱོད་ནི་སྡོམ་བརྩོན་ལས་མི་ཉམས །
སྐྱུ་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདེ་ འཇིགས་པར །
མི་འགྱུར་ འདི་སྙེད་ ཆེད་དུའང་ འགྱུར ༎ ༣༩

सभासु राजन्नसुराहतमुखैर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।
न भासुरा यान्ति सुरान्न तेगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

རྒྱལ་པོ་འདུན སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱི་ཞལ །
ཚང་གིས་མ་བཅོམ་ནོར གྱིས་ མཛེས་པས་རབ་བསྟོད པའི །
ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྐྱེ་དགུ་ལ །
ཕུང་པོ་ཉིད གྱུར་ ལྷ་རྣམས་སུ་ ནི་མི་འགྲོ་མིན ॥ ༨༠

तव प्रियासच्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
रतोत्सवामोद्विशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དམ པའི སྤྱོད་ལ་བག་མེད་ཁྱོད་ཀྱི དགའ་མ་ གང་ །
དགའ་བའི དགའ་སྟོན་དགའ་བས་ ཁྱད པར་དུ་སྨྱོས་མ །
དེ་ཡིས་ འདིར་ནི་འོད་ལྡན་ རྒྱན་རྣམས་ གཟུང་བར་འོས །
བདག་ལ་ མཛེས ལྡན་ཉིད་ཀྱི འབྲས བུ་འགའ་ཡང་མེད ॥ ༨༡

भवादृशा नाथ न जानते न ते रस विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
य एव दीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་ཁྱོད་ལྟས་དུད་པའི་རོ་ནི་མི་མཁྱེན་ཏེ །
དམན་པ་ཉིད་ དང མཆོག་ཉིད་ དག་ནི ངེས་པར་འགལ །

གང་ཞིག་ དམན་པ་རྣམས་ ནི་ ཁྲོད་ལ་མགོས་ འདུད་ཅིང །
དེ་དག་ ཁོ་ན་དམན་པའི་རོ་ དེས་ མཆོག་ཏུ་ རྒྱུ ॥ ༤༢

लीलास्मितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।
व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शिते न सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོལ་པའི་འཛུམ་ དཀར་ དང་ ནི་ འཇམ་པོར་ སྨྲ་བ་ དང་ །
ཆུང་ངུའི་ལྟ་བ་ དང་ནི་ ལྕི་བའི་འགྲོ་བ་ དང་ །
ཀུན་དུ་གླལ་ དང་ ཛ་ གྷ་ན་དག་ སྟོན་པ་ དེས །
བསྣུན་པ་ དེས་ ན་ བདག་ནི་ འཚོ་བས་ དམན་པར་གྱུར ॥ ༤༣

श्रीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।
भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དཔལ་ལྡན་ མི་ཡོང་ བརྟན་ལྡན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་ནི །
འཆི་མེད་ལམ་དང་ མཉམ་པའི་ཚད་ལྡན་ རབ་དུད་པའི །
འགྲོ་བ་རྒྱས་བྱེད་ མཆོད་ལྡན་ ཚད་མེད་ མིང་ཅན་ནི །
འཇལ་བྱེད་ ཚད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ ཕྱག་དག་མཛོད ། ༤༤

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुरुसारधरा त ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ।।४५।।

བཅུད་ལ་ ཞུགས་ཏེ་ བྲང་གིས་ དགའ་བྱེད་ཅིང་ །
སྙིང་པོར་གྱུར་པའི་ བཅུད་མང་ རབ་ཏུ་འཛིན །
གཞན་གྱི་རྗེས་མཚུངས་ སྨྲ་ལྡན་ དྲིལ་ཆུང་ཅན །
དེས་ ནི་ བཅུད་ལེན་ སྙིང་པོ་མེད་པར་ རིག ॥ ༤༥

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाश्रितान् ।।४६।।

བརྟན་རྒྱུས་ཚུལ་དང་ ཚུལ་མིན་ བརྟག་པ་ འདི་ཡིས་ནི །
ཚུལ་མེད་ དགེ་བའི་ཐབས་ལ་ ལོང་རྣམས་ རྣམ་པར་ཕྲུལ །
གཞོན་པས་མི་འགྲོ་ རྒྱལ་བའི་ཐེག་འགྲོ་དག་གིས་ གང་ །
ཚུལ་མ་ཐོབ་རྣམས་ ཐོབ་པ་ དག་ལ་ བརྟན་པ་སྐྱེད ॥ ༤༦

[40b]रवेण भौमो ध्वजवर्त्तिवीररवेरवेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
रवेरिवोग्रस्य पुरो हरेरवेरवेत तुल्यं रिपुमस्य भैरवे ।।४७।।

མཚུངས་མེད་ སྒྲི་བའི་ མཆོན་ལྡན་ གཡུལ་དུས་སྐྱེས་ནི །
ཀྱུལ་མཚན་ལ་ གནས་ དཔའ་བོ་ བུ་ཡི་ སྐྲ་ཡིས་ བྲོས །
ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བརྗོད་པའི་ འཁྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ །
འཇིགས་རུང་ གཡུལ་ ལ་ དགྲ་ནི་ལུག་དང་མཚུངས་པར་རིག ༎ ༤༧

मयामयालम्ब्यकलामयामयामयामयातव्यविरामयामया ।
मयामयार्त्तिं निशयाऽमयामयामयामयामूं करुणामयामया ॥४८॥

མཚན་མོ་ ཚད་མེད་ ཕུན་ལྡན་ དཔལ་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་ །
མཐར་ ནི་ བསྐྱོད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བརྟེན་པ །
ཆ་ཡི་ རང་བཞིན་ ནད་ཅན་ འབྲལ་བའི་ ནད་ཀྱིས་ གཟིར །
སྐལ་ལྡན་མ་ འདི་ སྙིང་རྗེའི་རང་བཞིན་ འབྲལ་མེད་ མཛོད ༎ ༤༨

मतांधुनानारमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
मतावयत्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ཡང་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ བློ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བསློག་པ་ ཉིད །
མ་ཡིན་ བླ་མེད་ རྗེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན །

གདུང་མེད་ཀྱིས་ ཐོབ་ མཆོག་གི་ རྗེས་སུ་ མཐུན་པ་ ཉིད། །
དགའ་མེད་ འདོད་མེད་རྣམས་ཀྱི་ བཞེད་པ་དག་ལས་ རྒྱལ། ། ༤༩

कालकालगलकालकालमुखकालकाल
कालकालपनकालकालघनकालकाल ।
कालकालसितकालका ललनिकालकाल
कालकालगतु कालकाल कलिकालकाल ॥५०॥

དུས་ཀྱི་ དུས་ཅན་ མགྲིན་ནག་སྔོ་ནག་ ནག་པོ་ ཉིད་ དག་ འཛིན། །
སྟན་སྤྲོགས་ དག་གི་ སྤྲོགས་ དུས་ སྦུང་ཚོགས་ སྤྲིན་ནག་ ལྷ་བུར་ ནག། །
དུས་ཀྱིས་མི་གཟུང་ དུས་ཚའི་ གཙོ་བོ་ མཛེས་པའི་ སྤྲིན་གྱི་མཚོ། །
དཀའ་ཐབས་ འཚོ་བའི་ གཡོ་ལྡན་ ལན་ཕྲེང་ རོལ་ཅན་འགྲོགས་པར་ མཛོད། ། ༥༠

सद्ष्ट्यमकस्थानमन्तादि पा[41a]दयोर्द्वयोः ।
उक्तान्तर्गतमप्येतत् स्वातन्त्र्येणात्र कीर्त्यते ॥५१॥

རྐང་པ་ གཉིས་ཀྱི་ མཐའ་ཐོག་ ནི། །
རབ་སྦྱར་ ཟུང་ལྡན་ གནས་སྐབས་ འདི། །
བརྗོད་པའི་ ཁོངས་སུ་ འདུས་ མོད་ཀྱང་། །
རང་དབང་ཉིད་ཀྱིས་ འདིར་ བཤད་དོ། ། ༥༡

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

སྨོས་པའི་ ཆགས་པ་ ཉེ་བར་གནས་ཀྱང་ བུད་མེད་དེས །
བདག་ཉིད་ མ་སྦྱར་ བདག་གི་ སྡིག་པས་ ཁྲོ་བ་ཡི །
རོ་དང་ སྦྱར་ཏེ་ ལུས་མེད་ དག་གིས་ གདུང་ གྱུར་ ཀྱང་ །
བདག་ ཅི་ འདི་སྐྱེད་ གདུང་བཞི་ སླད་དུ་ མ་བསྐྱེད་དོ ॥ ༥༢

अर्थाभ्यासः समुद्गः स्यादस्य भेदास्त्रयो मता· ।
पादाभ्यासोऽप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

ཕྱིད་ཟླས་ ཡང་དག་སྦྱར་བ་ཡིན །
འདི་ལ་ དབྱེ་བ་ གསུམ་དུ་ འདོད །
རྐང་པ་ བཟླས་པ་ དང་ དུ་མ་ ཡི །
བདག་ ཉིད་ དེ་དག་ དཔེས་གསལ་ བྱ ॥ ༥༣

नास्थेयःसत्वया वज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वर्ज्यः परमायतमानया ॥५४॥

སྐྱེས་བུ་ བརྟན་ གང་ སྙིང་སྟོབས་ཅན །
ཁེངས་པ་ རབ་སྤངས་ སྤང་བྱ་ དེ །
ཁྱོད་ཀྱིས་ མཆོག་ཏུ་ འབད་པ་ ཡིས །
ཡིད་བརྟན་བུའི་ མི་བརྟན་མ ॥ ༧༨

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

ཁྱོད་ཀྱི་ བསྒྲོད་པ་ ཁྱབ་བདག་ གཟི་བྱིན་གྱིས །
ཡང་ཡང་ རབ་སྤྱུར་ མཛེས་པ་ མེད་པ་ཡི །
མི་རྣམས་ ཚུལ་དང་ ང་རྒྱལ་ ཉམས་བྱས་ནས །
གདུང་ ཞིང་ ཀྱི་མ་ བྱས་ཟློས་ རྣམ་པར་དཙོམ ॥ ༧༧

कलापिनां चारुतयोपयान्ति वृन्दानि लापोढघनागमानां ।
वृन्दानिलापोढघनागमानां कलापिना चारुतयोऽप[41b]यान्ति ॥५६॥

སྤྲིན་བསྒྲོད༔ དབྱར་སྐྱེས་ མི་བུའི་ཚོགས་རྣམས་ ནི །
དགའ་བའི་སྒྲ་ཡིས་ མཛེས་པ་ ཐོབ་པར་འགྱུར །

ལྷུང་གི་ཚོགས་ སྡུག་ བྲལ་བས་ ཚུར་སྒྲོགས་ཀྱི །
ཚོགས་རྣམས་ སྤྲ་དང་བྲལ་བ་ ཉིད་དུ་ གྱུར ॥ ༥༦

न मन्दयाऽवर्जितमानसात्मया नमन्दयाऽवर्जितमानसात्मया ।
उरस्युपास्तीर्णपयोधरद्वय मया समालिङ्ग्यत जीवितेश्वरः ।।५७।।

འཚོ་བའི་དབང་ཕྱུག་ འདུད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ ཁོ་མོ་ནི །
'དམན་ཞིང་ ཁེངས་པ་ ངེས་པར་བསྐྱུབས་པའི་དབང་གྱུར་མ །
བརྩེ་བ་ སྤྲངས་པས་ བདག་ཉིད་ བྲང་གི་འོ་མ་འཛིན །
གཉིས་པོ་ ཉེ་བར་གཏད་ནས་ ཀུན་དུ་མ་འཁྱུད་དོ ॥ ༥༧

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८ ॥

ལྷ་རྣམས་ འདུན་ས་ སྟོབས་མེད་ཁྲུབ་བདག་གནས་པ་ན །
ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་དན་ པད་རྩ་ དྲི་མ་མེད་པས་ འཛོགས །
དེ་ནི་ འོད་འབར་ གྲོང་བཟང་ རྣམས་ཀྱི་ •ཕུན་སུམ་ཚོགས །
བརྒྱན་པའི་ བུད་མེད་རྣམས་ དང་ རྣམ་པར་རྩེ་ཞིང་སྤྱོད ॥ ༥༨

कलङ्कमुक्त तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तद्दते न हन्त्यतः ।
न याति भूतङ्गणने भवन्मुखे कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५९॥

སྐྱན་པར་སྨྲ་དང་ ལུས སྐྱེད་དུད་དང་ ནུ་གཉིས མས །
ཁྲོད་ལས་ གཞན་པ་ སུ ཞིག་ མ་བཅོམ དེ་ཡི་ཕྱིར །
འབྱུང པོ་ ལུས ལྡན་ སྐྱོན ལས་གྲོལ་བ་ ཁྲོད་ལ་སོགས །
བགྲང་བ ལ ནི་ མིང་མེད་ ཉེ་བར འགྲོ་མ ཡིན ॥ ༧༩

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दंशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

ཁྲབ འཇུག་ ལྷ བུ་ ཁྲོད་ཀྱི་དམག་དཔུང་ གོ་བགོས་པ །
མཚོན རྣོན་ལྡན་པ དཔའ བོ་དག་གིས་ ཕྱོགས་རྣམས སུ །
གྲགས་པ་ དང་ནི་ རྡུལ་དག་ རྒྱས་བྱེད་ གཡུལ་གྱིས་ནི །
དགྲ་རིགས་ ལུས་བྲལ་ གཟི་མེད་ རྒྱགས་པ་ ཉམས པར་བྱེད ॥ ༨༠

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमोमा स्मरतो मदञ्चितं ।
श्रृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भूधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चित ॥६१॥

དྲན་ལྡན་ བདག་ལ་ ཕན་པའི་ཚིག་ གཅིག་ གསན་པར་མཛོད། །
ཁྱོད་ཀྱི་ ལག་པ་ དཔལ་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས། །
ས་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ རྣམ་འཛིན་ དེ་ཕྱིར་ ས་གཞི་འཛིན། །
རང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་པ་ རྒྱས་པར་ ཡོངས་མ་བྱེད། ॥ ༦༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་པའི་ མེ་གང་ ཁེངས་པས་ རབ་བསྐྲུབས་པ། །
སྐད་ཅིག་ དང་མཉམ་ རྒྱས་ དེས་ པདྨའི་མིག །
རོ་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ ནི། །
ཀུན་ནས་ ཉམས་པ་ ཉིད་དུ་ ཅིས་མི་བྱེད། ॥ ༦༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
प्रभावतो नाम न वा सवस्य विच्छित्तिरासीत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

མ་དུར་ ཁྱོད་ནི་ འཇིག་རྟེན་ བདག་སྐྱུར་ ཚེ། །
མཐུ་ཡིས་ མཐུ་ལྡན་ ནོར་ཅན་ འདུད་བྱེད་པ། །

དེ་ཕྱིར་ གསར་པའི་ བདུང་ལྡན་ མཆོད་སྤྲིན་ནི །
ངེས་པ་ཉིད་དུ་ ཆད་པར་མ་གྱུར་རོ ༎ ༦༣

परम्पराया बलवा रणानां धूलीस्थिलीर्व्योम्नि विधाय रुन्धन् ।
परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དཔུང་གི་ གླང་པོ་རྣམས་ནི་ གཞན་ དང་ གཞན །
སྡོབས་ལྡན་ སྣ་སྒྲོགས་ རབ་ཏུ་ བརྒྱུད་པ་ཡིས །
ཐང་ལ་ རྡུལ་ བསྐྲུབས་ ནམ་མཁའ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་ །
གཡུལ་གྱི་སྡོབས་ བཟློག་ མཆོག་ཏུ་ གཞན་ལ་ རྒྱུག ༎ ༦༤

न श्रद्दधे वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहिताना ॥६५॥

ཁྱོད་ལྟ་ མཉམ་པར་མ་བཞག་ སྨྲིད་པར་ ནི །
རྣམ་གཉིས་ མི་མཉམ་ ཕན་པ་མེད་ རྣམས་ ཚིག །
ལོག་པར་གྱུར་པ་ སྒྲུབ་བྱེད་ མི་མཉམ་པ །
སྒྲུམ་ བགྲོད་ མཚུངས་ལ་ མི་དད་ ངོ་ཚ་མེད ༎ ༦༥

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དགྲ་ཡི་ མཛེས་ འཛོམས་ རྒྱལ་པོ་འི་སྐྱེ་ཡིས་བཏུད །
ཨུ་མས་ ཕན་པ་ དཔལ་ལྡ་ མེད་མིན་སྐྱེ །
མི་འདུད་ གོ་བགོས་ མཆོད་ཐོབ་ ཛུལ་མེད་པ །
སྐྱེས་མཆོག་ ཛེ་བོ་དམ་པ་ མི་མཛེས་མིན ॥ ༦༦

सकृद्द्विस्त्रिश्च योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ རྐང་པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བཟླས་པ་ བསྟན །
ཚིགས་བཅད་ གཉིས་དང་ལྡན་པའི་དོན །
ཚིགས་བཅད་ བཟླས་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར ॥ ༦༧

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमतुलाश्रिता ॥६८॥

ཟླུམ་ཞིང་ རྒྱས་པའི་ ལག་པ་ཅན །
གྲོགས་མིན་ རབ་ཏུ་འཇོམས་བྱེད་པ །
རྣམ་འདྲེན་ ཁྱོད་ཀྱི་ བསྟེན་པ་ཡི །
མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཇིགས་པ་མེད ॥ ༦༨

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६९॥

འདྲེན་པ་ དག་ དང་ བྲལ་གྱུར་ ཅིང་ །
ལག་པ་ སྲིག་ཁང་ ཉེ་གྱུར་པ །
རང་ གྲོགས་ཀྱིས་ བདང་ དགྲ་ཡིས་ནི །
མི་མཉམ་ ས་ འདི་ མཐོན་པར་བསྟེན ॥ ༦༩

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाह्वय ।
तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀང་བཞི་ རྣམ་པ་ གཅིག་པ་ གང་ །
ཟུང་ལྡན་ ཆེན་པོར་ བརྗོད་པ་ ཡིན །

དེ་ལའདང་ བཟླས་པ་ མཐོང་སྟེ དེ །
རྫུང་ལྡན་ བྲུ་བ གཞན་ ཡིན་ནོ ། ༧༠

समानयास मानया समानयासमानया ।
समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དཔལ་ལྡན་ མཚུངས་མེད་མ །
ཁེངས་ལྡན་ ངལ་བ་ དག་དང་ནི །
ཁེངས་པ་མཉམ་ལྡན་ ཚུལ་མིན་དག །
ངོར་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སུ་ཚུག ། ༧༡

धराधराकारधरा धराभुजां भुजा मही पा[43a]तुमहीनविक्रमाः ।
क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानघुरावलम्बिन· ॥७२॥

འཛིན་མ་ འཛིན་པའི་རྣམ་འཛིན་ འཛིན་མ་སྐྱོང་རྣམས་ཀྱི །
ལག་པ་རྣམ་གནོན་ མི་དམན་ འཕྲུལ་ལ་ དགྲ་འཛོམས་པ །
སྐུར་བ་དང་ལྡན་ མཆོད་པའི་ ཁུར་ནི་ བསྟེན་པ་ ཡིས །
ས་གཞི་ དག་ནི་རིམ་པས་ བསྐྱུང་བར་ བཟོད་ པ་ཡིན ། ༧༢

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमक प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

རྐང་ཕྱེད་ ཚིགས་བཅད་ སྤྱོད་ཡུལ་ཅན། །
ལུགས་ལས་ བཟློག་པ་ བསྐོར་བ་ ནི། །
ཟུང་ལྡན་ ལུགས་ལས་ བཟློག་པའི་ཕྱིར། །
ལུགས་ལས་ བཟློག་པ་ ཞེས་པར་ བཤད། ། ༧༣

या मताश कृतायासा सायाता कृशाता मया ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

གང་ལ་ འབད་བྱས་ ཕྲ་མོ་ ཉིད། །
དེ་ནི་ བདག་གིས་ ཐོབ་ མཛའ་བ། །
རེ་འདོད་མེད་པས་ བྱེད་མེད་ལྷ། །
བསྟོད་པ་ ཐོབ་ ཁྱོད་ འགྲོ་གྱུར་ཅིག ། ༧༤

नादिनोऽमंदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

ནཱ་ར་ལྡན་ བདག་ རང་གི་ བློ།
སྒྲོས་མིན་ འདོད་པ་ འགའ་ ཡང་མེད།
དུལ་བ་ འཛེམས་པའི་ འདོད་པ་ ཡིས།
རང་དབང་ གདུང་བ་ དག་ཀྱང་ མེད།། ༧༥

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ।।७६।।

ཡིད་འགྲོ་ བདུད་སྐྱོང་ ལྷག་མི་དམན།
གང་ཞིག་ དབང་གྱུར་ སྐྱེ་བོ་ འཛེམས།
གང་ལ་ བདག་སོང་ སྐྱེ་བོ་ བརྒྱའི།
དབང་གྱུར་ དེ་ལ་ བྲོན་ ཞེས་ སྨྲས།། ༧༦

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
नासनाजनना शोकविरामायनमानया ।।७७।।

སྟོན་ འདི་ ཡིས་ནི་ གཟིར་གྱུར་ཅིང་།
སྟོན་མི་ ཤེས་མ་ དེ་ཡིས་ ནི།

ཉིན་མོའི་ ནང་དག་ མ་ཐོབ་ མིན །
སྒྲ་ངན་ འབྲེལ་ སྐྱད་ ཁིངས་མ་ བྱེད ॥ ༧༧

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्ध[43b]यो· ।
गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दुष्कर तद्विदो यथा ॥७८॥

གལ་ཏེ་ ཕྱེད་ ཀྱི་ཡི་གེ་ རྣམས །
གཅིག་གིས་ བར་ཆོད་ གཟུགས་གཅིག་ཉིད །
དེ་ནི་ བྱ་དཀའ་ དེ་ཉིད་ རིག །
བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སྨྲ་ སྟེ་ དཔེར ॥ ༧༨

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गास्त्रोजये दय ।
मदेनो यदि तत् क्षीणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདྲའི་ མིག་ལྡན་ ཟུར་མིག་གི །
མཚོན་ གྱིས་ འདོད་པ་ འདི་རྒྱལ་ ཏེ །
གལ་ཏེ་ བདག་ཀྱང་ སྡིག་ཟད་ ན །
འདོད་པ་ ལ་ནི་ ཐལ་མོ་ སྦྱོར ॥ ༧༩

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमण यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमण यदि सर्वतः ॥८०॥

གལ་ཏེ་ ཚིགས་བཅད་ ཕྱེད་ འཁོར་ན།
ཕྱེད་དུ་ འཁོར་བ་ ཞེས་པར་ བརྗོད།
གལ་ཏེ་ ཀུན་ཏུ་ འཁོར་བ་ན།
ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ ཞེས་པར་ འདོད།། ༨༠

मनोभव तवानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

མ་དུད་ ཡིད་བྱུང་ ཁྱོད་ དར་ ཕྱིར།
སྨྲེ་ནི་ ཁེངས་ལྡན་ མ་ཡིན་ མིན།
ཡང་ན་ ཚད་ དཔག་མེད་ ནད་ཀྱི།
འཇིགས་ ལས་ བདག་ཅག་ སྐྱིག་པའི་དངོས།། ༨༡

सामायामामायामासामारानायायानारामा ।
यानावारारावानायामायारामामारायामा ॥८२॥

ཉད རིང མིན་པའི་ དགའ་མ་ གང་ །
བདུད་ བརྒྱུར་ མ་ལྷུང་ བགྲོད་བཟློག་མ །
སྒྲ མེད་ སྤོབས་ལྡན་ སྒྲུ་གནས ཏེ །
ཀླ་དང་ལྡན ཅིག་ འཆི་ སླད་དུའོ ॥ ༨༢

यः स्वरस्थानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
इष्टश्चतुःप्रभृत्येष दृश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང གནས་དང ཡི་གེ་རྣམས །
ངེས་པ་ གང་ འདི་ བྱ དཀའ་ལ །
བཞི་ལ་ སོགས་པ་ རབ་བསྟན འདི །
གཞན ནི བྱ སླ་ དག་ཏུ་ འདོད ॥ ༨༣

आम्नायानामाहान्त्या वाग्गीतीरीतीर्भीतीः प्रीतीः ।
भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे देशे क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་ མཐར་ སྨྲས་པའི ཚོག །
སྒྲུ་དང་ ཡམས་ནད འཇིགས་ དགའ་ ཡིས །

ལོངས་སྤྱོད་ ཉད་དང་ དགའ་དང་ རྩོངས །
དགེ་བའི་ ཡུལ་དུ་ སེམས་ འདོད་བྱུང་ ༎ ༨༤

क्षितिविजितिस्थितिविहिति [44a]व्रतरतयः परगतयः ।
उरु रुरुधुर्गुरु दुधुवुः स्वमरिकुल युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་རྒྱལ་ བརྟན་པ་ སྐྱུབ་བྱེད་པའི་ །
བརྟུལ་ཞུགས་ལ་དགའ་ མཆོག་ རྟོགས་ ཀུ་རུ་པས །
གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དགྲ་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི །
ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ཕྱི་བར་ འདར་བར་བྱས ༎ ༨༥

श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीती ।
एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དཔལ་གཟི་ ངོ་ཚ་ གྲགས་ དང་ །
བློ་ལུགས་ ཚིག་ དང་ དགའ་དག །
ཁྱོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ །
འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད ༎ ༨༦

सामायामामाया मासा मारानायायानारामा ।
यानावारारावानाया माया रामा मारायामा ॥८७॥

ནད རིང མིན་པའི་ དགའ་ མ་གང་ །
བདུད རྒྱུར་ མ་ལྷུང་ བགྲོད བཟློག་མ །
སྒྲ་མེད་ སྟོབས་ལྡན་ སྒྲུ་གནས་དེ །
ཟླ་དང་ ལྡན་ཅིག་ འཆི་སྐྱད་དུའོ ॥ ༨༧

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।
अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सकृत् ॥८८॥

འདྲེན་བྱེད ཀུན དགའ་ སྐྱེད་བྱེད མ །
རྒྱུ་སྐར་ཚོགས་རྣམས དག གི གནས །
སྤྲིན་མེད མཁའ ལ་ ལུས་ཅན མ །
ལན་ཅིག མིག་ནི སྦྱིན་པར མཛོད ॥ ༨༨

अलिनीलालकलतं कन्न हन्ति घनस्तनि ।
आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

ནུ་སྨུག་ ཁྲོད་ གདོང་ལན་བུ་ཡི །
འཁྲི་ཤིང་ བུང་བ་ ལྟར་ སྦྱོ་ཞིང་ །
འདྲེན་བྱེད་ པདྨའི་གཟུགས་ བརྟན་ཅན །
ཟླ་ལྟར་ མཛེས་པས་ སྲུ་ མ་བཙམ ॥ ༨༩

अनङ्गलङ्घनालग्ननानातङ्का सदङ्गना ।
सदानघ सदानन्दनताङ्गासङ्गसङ्गतः ॥९०॥

རྟག་ཏུ་ སྡིག་མེད་ ཀུན་དགའ་ མཆོག །
ལུས་ དུད་དག་ དང་ འགྲོགས་ལ་ ཆགས །
བཙུན་མོ་ ལུས་མེད་ ཀྱིས་ འགོངས་ཏེ །
འཇིགས་པ་ དུ་མས་ རེག་པར་གྱུར ॥ ༩༠

अगा गांगाङ्ककाकाकगाहकाऽघककाकहा ।
अहा[44b]हांग स्वगाङ्कागकंकागखगकाकक ॥९१॥

ཧཱ་ཧཱ་མི་ སྒྲོགས་ མཁའ་ འགྲོས་ མཆན །
རི་འགྲོ་ དབང་ འཁྲིག་ལྡན་ མ་ཆགས །

འཁྲོག་ སྒྲོགས་ གདྲུའི་ ཆུར་ འཛུག་ སྡིག །
བྲུ་རོག་ འཇོམས་པ་ མགྲོ་རིས་ འགྲོ ॥ ༩༡

रे रे रोरूरुरूरोरुगागोगोऽगांगगोऽगगुः ।
किङ्केकाकाकुकः काको मामा मामम मामम ॥९२॥

ཀྲུ་ཀྲུ་ སྒྲ་སྒྲོགས་ རུ་རུའི་ བྲང་ །
འཇོམས་ སྡིགཔ་ རི་ རི་ ཆར་ འགྲོ །
ང་ཅན་མ་ འོང་ བདག་གི་བ །
བྲུ་རོག་ རྨ་བྱའི་ སྒྲ་ སྒྲུར་ཙི ॥ ༩༢

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिन्दिनः ।
दिव दुदाव नादेन दाने दानवनन्दिनः ॥९३॥

ལྷ་རྣམས་ དགའ་བར་ བྱེད་པའི་ ལྷ །
རིག་བྱེད་ལ་ སྨོད་ འགོག་པ་པོས །
ལྷ་མིན་ དགའ་བྱེད་ བཅོམ་པ་ན །
སྒྲ་ཡིས་ མགྲོ་རིས་ འཁྲུགས་པར་ གྱུར ॥ ༩༣

सूरिः सुरासुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरूः स सुरारसी ॥९४॥

མཁས་པ ལྷ དང་ ལྷ་མིན་ལ །
འགྲོ སྟོབས་ལྡན་པའི་ ཁྲིན་ལེགས་ཅན །
ཚང་གི་རོ་ལྡན་ གཞོལ་འཛིན་ དེ །
བཞད་ཀྱི་སྒྲ་ལྡན་ མཚོ་རུ་ སོང ༎ ༩༦

नून नुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनेनानानिनो निनीः ॥९५॥

འདི་ཡིས་ བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་ བཞིན །
བཞིན་གྱིས ངེས་པར་ མ་ བཙོམ་ མིན །
བདག་སྒྲོག མི་དམན་ འདི་དང་ སྦྱོར །
ཇེ་བོ་ སྐྱེས་མིན་ ཧྲིག་ཅན་ ངེས ༎ ༩༧

इति दुष्करमार्गेपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥९६॥

དེ་ལྟར་ བྱ་ དཀའི་ལམ་ལ་ ཡང་ །
རིམ་པ་ ཅུང་ཟད་ ཀུན་ཏུ་ བསྟན །
གབ་ཚིག་དག་གི་ རྣམ་པ་ ཡི །
ཕྱོགས་ ཀྱང་ རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ ॥ ༩༦

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्ज्ञैराकीर्ण्णमन्त्रणे ।
परव्यामोहने चापि सोपयोगा. प्रहेलिकाः ॥९७॥

རྩེད་མོའི་ འདུན་ སར་ བཞད་གད་ དང་ །
དེ་ཤེས་ ཚོགས་སུ་ གསང་ སྨྲ་ དང་ །
ཕ་རོལ་ ཀུན་ཏུ་ རྨོངས་བྱེད་ ལ །
གབ་ཚིག་དག་ ནི་ ཉེར་མཁོ་ལྡན ॥ ༩༧

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।
वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रूढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥९८॥

ཚིག་མཚམས་ སྦྱར་བས་ དོན་སྦས་པ །
ཀུན་ཏུ་ ཚོགས་པ་ ཞེས་པར་ བརྗོད །

གཞན་ལ་ གྲགས་པའི་སྒྲ་དག་གིས། །
གང་དུ་ བསྒྲ་བ་ སྒྲུབ་བྱེད་ཉིད། ། ༩༨

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।
सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्बोधार्था पदावली ॥९९॥

སྦྱོར་བ་ ཤིན་དུ་ འཁྲུགས་པ་ ཡིས། །
རྨོངས་བྱེད་ རིམ་པ་ བྲལ་བ་ སྟེ། །
གང་ལ་ དོན་ རྟོགས་ དཀའ་བ་ ཡི། །
ཚིག་ཕྲེང་ དེ་ནི་ རབ་བཅོམ་ ཡིན། ། ༩༠

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।
परुषा लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བཏགས་པའི་དོན་ བཀོད་ ཚིག་དག་གིས། །
བསྡིབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་གཟུགས། །
མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཙམ་ ངེས་ཚིག་ དང་། །
ལྷན་པའི་ཚིག་ ནི་ རྩུབ་མོ་འོ། ། ༡༠༠

संख्याता नाम संख्यान यत्र व्यामोहकारणं ।
अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

གང་དུ་ གྲངས་ཀྱིས་ ཀུན་རྨོངས་པར །
བྲིད་པ་ གྲངས་ཉིད་ ཅེས་བྱ་སྟེ །
གང་དུ་ ངག་དོན་ རྣམ་པ་ གཞན །
སྣང་བ་ དེ་ནི་ རབ་བརྟགས་ཉིད ॥ ༡༠༡

सा नामान्तरिता यस्यां नाम्नि नानार्थकल्पना ।
निवृता निवृतान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

གང་དུ་ མིང་ལ་ སྣ་ཚོགས་ དོན །
བརྟགས་ དེ་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ཉིད །
ཚིག་ནི་ ཆོས་ མཚུངས་ལ་ རིག་པས །
དོན་ གཞན་ བསྒྲིབས་པ་ བསྒྲིབས་པ་འོ ॥ ༡༠༢

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।
समूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

* རྣམ་གྲངས་ སྒྲ་ནི་ བགོད་པ་ ཡིས །
བསྒྲུབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་སྒྲ །
གང་ཞིག་ མངོན་སུམ་ དོན་ བསྟན་ ཡང་ །
སྦྱོངས་ ཕྱིར་ དེ་ནི་ སྦྱོངས་ ཞེས་བྱ ॥ ༡༠༣

योगमालात्मकन्नाम यस्याः सा परिहारिकी ।
एकच्छन्नाश्रित व्यञ्ज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

གང་ལ་ སྦྱོར་ཕྲེང་ བདག་ཉིད་ཅན །
དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འཕྲོག་ ཅེས་ བྱ །
གང་དུ་ རྟེན་ནི་ སྦས་བྱས་དེ །
བརྟེན་པ་ གསལ་བ་ གཅིག་ བསྒྲིབས་པའོ ॥ ༡༠༤

[45b]**सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।**
संकीर्ण्णा नाम सा यस्या नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

གང་དུ་ གཉི་ག་ སྦས་གྱུར་པ །
དེ་ནི་ གཉི་ག་ བསྒྲིབས་པ་འོ །

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ སྣ་ཚོགས་ འདྲེས །
དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདྲེས་ ཞེས་བྱ ॥ ༡༠༥

एता. षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।
दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གབ་ཚིག་ བཅུ་དྲུག་སྟེ །
སྔོན་གྱི་ སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ བསྟན །
གབ་ཚིག་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །
བཅུ་བཞི་ དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་ བརྗོད ॥ ༡༠༦

दोषानपरिसङ्ख्येयान् मन्यमाना वय पुनः ।
साध्वीरेवाभिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणा ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ །
སྐྱོན་གྱིས་ ཡོངས་བགྲང་བྱ་མིན་པར །
རིག་ནས་•སླར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས །
ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བརྗོད་པར་བྱ ॥ ༡༠༧

न मयागोरसाभिज्ञ चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुंदितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

བདག་གིས་ བ་ལང་ རོ་སེམས་ཀྱིས །
ཤེས་པ་ མེད་ལ་ ཅི་སྐྱད་ ཁྲོ །
གནས་མིན་དུ་བ་ འདི་ཡིས་ ནི །
ཅི་བྱེད་ ཀུན་དུ་ མིག་དམར་མ ॥ ༡༠༨

कुब्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रति ।
नैव निर्विशतो नारीममरस्त्रीविडम्बिनीः ॥१०९॥

ཀུབྫཱ་ བསྟེན་པ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ནི །
དགའ་བ་ ཇི་ལྟར་ འཕེལ་གྱུར་པ །
འཆི་མེད་བུ་མོར་ ཅོ་འདྲི་མ །
མི་མོ་ སྤྱོད་པས་ དེ་ལྟ་མིན ॥ ༡༠༩

दण्डे चुम्बति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्टके ।
मुखं वल्गुरवं कुर्वंस्तुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

ཡུ་བར་ འོ་བྱེད་ པད་ཅན་ གྱི།
ངང་པ་ ཚོར་མ་ རྩུབ་པོ་ཅན།
བཞིན་ལ་ སྨྲ་སྐྱན་ སྨྲོགས་བྱེད་ཅིང་།
ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ མཆུས།། ༡༡༠

ख्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फीतवल्गवः ।
चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥१११॥

བུ་མོ་ མཛེས་མ་ ཁྱོད་ ཀང་པར།
ཀང་གདུབ་ རྒྱས་པ་ སྨྲ་སྐྱན་ སྨྲོགས།
མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་ འདིར།
བདག་གི་ སྨྲོག་ནི་ བཏན་ མ་ཡིན། ༡༡༡

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा ।-
पल्लवे पल्लवे चाद्र्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥

གང་གི་•ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ།
མེ་ཏོག་ སྙུམ་པའི་ ཏོག་པ་ཅན།

འཁྲི་ཤིང་ ཡལ་འདབ་ ལྷ་པ་ ནི།
སྐྱེད་མོས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ༎ ༡༡༢

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनार्चिषा ।
मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरे सरसि सप्रति ॥११३॥

ཚང་མ་རྣམས་ ནི་ ཚང་ཁང་དུ།
སོ་ཡི་འོད་ཀྱིས་ ཏེ་ དཀར་ འཁྲུམས།
ད་ནི་ སྨྱོས་པར་གྱུར་ དེ་རྣམས།
ཚང་གི་རྫིང་བུར་ བྱིང་བ་ བཞིན། ༡༡༣

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता ।
अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྣ་ལྡན་ དབུས་གནས་ གསལ་བྱེད་ བཞིས།
ཡོངས་སུ་རྣམ་པར་བརྒྱན་པ་ཡི།
གྲོང་ཁྱེར་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན།
མི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད ༎ ༡༡༤

गिरा स्खलन्त्या नम्रेण शिरसा दीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्य वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

ཚག་རྣམས་ རབ་ཏུ་འཁྲུལ་བ་ དང་།
མགོ་བོ་ དུད་ཅིང་ མིག་ དམན་པ།
འདུག་ ཀྱང་ འདར་ལྡན་ བདག་ལ་ནི།
རྒན་མོ་ རྗེས་སུ་ མི་བརྩེ་འམ ॥ ༡༡༥

आदौ राजेत्यधीराक्षि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

མིག་མི་ བརྟན་མ་ ས་ལྷན་ འགའ།
དང་པོར་ རཱ་ཛ་ ཞེས་པ་ སྒྲོགས།
ས་ནཱ་ཏ་ན་ ཡང་ སྟེ་ འདི།
རྒྱལ་པོ་ མ་ཡིན་ ཁྱབ་འཇུག་མིན ॥ ༡༡༦

हृतद्रव्य जनं त्यक्त्वा धनवन्तं व्रजन्ति काः ।
[46b]नानाभङ्गिशताकृष्टलोका वैश्या न दुर्धराः ॥११७॥

རྫས་བྲལ་ མི་ནི་ བདང་བྲུས་ནས །
ནོར་ལྡན་རྣམས་ཀྱི་ བགྲོད་པ་ གང །
སྣ་ཚོགས་ཀྱོག་བཀྲུས་འཛིག་རྟེན་འགུགས །
གཟུང་དཀའ་ སྨད་འཚོང་མ་ ཡིན་ནོ ॥ ༡༡༧

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवाभूमिसाह्वय: ।
स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

ཁྱོད་ཀྱི་ ས་མིན་ མིང་ འཕྲུན་གང །
རབ་གྱུར་ སྨྲ་ མིང་ཅན་ལས་རྒྱལ །
དེ་ཡིས་ དེང་ བདག་ མཆོག་ཏུ་ནི །
སྨྲེད་ལྡན་བྱེད་དོ་ སྙན་སྒྲོགས་མ ། ༡༡༨

शयनीये परावृत्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमचुम्बताम् ॥११९॥

འདོད་ལྡན་དག་ནི་ མལ་སྟན་ལ །
ཁྲོ་བས་ ཕྱིར་ བཟློག་ ཉལ་བར་གྱུར །

ཆགས་པས་ དེ་བཞིན་ཉིད་ ཞལ་དེ།
དལ་བུ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ སྒྲོར།། ༡༡༩

विजितात्मभवद्वेषिगुरुपादहतो जन ।
हिमापहामित्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྲ་རྒྱལ་ ཟས་སྐྱེས་ དགྲ་ཡི་ནི།
ཟླ་མའི་འོད་ཀྱིས་ བཅོམ་ སྐྱེ་བོ།
ཁ་འཛོམས་ གྲོགས་མིན་ འཛིན་པ་ཡིས།
ཁྱབ་པའི་མཁའ་ལ་ མངོན་པར་དགའ།། ༡༢༠

न स्पृशत्यायुध जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डल ।
अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफल ॥१२१॥

ནམ་ཡང་ མཚོན་ དང་ བུད་མེད་ཀྱི།
ནུ་མའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག།
མི་མ་ཡིན་པ་ འགའ་ཞིག་གི།
ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ནོ་ ལོ།། ༡༢༡

केन कः सह सम्भूय सर्वकार्येषु सन्निधिं ।
लब्ध्वा भोजनकाले तु यदि दृष्टो निरस्यते ॥१२२॥

སུ་ཞིག་ གང་ དང་ འགྲོགས་པ་ ཡིས །
བྱ་བ་ ཐམས་ཅད་ ཉེ་བར་ནི །
ཐོབ་ ཅིང་ ཟས་ཀྱི་ དུས་དག་ཏུ །
གལ་ཏེ་ མཐོང་ན་ འདོད་པར་བྱེད །།༡༢༢

सहया सगजा सेना सभटेयन्न चेज्जिता ।
अमात्रिको[47a]यं मूढः स्यादक्षरज्ञश्च नः सुतः ॥१२३॥

ཧ་ཡ་ ག་ཛ་ བྷ་ཊ་ཅན །
སྡེ་ འདི་ གལ་ཏེ་ མ་རྒྱལ་ན །
མཱ་ཏྲིཀ་མེད་ ངེད་ཀྱི་བུ །
འདི་ནི་ ཡི་གེ་ ཤེས་ ཀྱང་ ལྐུན །།༡༢༣

सा नामान्तरितामिश्रा वञ्चितारूपयोगिनी ।
एवमेवेतरासामप्युन्नेयः संकरक्रमः ॥१२४॥

དེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྒྲེས །

བསྒྲུས་པ་ཡི་ནི་ གཟུགས་དང་ལྡན །

དེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ གཞན་ གྱི་ ཡང །

འདྲེས པའི་ རིམ་པ་ ཞེས་པར བྱ ॥༡༢༤

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
शब्दहीन यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्त विसन्धिकं ॥१२५॥

དོན་ཉམས་ དོན འགལ་ དོན་གཅིག་པ །

ཐེ་ཚོམ ཅན་ དང་ རིམ་པ་ཉམས །

སྒྲ་དམན་ ངལ་བསོ་ ཉམས པ་ དང་ །

སྡེབ སྦྱོར་ཉམས་ དང མཚམས་སྦྱོར་བྲལ ॥ ༡༢༥

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु सूरिभि. ॥१२६॥

ཡུལ་དུས་སྒྱུ་རྩལ འཇིག་རྟེན་ དང་ །

ལུང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྟེ །

སྐྱོན་ བཅུ་ དེ་དག་ སྙན་ངག་ལ །

སྙན་ངག་མཁན་གྱིས་ སྤང་བར་ བྱ ༎ ༡༢༦

प्रतिज्ञाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न .चेत्यसौ ।
विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन कि फलं ॥१२७॥

དམ་བཅའ་ གཏན་ཚིགས་ དཔེ་ ཉམས་པ །

ཞེས་པ་ འདི་ ཡང་ སྐྱོན་མིན་ནམ །

ཕལ་ཆེར་ དཔྱད་པ་ དཀའ་བ་ཉིད །

སྦྱར་བ་ དེ་ཡིས་ འབྲས་བུ་ ཅི ༎ ༡༢༧

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।
तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

ཚོགས་པའི་དོན་ གྱིས་ སྟོང་པ་ གང་ །

དེ་ནི་ དོན་ ཉམས་ ཞེས་པར་ འདོད །

སྨྱོས་པ་ སྨྱོན་པ་ བྱིས་པ་ཡིས །

བརྗོད་ ལས་ གཞན་ལ་ དེ་ སྐྱོན་ནོ ༎ ༡༢༨

समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।
अमी गर्जंति जी[47b]मूता हरेरैरावतः प्रियः ॥१२९॥

འདི་ནི་ རྒྱ་མཚོ་ འཐུང་བྱེད་དེ །
བདག་ ནི་ དེ་རིང་ རྒ་བས་ གཟིར །
སྤྲིན་ འདི་ རབ་དུ་ སྒྲོགས་བྱེད་ དེ །
འཁྲོག་བྱེད་ ས་སྲུངས་ དགའ་ལ་ དགའ ॥ ༡༢༩

इदमस्वस्थचित्तानामभिधानमनिन्दितं ।
इतरत्र कवि को वा प्रयुञ्जीतैवमादिक ॥१३०॥

འདི་ སེམས་ རྣལ་དུ་ མི་གནས་པའི
མངོན་པར་བརྗོད་པ་ སྨད་ མིན་ཏེ །
གཞན་དུ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སོགས །
སྙན་ངག་མཁན་པོ་ སུ་ཞིག་ སྦྱོར ॥ ༡༣༠

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहत ।
विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३१॥

ངག གཅིག་ གམ་ནི་ རྒྱུན་ལ་ ཡང་ །
སྨྲ་མ་ ཕྱི་མ་ གཞན་ འཇོམས་པ །
འགལ་བའི་ དོན་ཅན་ ཉིད་ཀྱི་ སྐྱོན །
དོན་ འགལ ཞེས་པར་ རབ་ཏུ་བརྗོད ॥ ༡༣༡

जहि शत्रुकुल कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्व्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དགྲ་ རིགས་ མཐའ་དག འཇོམས་པ་ དང་ །
སྣ་ཚོགས་ ཁུར འདི་ རྒྱལ་གྱུར་ཅིག །
འབྱུང་པོ་ ཀུན་ལ བརྩེ་བ་ཅན །
ཁྱོད་ལ དགྲ་ནི་ སུ་ ཡང་ མེད ॥ ༡༣༢

अस्ति काचिदवस्था सा साभिषंगस्य चेतसः ।
यस्या भवेदभिमता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྡན་ སེམས་ལ་ནི །
སྐབས དེ་ འགའ་ཞིག་ ཡོད་པས་ན །

གང་ལ་ འགལ་བའི་ དོན་ཅན་ གྱི །
ཚིག་ ཀྱང་ མཚོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར ༎ ༡༣༣

परदाराभिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।
पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བུད་མེད་ལ་ སྲེད་པ །
འཕགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས །
དེ་ཡི་ སོ་སྐྲིབ་ གཡོ་བ་ དག །
བདག་ནི་ ནམ་ཞིག་ འཐུང་འགྱུར་རམ ༎ ༡༣༤

अविशेषेण पूर्व्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।
अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

དོན་ཉིད་ དམ་ནི་ སྒྲ་ལ་ ཡང་ །
ཁྱད་པར་ མེད་པ་ སྔར་ བརྗོད་པ །
གལ་ཏེ་ སླར་ཡང་ རབ་བསྒྲགས་པ །
དེ་ ནི་ དོན་ གཅིག་པར་ འདོད་ དཔེར ༎ ༡༣༥

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तदलकत्विषः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयित्नवः ॥१३६॥

སྐྱེད་པ་ སྐྱེད་བྱེད་ བུ་མོ་རྣམས། །
དེ་ཡི་ ལན་བུའི་ འོད་ཟེར་ཅན། །
ཆུ་འཛིན་ གློག་དང་ ལྡན་པ་ནི། །
ཟབ་མོ་ སྒྲ་སྒྲོགས་ འདི་དག་གོ ॥ ༡༣༦

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विवक्ष्यते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

རྗེས་སུ་བརྩེ་ སོགས་ ཁྱད་པར་ ལས། །
གལ་ཏེ་ འགའ་ཞིག་ བརྗོད་ འདོད་ ན། །
ཡང་ བརྗོད་ ལ་སོགས་ སྐྱོན་མེད་དེ། །
འདི་ནི་ རྒྱན་དུ་ རིགས་པ་ཡིན ॥ ༡༣༧

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत चारुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ སྐབས་ མིན་ ཁན་པ་ཡིས །
བུད་མེད་ མཆོག་ དེ་ བཅོམ་པར་གྱུར །
ཡན་ལག་ཀུན་མཛེས བཅོམ་པར་གྱུར །
འཇམ་པར་སྒྲོགས་མ་ བཅོམ་པར་གྱུར ॥ ༡༣༨

निर्णयार्थम्प्रयुक्तानि सशय जनयन्ति चेत् ।
वचांसि दोष एवासौ ससंशय इति स्मृतः ॥१३९॥

ངེས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྦྱར་བའི །
ཚིག་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་ གལ་ཏེ་ན །
ཐེ་ཚོམ་ སྐྱེད་པར་བྱེད་ ན འདི །
ཐེ་ཚོམ་ཅན་ ཞེས་ རབ་ཏུ་བཤད ॥ ༡༣༩

मनोरथप्रियालोकरसलोलेक्षणे सखि ।
आराद्वृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རེ་འདོད་ དགའ་བ་ ལྟ་བ་ ཡི །
རོ་ལ་ མིག་གཡོ་ གྲོགས་མོ་དང་ །

རྒྱང་ན་ འདུག་པའི་ མ་མ་ འདྲིས།
འདི་འདྲ་ བལྟ་བར་ བཟོད་མ་ཡིན།། ༡༤༠

ईदृश सशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।
स्यादलकार एवासौ न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१

འདི་འདྲ་ ཐེ་ཚོམ་ སྐྱད་ ཉིད་དུ།
གལ་ཏེ་ འགའ་ཞིག་ རབ་སྦྱར་ན།
འདི་ནི་ རྒྱན་ ཉིད་དུ་ འགྱུར་གྱི།
དེ་ལ་ སྐྱོན་མེད་ འདི་ལྟ་སྟེ།། ༡༤༡

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्घितां तामनिन्दिताम् ।
कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां कि नस्त्वदाशया ॥१४२॥

ལུས་སྐྱེས་ མིན་པའི་ གདུང་བ་ཡི།
ཟིལ་གྱིས་ མནན་ཅིང་ དུས་ ཚུབ་མོས།
ཟོས་པའི་ མ་སྨད་མ་ དེ་མཐོང་།
ཁྱོད་ལ་ བདག་གི་ རེ་བས་ ཅི།། ༡༤༢

कामार्त्ता घर्म्मसन्तप्तेत्यनिश्चयकरं वचः ।
युवानमाकुलीकर्तुमिति दूत्याह नर्मणा ॥१४३॥

འདོད་པས གཟིར་རམ ཚ་བས་གདུང །
ཞེས་པ ངེས་མེད་ བྱེད་པའི་ཚིག །
རྗེད་འཇོས་ སྐྱེས་པ འཁྲུགས་པར་ནི །
བྲུ་ཕྲེར་ ཕོ་ཉ་མོས སྨྲས་སོ ॥ ༡༤༣

उद्देशानुगुणोऽर्थानामनुदेशो न चेत्कृतः ।
अपक्रमाभिधानन्तं दोषमाचक्षते बुधाः ॥१४४॥

མདོར་བསྟན་ རྗེས་སུ་མཐུན་པར་ནི །
གལ་ཏེ་ རྗེས་བསྟན་ མ་བྱས་ན །
རིམ་པ་ ཉམས་པར་ མངོན་བརྗོད་པའི །
སྐྱོན་དུ་ དེ་ནི་ བཤད་དེ་ དཔེར ॥ ༡༤༤

स्थितिनिर्माणसंहारहेतवो जगतामजाः ।
शम्भुनारायणाम्भोजयोनयः पालयन्तु वः ॥१४५॥

འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་ གནས་པ་ དང །
སྦྲུལ་དང་ འཇིག་རྒྱུ་ མ་སྐྱེས་པ །
བདེ་འབྱུང་ སྲིད་མེད་ ཆུ་སྐྱེས་ཀྱི །
སྐྱེ་གནས་ཅན་ གྱིས་ ཁྱོད་རྣམས་ སྲུངས ‖ ༡༤༥

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।
क्रमलङ्घनमप्याहुर्न दोष सूरयो यथा ॥१४६॥

འབྲེལ་པ་ ངེས་པར་ཤེས་པའི་ རྒྱུར །
གང་ཡང་ གལ་ཏེ་ འབད་ བྱས་ན །
རིམ་པ་ འདས་ ཀྱང་ སྐྱོན་མེད་པར །
མཁས་པ་རྣམས་ ནི་ སྨྲ་སྟེ་ དཔེར ‖ ༡༤༦

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।
आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

གཉེན་གཏོང་བ་ དང་ ལུས་གཏོང་དང་ །
ཡུལ་གཏོང་ ཞེས་པ་ གསུམ་པོ་ ལ །

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉིན་མོངས་ རིང་།
བར་མ་ སྐད་ཅིག་ གདུང་བའོ॥ ༡༤༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धति. ।
पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཚོན་བྱ་ མཚན་ཉིད་ ལམ་ མ་མཚོན།
ཚིག་སྦྱོར་ མཆོག་གིས་ མི་འདོད་པ།
སྒྲ་ ཉམས་ ཡིན་ཏེ་ མཆོག་རྣམས་ དག།
འདོད་པ་ ཉིད་ནི་ སྐྱོན་ མ་ཡིན॥ ༡༤༨

[49a]अवते भवते वाहुर्महीमर्णवशाकरीं ।
महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरा रसः ॥१४९॥

ས་གཞི་ རྒྱ་མཚོའི་ སྐེ་རགས་ཅན།
རྒྱལ་ཆེན་ ཁྱོད་ལ་ དཔུང་པ་ སྲུང་།
ཞེས་པ་ ཤེས་འདོད་ མེད་པས་ན།
ཚིག་ འདི་ལ་ ནི་ ཉམས་ ཡོད་མིན॥ ༡༤༩

दक्षिणाद्रेरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।
कुरुते ललिताधूतप्रबालाङ्कुरशोभिनः ॥१५०॥

ལྷོ་ཡི་རི་ལས་ཉེར་བརྡུད་པའི། །
རླུང་གིས་ཙཱུ་ཏའི་ཀང་འཕྲུང་ནི། །
རོལ་པར་སྐྱོད་པ་ཀྱི་ཏུ་ཡེ། །
ཀུ་གུ་མཛེས་དང་ལྡན་པར་བྱེད། ། ༡༥༠

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालसचेतसां ।
अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

ཅེས་སོགས་བསྟན་བཅོས་བདག་ཉིད་ཆེ། །
ལྟ་ལ་གཡེལ་བའི་སེམས་ལྡན་པ། །
སྒྲ་ཉམས་བཞིན་དུ་སྣང་མོད་ཀྱི། །
སྐལ་བཟང་ཉིད་ནི་གཏོང་མ་ཡིན། ། ༡༥༡

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।
तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा ॥१५२॥

ཚིགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ངེས་པའི་གནས།
ཚིག་གི་གཅོད་མཚམས་ ངལ་བསོ་རིག།
དེ་ཉམས་ གཅོད་མཚམས་ ཉམས་པ་ སྟེ།
ཉན་པ་ དགའ་མིན་ སྐྱིད་ དེ་ དཔེར། ༡༥༢

स्त्रीणां सगीतविधिमयमादित्यवशो नरेन्द्रः
पश्यत्यक्लिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि दुष्टं।
कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
वश्यामुर्वीं वहति नृप इत्यस्ति चौष प्रयोगः ॥१५३॥

བུད་མེད་ རྣམས་ཀྱི་ ཡང་དག་བརྗོད་པའི་ཚིག་ རོ་ཉམས་
མེད་པ་འདིར།
མཆོག་རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ མི་དབང་ ཉི་མའི་ རིགས་
འདིས་ ལྟ་བྱེད་ ལ་སོགས་ སྐྱོན།
བྱ་དང་ བྱ་མིན་ མ་ཚང་མེད་ལ་ ལུང་ ཉིད་ཀྱིས་ནི་
ལྟ་བྱེད་ཅིང་།
མི་བདག་ འདི་ཡིས་ དབང་གྱུར་ ས་འཛིན་
ཅེས་པ་ དེ་ལྟར་ སྦྱོར་བ་ཡོད། ༡༥༣

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्व निश्चित यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

ཇི་ལྟར་ ཚིག་མཐའ་ ཕྱིས་པ་ལ །
ལྷག་མ་ ཚིག་ཉིད་དུ་ ངེས་པ །
དེ་བཞིན་ མཚམས་སྦྱོར་ རྣམ་འགྱུར་ མཐའ །
ཚིག་ཉིད་ ཅེས་ནི་ བརྗོད་པ་ཡིན ॥ ༡༥༤

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुञ्जते ।
ध्वजिनी तस्य राज्ञः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५५॥

དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ རྣ་བར་ རྩུབ །
སྙན་ངག་མཁན་ རྣམས་ མི་སྦྱོར་དེ །
རྒྱལ་པོ་ དེ་ཡི་ རྒྱལ་མཚན་ཅན །
དོག་གེས་ ཆུ་འཛིན་ བསྐུལ་ ཞེས་ འདིའོ ॥ ༡༥༥

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्भिन्नवृत्त स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५६॥

གང་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ལྷག་དང །
ལྕི་ཡང་ ཇི་ལྟ་བཞིན་ མི་གནས །
དེ་ནི་ སྡེབ་སྦྱོར་ ཉམས་པ་ སྟེ །
སྐྱོན་ འདི་ ཤིན་ཏུ་ སྨད་པའོ ༎ ༡༥༦

इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।
सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

ཟླ་བའི་འོད་ཟེར་ བསིལ་བས །
རིག་ཅེས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད །
ས་ཧ་ཀཱ་རའི་ལོ་འདབ་ གསར་པ་རྣམས །
རླན་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་པའོ ༎ ༡༥༧

कामेन बाणा निशिता वियुक्ता मृगेक्षणास्वित्ययथागुरुत्वं ।
मदनबाणा निशिताः पतन्ति मृगेक्षणास्वित्ययथालघुत्व ॥१५८॥

འདོད་པས་ ་མདའ་རྣོན་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ །
རྣམ་པར་འཕངས་ཞེས་ ལྕི་བ་ ཇི་བཞིན་མིན །

མཛེས་པའི་མིག་ཅན་ དག་ལ་ སྨོས་བྱེད་ཀྱི །
མདའ་སྐྱུན་ སྐྱུང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཛི་བཞིན་མིན ‖ ༡༥༨

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।
तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५९॥

བསྡུས་པ་ བརྗོད་པར་ མི་འདོད་ཅེས །
ཚིག་ལ་ མཚམས་སྦྱོར་མེད་པ་ གང་ །
ཡ་གྲིས་ ལ་སོགས་ རྒྱུ་མེད་པ །
དེ་ནི་ མཚམས་སྦྱོར་བྲལ་ ཞེས་ བཤད ‖ ༡༥༩

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।
लुप्तमुद्भेदि [50a]घर्माम्भो नभस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་ དང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་ །
རླུང་ནི་ དལ་བུ་ རྒྱུ་བ་ ཡིས །
བུད་མེད་ འགྲམ་པའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ །
རྡུལ་གྱི་ཆུ་རྒྱུས་ སེལ་བར་བྱེད ‖ ༡༦༠

[मानेर्ष्ये इह शीर्यंते स्त्रीणां हिमर्त्तौ प्रिये ।]
आसु रात्रिष्विति प्राज्ञैरज्ञातं न्यङ्गमीदृश ॥१६१॥

. . . . . . ।
. . . . . . ।

མཚན་མོ་ འདི་ལ་ ཞེས་ འདི་འདྲ།
མཁས་པས་ ཉམས་པར་ རིག་མི་བྱེད། ༡༦༧

देशोऽद्रिवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।
नृत्यगीतप्रभृतय. कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

རི་ནགས་ ཡུལ་འཁོར་ ལ་སོགས་ ཡུལ།
ཉིན་ མཚན་ དུས་དྲུག་ ལ་སོགས་ དུས།
འདོད་པའི་ དོན་ལ་ བསྟེན་པ་ ཡི།
གར་དང་ གླུ་སོགས་ སྒྱུ་རྩལ་དེ། ༡༦༨

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिर्लोकसंज्ञिता ।
हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

འབྱུང་པོ་ རྒྱུ་ དང་ མི་རྒྱུ་བའི །
འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནོ །
རིགས་པ་ གདན་ཚིགས་ རིག་ བདག་ཉིད །
ཕྲོས་ བཅས་ གསུངས་པ་ ལུང་ ཉིད་དེ ॥ ༡༦༣

तेषु तेषु यथारूढं यदि किंचित्प्रवर्त्तते ।
कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ གྲགས་པ་ བཞིན །
མིན་པར་ གལ་ཏེ་ རབ་ཞུགས་ན །
སྙན་ངག་མཁན་པོ་ བག་མེད་ ལས །
འདི་ནི་ ཡུལ་ སོགས་ འགལ་ཞེས་ བརྗོད ॥ ༡༦༤

कर्पूरपादपास्पर्शी सुरभिर्मलयानिलः ।
कलिङ्गवनसंभूता मृगप्रायमतंगजा ॥१६५॥

ག་བུར་ རྐང་འཐུང་ལ་ རེག་པའི ། .
མ་ལ་ཡ་ རླུང་ དྲི་བཟང་ཅན །

ཀ་ལིངྒ་ ཡི་ ནགས་སྐྱེས་པའི །
གླང་པོ་ དག་ནི་ རི་དགས་ མང་ ༎ ༡༦༥

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।
इति देशविरोधिन्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥१६६॥

ཙོ་ལ་ཀཱ་བེ་རཱི་ ངོགས་སའི །
ཨ་ག་རུ་ ནི་ནག་པོ་སྤྱོ ༎
ཞེས་པ་ ཡུལ་ དང་ འགལ་བ་ཡི །
ཚིག་གི་ འཇུག་པ་ འདི་འདྲ་ སྟེ ། ༡༦༦

पद्मिनी नक्तमुन्निद्रा स्फुटत्यह्नि कुमुद्वती ।
मधुरुत्फुल्लनिचुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥१६७॥

པདྨ་ཅན་ནི་ མཚན་མོ་ རྒྱས །
ཉིན་པར་ ཀུ་མུད་ལྡན་པ་ གསལ །
དཔྱིད་ནི; ནི་ཙུ་ལ་ རབ་རྒྱས །
སོས་ཀ་ དག་ནི་ སྤྲིན་ གྱིས་ གདིབས ༎ ༡༦༧

श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।
हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्लाघ्यचन्दनः ॥१६८॥

ངང་པའི་ སྒྲ་ནི་ དབྱར་ མཆན་འོས །
སྟོན་ ནི་ རྨ་བྱ་སྨྱོས་པ་ སྟེ །
དགུན་སྟོད་ ཉི་མ་ དྲི་མ་མེད །
དགུན་ནི་ ཙནྡན་ བསྔགས་པར་འོས ॥ ༡༦༨

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
मार्गः कलाविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

ཞེས་པ་ འདི་འདྲ་ དུས་ དང་ནི །
འགལ་བའི་ ལུགས་དག་ བསྟན་པ་ཡིན །
སྒྱུ་རྩལ་ དག་ དང་ འགལ་བའི་ལམ །
ཅུང་ཟད་ བསྟན་པར་བྱ་སྟེ་ དཔེར ॥ ༡༦༩

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।
पूर्णसप्तस्वरः सोयं भिन्नमार्गः प्रवर्त्तते ॥१७०॥

དཔའ་ དང་ སྒྲིག་པའི་ཡིད་བྱེད་ཀྱི། །
གནས་ཅན་ ཁྲོ་ དང་ ཡ་མཚན་ནོ། །
དབྱངས་ བདུན་ རྫོགས་པ་ འདི་དག་ནི། །
ཐ་དད་ ལས་སུ་ རབ་ཏུ་འཇུག ॥ ༡༧༠

इत्थं कलाचतुःषष्टौ विरोधः साधु नीयतां ।
तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

འདི་ལྟར་ སྒྱུ་རྩལ་དྲུག་ཅུ་བཞིར། །
འགལ་བ་ ལེགས་པར་ རྟོགས་པར་བྱ། །
སྒྱུ་རྩལ་ ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ལས། །
དེ་ཡི་རང་བཞིན་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ ༡༧༡

आधूनकेसरो हस्ती तीक्ष्णशृङ्गस्तुरंगमः ।
गुरुसारोयमेरण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७२॥

གླང་པོ་དག་ནི་ རལ་པ་ གཡོ། །
རྟ་ཡི་རྭ་ནི་ རྣོ་བ་ ཡིན། །

ཨེ་རཎྜ་འདི་ སྙིང་པོ་ སྙི།
སེང་ལྡེང་ ལྗོན་པ་ སྙིང་པོ་མེད། ༡༧༢

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।
विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्श्यते ॥१७३॥

ཅེས་པ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པ།
ཉིད་ དང་ འགལ་བ་ ཀུན་གྱིས་སྨད།
རིགས་པ ཞེས་བྱ་ གཏན་ཚིགས་ཀྱི།
རིག་པ་དང་འགལ་ བཤད་པར་བྱ། ༡༧༣

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचेत् ।
तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་པར་ནི།
གསུངས་པ་ བདེན་མོད་ དེ་ལྟ་ནའང་།
ཙ་ཀོ་ར་ཡི་མིག་ཅན་ དེ།
བདག་གི་ སྙིང་ལ་ ད་དུང་ གནས། ༡༧༤

कापिलैरसदुद्भूतिः [51a]स्थान एवोपवर्ण्यते
असतामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिरुद्भवाः ॥१७५॥

སེར་སྐྱ་པ་རྣམས་མེད་རྣམས་ཀྱི །
སྐྱེ་བ་ གནས་པ་ཉིད་དུ་ བརྗོད །
ཅི་ཕྱིར་ བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱིས་ ནི །
མེད་རྣམས་ རབ་ཏུ་ སྐྱེ་བ་ མཐོང་ ॥ ༡༧༥

गतिर्न्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

རིགས་པ་དག་ དང་ འགལ་བ་ཡི །
ལུགས་ འདི་ ཀུན་ཏུ་བལྟ་བར་བྱ །
དེ་ནས་ ལུང་ དང་ འགལ་བ་ཡི །
འཇུག་པ་དག་ ནི་ བསྟན་པར་བྱ ॥ ༡༧༦

अनाहिताग्नयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमक्लिष्टाचारभूषणाः ॥१७७॥

མི་ནི་ བཞག་པ་ མ་ཡིན་ ཡང་།
བྲ་སྐྲེས་ བྲམ་ཟེ་ མ་ཉམས་པའི།
སྦྱོད་པས་ བརྒྱན་པ་ འདི་དག་ནི །
བེ་ ཤྭ་ན་རཱ་ མཆོད་ སྦྱིར་བྱེད ॥ ////

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ ཚོ་ག་ མ་བྲུས་ ཀྱང་ །
བླ་མ་དག་ལས་ རིག་བྱེད་ བསླགས་ །
རང་བཞིན་ དག་པའི་ཤེལ་དག་ནི །
འདུ་བྱེད་ གཞན་ལ་ ལྟོས་པ་མེད ॥ //~

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवीथिं विगाहते ॥१७९॥

སྐྱོན་ནི་ མཐའ་དག་འདི་ལ་ ཡང་ །
དེས་ འགའ་ སྙན་ངག་མཁན་མཁས་པས །

སྐྱོན་གྱི་ གྲངས་ ལས་ རབ་འདས་ནས

ཡོན་ཏན་ ལས་ནི་ རྣམ་པར་འཛིན ༎ ༡༧༩

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जज्ञिरे ।

आर्द्रांशुकप्रबालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

རྒྱལ་པོ་ དེ་ཡི་ མཐུ་ཡིས་ ནི །

དེ་ཡི་ སྐྱེད་ཚལ་ ལྷ་རྣམས་ཀྱི །

ལྗོན་པ་ ཡལ་འདབ་ གསོས་སྣུམ་ དང །

ལྡན་པ་དག་གི་ གནས་སུ་གྱུར ༎ ༡༨༠

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।

धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

རྒྱལ་པོ་ འཇིག་པ་ གསལ་བྱེད་པ །

དྲག་པོ་ཡི་ ནི་ རླུང་དག་རྒྱུ །

འདབ་ བདུན་ལས་ འཁྲུངས་ སྐྱོད་བྱེད་ཅིང །

ཀ་དམྦ་ཡི་ རྡུལ་དང་ འགྲོགས ༎ ༡༨༡

दोलातिप्रेरणत्रस्त[51b]वधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्गेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

ཀྲོགས་ཀྱིས་ རབ་སྐྱུལ་ སྐྲག་པ་ཡི །
སྐྱེ་བོ་ བུད་མེད་ ཁས་ བརྗོད་ སྐྱུ །
སྤྱབས མི་མཉམ་པས འདོད་ལྡན་གྱི །
ཆགས་པ་དག་ ནི་ འཕེལ་བར་བྱེད ॥ ༡༨༢

ऐन्दवादर्चिषः कामी शिशिरं हव्यवाहनं ।
अबलाविरहक्लेशविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

ཟླ་བའི་ འོད་ཟེར་ ལས་ བསིལ་བ །
བསྲེག་བྱ་ འཛིན་པར་ འདོད་ལྡན་ ནི །
བུད་མེད་དང་བྲལ་ ཉོན་མོངས་ཀྱིས །
འཁྲུགས་པ་ འདི་ཡིས་ རྩི་བར་བྱེད ॥ ༡༨༣

प्रमेयोप्यप्रमेयोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूर्तये ॥१८४॥

གཉའ་བ་ ཡིན་ ཡང་ གཉའ་བ་མིན །
ར་ ལྡོར་ཡིན་ ཡང་ ར་ལྡོར་ མིན །
གཅིག་ཆེན་ཡིན་ ཡང་ གཅིག་ཉིད་མིན །
ཏྲ་ རྩོགས་ གཟུགས་ ཕྱིར་ལ་ ཕྱག་ནི་ བཙང་ ॥ ༡༨༦

पञ्चानां पाण्डुपुत्राणां पत्नी पाञ्चालकन्यका ।
सतीनामग्रणीश्चासीद्दैवो हि विधिरीदृशः ॥१८७॥

ལྔ་ བསེང་བ་བུ་ དག་ གི་ནི །
ཆུང་མ་ ལྔ་ལེན་ བུ་མོ་སྟེ །
དགེ་བ་ ལྡན་མ་ཀི་ མཆོག་ཏུ་ གྱུར །
འདི་འདྲ་ ལྷ་ཡི་ སྐལ་བ་བྱེད་དོ ॥ ༡༨༧

शब्दार्थालंक्रियाश्चित्रा मार्गाः सुकरदुष्कराः ।
गुणा दोषाश्च काव्यानामिति संक्षिप्य दर्शिताः ॥१८९॥

སྒྲ་ དང་ རྒྱན་ རེ་ བཀྲ་བ་ དང་ །
ཆ་ སླ་ ཆ་དཀའ་ དག་གི་ལམ །

སྙན་ངག་རྣམས་ཀྱི་ ཡོན་དང་ སྐྱོན། །
དེ་ལྟར་ མདོར་བསྡུས་ རབ་ཏུ་བཤད། ॥ ༡༨༦

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन
मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्त्तिनीभिः ।
वाग्भिः कृताभिसरणो मदिरेक्षणाभि
र्धन्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥ १८७

སློབ་བྱེད་ བསྟན་པའི་ལས་འདིས་ སྐྱོན་ དང་ ཡོན་ཏན་དག །
རབ་ཏུ་རྟོགས་པའི་བློ་ཅན་ སྐལ་བཟང་དབང་གྱུར་པའི །
ཚིག་ དང་ མངོན་པར་འགྲོགས་ནས་ ཆང་མིག་མ་ དག་དང་ །
ལང་ཚོ་ཅན་ བཞིན་ དགའ་དང་ གྲགས་པ་ ཐོབ་པར་འགྱུར ॥ ༡༨༧

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम
तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

ཞེས་པ་སློབ་དཔོན་དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྙན་ངག་གི་རྒྱན་ལས་ བྱ་དཀའི་རྣམ་པར་བཅད་པ་སྟེ་ ལེའུ་ གསུམ་པ་ རྫོགས་སོ ॥

CORRIGENDA

Chap I 17[b] वर्णानै. for व*र्णानै , 27[c] ཡ་ཨཱ་ཛྙ་སའི for ཡ་ཨཱ་ཛྙ་སའ , 39[a] साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration , 85[d] विद्यते for *སྨྲར , 86[b] भवादृश for भवादृश , 98[b] स्तनन्यो for स्तनयो.

Chap. II 14[c] དབེ for དབྱེ , 37[b] གཏོང for གཏང , 40[c] स्पर्श for स्पश , 45[c] གེས for གེས ; 66[b] नखाचिषः for नखाचिष , 77[a] इदमार्द्र for इद-मार्द्र , 9 नतिने for नतिते , 86[a] राजहंसो for राजहंसा , 86[c] वक्त्रा for वक्त्रा , 86[b] སྒྲོད for སྒྲུད , 91[b] निर्दहति for निदहति and निर्दय for निदयं , 125[a] ཤིང་དུ for ཤིང་ད , 142[b] གལ་དེ for གལ་ད , 182[b] སད་སད for སད་སད ; 206[c] सोयं for सायं , 207[d] རྩེད for རྩད , 233[b] ཙནྡན for ཙནྡ , 234[c] ०हित्र॰ for हत्र , 237[a] विकार्यं for विकाय , 279[b] སྒྲ་ལ for སྒྲ་དས ; 282 रसवत्त्व for रसत्त्वत्र , 287[d] གྲུར་པ for གྲུར་པ , 306[b] दर्शिता for दशिता ; 312[c] དབེར་བརྗོད for དབེབར་རྗོད , 313[b] གསལ་བར་སྟོན for གསལ་བ་སྟོནར.

Chap III. 17[c] ཁྲིད for ཁྲུད ; 19[c] वरायन्ते for वरायन्ते , 13[d] स्पृशोदृशा for स्पृशोशां . 31[c] རླུང for རླུང , 39[c] སྨྲ for སྨྲ , 54[a] वर्ज्यं for वज्य , 68[b] རབ་དུ for རབ་ད , 69[a] གྲུར for གྲུར , 80[c] ཀུན་དུ for ཀུན་ད , 83[c] དཀའ་དུ for *དཀའ་ད , 158[c] वारणा for वारण , 184[d] विश्वमूर्त्तये for विश्वमूत्तये . 185[a] पाण्डुपुत्राणां for पाण्डुपुत्राना.